ধৰতী মাতা



শ্ৰীৰামনন্দৰস্না

धरती माता

श्रीरामदेवझा

मिथिला रिसर्च सोसाइटी,

लहेरियासराय, दरभंगा

△ धरती माता (मैथिली कथा-संग्रह)

DHARATI MATA (Maithili Short-stories)

△ लेखक—श्रीरामदेवझा, एम०ए०, पी-एच०डी०,
रीडर, मैथिली-विभाग,
ललितनारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा

△ प्रकाशक—मिथिला रिसर्च सोसाइटी, लहेरियासराय, दरभंगा।

△ मार्च, १९८५

△ मुद्रक—बजरंग प्रेस, (लक्ष्मी भवन)
दोनार, दरभंगा—८४६००४

कथा-क्रम

पुरोवचन

कथा कहबाक प्रथा मनुष्यमे तहिएसँ चललैक जहियासँ ओकरामे सामाजिकताक भावना जगलैक। दोसरक सुख-दुःखक बिम्ब ओकर हृदय-दर्पण मे प्रतिबिम्बित होमऽ लगलैक। जाधरि ओ 'अहम्'केर घेरामे घेरल-बेढ़ल रहल, ओ अपनाकेँ कविताक तुक-तुकांतमे एकान्त संगीते गबैत रहल। कथोपकथनक क्रममे 'त्वम्' धरि जँ पहुँचिओ सकल तँ रूपकक मञ्चे धरि सीमित रहल। किन्तु जखन 'त्वञ्चाहञ्च'क चकार ओकरा तत्सत्क चमत्कार दिस संस्कारित कैलकै—कविताक श्रव्य ओ रूपकक दृश्यसँ जी उमठि गेलैक—तखन ओ जाहि माध्यमक खोज कयलक, सैह कथा-कहानी, आख्यान-उपन्यास कहौलक।

आइ कविता पत्रिकाक कोनमे, आलोचनाक उद्धरणमे सकुचा रहल अछि। नाट्यरूपकक दृश्य रेडियो-टेलीविजनक सेट पर थकुचा रहल अछि। रचनात्मक साहित्यमे कथा-उपन्यासेटा एहन अछि जे ज्ञान-विज्ञानक टोह लगैबामे, भूगोल-खगोल धरि घुमैबामे, समाजनीति-राजनीति पढ़ैबामे, नीति-अनीति बुझैबामे सुकुमार पद्धतिक प्रमुख विधा बनि गेल अछि। मांसल रूप, मानस-अतिमानस रस, सांस्कृतिक गंध-सौरभ ओ विचार-प्रचारक स्पर्श जेना 'सर्वेन्द्रियगुणग्राहि' चेतनाक स्तूप बनि गेल हो! कोनो भाषाक लोकप्रियताक तौल जेना कथेक तुला पर संभावित हो! मानवीय रुचि-चिन्तनक हेतु जेना कथा विधा सर्वसंग्राही कम्प्यूटर बनि गेल हो।

कथा पैघ हो तँ भने उपन्यास—नवलिका—कादम्बरी कहबओ, छोट हो तँ कथा-कहानी-खण्डकथा-गल्प-अल्पिका नाम भने गनबओ, किन्तु 'कथायां सरसं वस्तु गद्यैरेव विनिर्मितम्' एही लक्षणवृत्तमे समाहित अछि। स्पष्ट

अभिव्यक्तिक हेतु ई गद्यात्मक हो—मानवीय भावना राग-विराग, हर्ष-विषाद कोनो स्थायी-संचारी भावक इर्द-गिर्द घुमैत चरितात्मक सरस कथानक हो—बस ! ओकर अतिरिक्त रंगटीप जे भरि सकिऐक, से सब सजतैक; जे किछु वसन-भूषण पहिरबिऐक, सब छजतैक ।

सुतरां भारतीय कथा साहित्यक आयाम वदिक साहित्यसँ लऽ कऽ पौराणिकी वार्त्ता धरि, नीतिकथासँ लऽ कऽ रस—प्रथा धरि व्यापक रहल । जे किछु उपदेश-सन्देश अछि से कथा-सूत्रमे गँथाइत रहल । अथापि शैली ओकर पुरना गेलैक— आधुनिक युगक रसनाकेँ जे पाश्चात्य शैलीक चटपटीक स्वाद लऽ चुकल छल, तकरा हेतु जेना बसिया गेलैक ।

मैथिली जेना कविता-काव्यमे, रूपक-उपरूपकमे, क्वचित् गद्यबन्धमे भारतीय भाषामे अग्रजाक आसन पर बैसबाक अधिकारिणी अछि : स्वीकार करय पड़त जे कथा-साहित्यमे, खास कऽ नवशैलीक उपन्यास-गल्पमे बड़ पछुआ कऽ आयलि एवं अपन पड़ोसक भाषा-पाँतीमे अनुजा बनलि कातमे ठाढ़ि अछि : रंगीन एलबममे रेखाचित्र जकाँ कतहु रेखांकित अछि ।

परञ्च हर्ष अछि जे गत तीन-चारि दशकमे एहन अनेक कुशल-शिल्पी मैथिलीक रंगशालामे निविष्टतासँ प्रविष्ट भेल छथि जे निश्चय अपन कला-तूलिकासँ मैथिली-कथाक रेखाचित्रकेँ तेना निखारबामे लागल छथि जे विश्वास भऽ रहल अछि जे काव्य-विधा जकाँ कथा-क्षेत्रहुमे मैथिली उल्लेखनीय स्थान ग्रहण करत ।

प्रस्तुत पुस्तक ओही प्रगति-यात्राक एक निदर्शन थिक ।

'धरती माता'क चरित्रनायक अयोध्या देहाती जीव, गृहस्थक बेटा; बनि जाइछ शहरी, कपड़ा मिलक मजदूर । कहिओ गाम अबैछ तँ देहाती असुविधासँ मन उजबुजा जाइछ ओ छुट्टी पुरबासँ पहिने बिदा भऽ जाइछ । मुदा एहि बेर मायक दुःखितावस्थामे आयल तँ बेसी दिन रहऽ पड़लैक । खसैत-पड़ैत घर, उजड़ैत कलम-बाग ओ बटाइमे परती-पराँत पड़ल अपन खेतक दुर्दशा देखि ओकर मन घूमि गेलैक । ओही स्थितिमे गामक मद्धू काकासँ सुनलक जे 'चास आ चाकरी तँ संग-संग नहि चलि सकै छै ।' तँ लगले अपन निश्चय सुना देलकनि जे 'जी' आब नहि जेबै, इस्तीफाक तार दऽ दै छिऐ ।' मद्धू काका भावविमोर भऽ चुटकी भरि माटिसँ अयोध्याक माथ पर ठोप कऽ देलथिन ।

एहि गल्पमे कथावस्तु अल्पे अछि, परञ्च स्थापनक प्रकल्प तेहन अछि जाहिसँ पाठक संकल्प शिल्पगत कलाक प्रभावी प्रशस्ति बनि जाइछ। शहरी ओ ग्राम-जीवनक बाहरी दृश्यक संग कृषक-वंशधरक जे रुचि-संस्कार सहसा सुप्तोत्थित होइछ ओ वर्त्तमान समस्याक समाधानक जेना उपहार दऽ जाइत हो ! धरती माता जेना अपन मातृपदक सार्थकता पाबि गेल हो !

'जलक तल पर लिखल नाम' एक नवे शीर्षक अछि। मालती ओ रतन एकबद्ध दू गामक। किन्तु दूहू गामक जेना एक बाध तहिना दूहू किशोर-किशोरीक स्नान-ध्यानक हेतु एक पोखरि, एक शिव-मन्दिर। दूहूक नोंक-झोंक एक-दोसराक आलम्बन-आश्रय, उद्दीपन-विभावन। किन्तु रतन धनिक बापक बेटा, मालती गरीबक कन्या— दूहू अन्योन्या नहि बनि सकल, अन्य-अन्या रहि गेल। तेँ मालती रतनकेँ पोखरिक ओहि पार देखैत जलक तल पर 'रतन' नाम लिखैत डुबकी दैत रहि गेल। पाठकक जिज्ञासा रहि गेलैक जे जलक तल पर लिखल नाम मेटा गेलैक वा कक्करो जीवनमे अमिट बनल रहि गेलैक। कथामे आदिसँ अन्त धरि रस-सृष्टि अछि, मुदा शृंगारक कहबितहुँ करुणक, करुणक होइतहुँ चिरविप्रलम्भक, विप्रलम्भ मानितहुँ आधुनिक सामाजिक समस्यामूलक बनि गेल अछि।

'मनुक्ख' नामक कथामे गमैया लोक कोना शहरमे रिक्साचालक बनैए, रिक्सावालाक कठोर बोलक भितरो कोनो मनुक्ख विद्यमान रहै छै, सेहो रिक्सा-चालक गनेसीकेँ सहसा अपन गोत्रक लोकेमे भेटैछ। कथानकक परिधि छोट रहितहुँ मनुष्यताक अमृत-घोंट पिआ जाइछ।

'हत्थाजोड़ी'क मञ्च स्टेशनक प्लेटफार्म अछि, जतऽ दू देहाती दम्पतीक सनक-झनक, हत्था-बाहीक झगड़क बिड़रो उठैछ तँ, परञ्च गप्पे-सप्पेमे हत्था-जोड़ीक पटान्तरविक्षेप भऽ जाइछ। दोषक आरोपसँ पर्दा उठैछ, मान-अभिमानमे पसरैछ ओ अन्तमे मेल-मिलानक हत्थाजोड़ीमे पटावसान होइछ। कथामे स्वाभाविकता अछि। संगहि लोक-जीवनक पर्त-पर्तमे विषमताक बीचो समता प्रदर्शित होइछ।

'बसातक दाम'मे कथाकार जेना अपन संस्मरणात्मक विवरण दैत होथि। स्थान–वातावरणक सजीव चित्रण अछि। सरबनक बाजब-जाँतब सब स्थान परिस्थितिक सहजताकेँ अङेजने अछि। परञ्च बसातक दाम चुकैबामे, गर्मीक मर्मी सरबनक जे चित्र उभरल अछि, ओ जेना कोनो गड़ल प्रतिमा उखड़ल हो ! मन होइछ जे ओहि प्रतिमा पर फूल झहरा दी !

'उद्घाटन' उदयाचल उच्च विद्यालयक। चिन्हार गामक चिन्हार लोकक बीच एक अनचिन्हार जकाँ, मुदा आचार-विचार ओ शिक्षा-संचारमे चीन्हल लोक जेना सहजा नवयुगक उदयक चिह्न दऽ जाथि ! कथाक पृष्ठभूमि नगर-पार्श्ववर्त्ती गामहिक नहि—सुदूर देहात परिसरमे सबतरि जेना पसरल मानस-विकारक चित्र-चरित्र हो। कथानक स्वाभाविकताक बीच आदर्शक एक उदाहरण उपस्थित करैछ। श्रीचन्द्र बाबू, परमानन्द बाबू ओ शिवनाथ बाबूक आदर्शक एखनहु अभाव नहि भेल अछि। नेताजी, मुखियाजी ओ हुनक आलोचक—प्रत्यालोचकक हेड़ि गाम-टोल सबतरि भेट दैत छथि। चीन्हि लिऔन जे के ध्वंसमे ओ के निर्माणमे सहायक होइ छथि। लेखक परिचय करयबामे कोनो कसरि नहि रहय देने छथि।

'पराजयक मुद्रा'—से कोनो शस्त्रधारीक नहि, शास्त्रार्थीक नहि, ने खेलाड़ी वा जुआड़ीक। ई तँ रिक्शाजीवी 'मनोहरा' मजदूरक शौक-सनकक थिक जे भद्र दम्पती जकाँ अपन कनेञाक संग 'मैटनी शो'मे फिल्म देखऽ जाइछ ओ अपन वर्गीय लोकक पहिचानकेँ किछु कालक हेतु बिसरय चाहैछ। ओकर रहन-सहन, श्रम-कर्म ओ मानसिकता सबमे सामञ्जस्य अछि। कने असमञ्जस बुझा पड़ैत अछि जखन जाड़मे ठिठुरि ओ जड़ भऽ गेल, तखन रिक्शा कोना ठेकान पर पहुँचि आगाँ गुड़कैत गेल। अथापि प्रसंग ओकर सहृदयता तथा दयनीयताकेँ रंग दैछ ओ स्वाभाविकताक संग नहि छोड़ैछ।

'चोर' बनबाक वातावरण—कारण—प्रक्रियाक अन्तर्दर्शन करबैत ई कथा छात्र शोभाकान्तक मन-मन्थनकेँ सप्रसंग उपस्थित करैत अछि। आगाँक घटनाक अन्त-सीमा कतय पहुँचैछ से बुझब अप्रयोजनीय रहि जाइछ। जतबे पर समाप्ति अछि ततबेसँ कथाक व्याप्ति पूर होइछ। एहिमे कला कलेक लेल नहि, सोद्देश्य गतिशील होइछ।

'बोतल' पाछाँ बताह एक शराबी पिताकेँ अपन बेटा सभक स्थिति देखि कोना सदाक हेतु बोतल फोड़बाक नौबति अबैछ, शराबीक स्त्रीकेँ की दुर्गति भोगऽ पड़ैछ, तकर सजीव उदाहरण एहिमे प्रस्तुत अछि। चित्रणक आरम्भ ओ अन्त नाटकीय चमत्कारपूर्ण अछि।

सामाजक निम्नस्तरीय जीवनमे 'बकरी' पोसब कोनो आजुक बीस-सूत्रीक गृह-व्यवसाय नहि। ई तँ जीवन-यापनक, पशुगत पारिवारिक भावनाक

मानसिकता रहल अछि। लेखक एहि प्रकारक जीवनभोगिनीक गतिविधिसँ पूर्ण आत्मीयताक बोध करबैत सामाजिक विषमताक क्रूरतासँ सेहो परिचय करबैत छथि जे अन्तमे गङ्गलीमायक कथा-व्यथा महिन्दरो सन व्यक्तिकेँ अकबका दैछ।

एहि कथादशकक लेखक छठम दशकसँ तँ साहित्य-मञ्च पर अवतीर्ण भेल छथि परञ्च उत्तीर्ण भेल छथि जीवनक नेपथ्यहिमे। जेना ई अनवरत साधना करैत रहला, स्कूल-वर्गमे एको दिन अनुपस्थित नहि भेला, कॉलेज-क्लासमे कखनहु दोसर पंक्तिमे नहि गेला, अध्यापक-जीवनमे कहिओ अप्रस्तुत भऽ कऽ नहि अयला, साहित्यिक क्षेत्रमे सव्यसाची जकाँ बाम-दहिन दूनू सन्धान करैत रहला, निबन्ध-कथा-कविता-एकांकी सभ विधामे कलमक कमाल देखबैत रहला – ताहि सबसँ बहुत पूर्वहिसँ चिन्हारे नहि, मैथिली-क्षेत्रमे एक चमत्कारे सिद्ध छथि। रुचि-संस्कार ओ लेखन-भाषण, शोध-अनुसन्धान सब दिशामे भाषा-साहित्यक अनुपम उपहारे प्रसिद्ध छथि।

१९५३ मे 'मिथिला मिहिर'मे पहिल बेर श्रीरामदेवझाक कथा 'मुदा आब की' ओ 'दू ठोप नोर' प्रकाशित भेल ओ क्रमशः विभिन्न पत्र-पत्रिकामे कथा सब प्रकाशिते होइत रहल। सातम दशकमे 'एक खीरा : तीन फाँक' तथा 'मनुक सन्तान' नामक हिनक दुइ गोट कथासंग्रह लोकानुरंजन कयलक। आब ई 'धरती माता' कथाकारक कथाक तेसर संग्रह थिक। उल्लेख्य थिक जे एहि मध्य लेखकक कतिपय कथा भाषान्तरहुमे अनूदित-प्रशंसित भेल अछि।

एहि अभिराम–श्याम, कर्मठ कला-कुशल व्यक्ति-शक्तिसँ छात्रावस्थहि सँ पूर्ण प्रभावित रहलहुँ। आशानुसार हिनक वर्धमान युवत्व एवं सम्मानित प्रौढ़त्वसँ सर्वथा सद्भावित छी।

पुस्तकक परिचयक किछु पाँती लिखबाक छल किन्तु पुस्तक-प्रणेताक प्रसंग सेहो बिनु कहने नहि रहल गेल। मुदा ओतबे धरि जतबासँ नैषधकारक एहि उपालम्भक दोषभागी नहि बनी —" ... असह्य शल्यं गुणाढ्ये वस्तुनि मौनिता चेत्" ।

अन्तमे रामदेव बाबूसँ एक आग्रह बिनु कयने नहि रहब जे ओ भावयित्री प्रतिभासँ अनुसन्धान दिस जते डेग बढ़बथि, रोकबनि नहि; किन्तु कारयित्री प्रतिभाक रचनात्मक दिशामे कनेको अग्रपश्चात् करता तँ से क्षम्य नहि होयत।

विद्यापति-चन्दाझाक पूजा हुनक गीत-छन्दक आलोड़नसँ अधिक, हुनक रचना-पथक निर्माणमे अछि। मैथिलीक कथा-साहित्य, औपन्यासिक लालित्य एखन क्षीणकलेवर अछि, म्लान-प्राण अछि — तकरा सम्भृत करबाक दायित्व उपयुक्त प्रतिभे पर निर्भर अछि, तेँ कने आग्रह-दुराग्रह।

श्रीसुरेन्द्रझा 'सुमन'

धरती माता

धरती माता

⊕

तीन मासक समय कोना बीति गेलैक से अयोध्या एको रत्ती नें बुझि सकल। तीन बरख पर गाम आयल छल। अपना देशसँ ततेक दूर परदेश मे रहैत छल जे अयबा-जयबामे बहुत टाका खर्च भऽ जाइत छलैक। तेँ एहिना तीन-चारि बरख पर मास-दू मासक लेल गाम अबैत छल। फेर छुट्टी पूर भेला पर किछु दिनक आर छुट्टी बढ़बैत छल। बेसीकाल तार दऽ कऽ मेडिकल लीव लैत छल। आ अन्तमे पुनः विदा भऽ जाइत चल। तकरा बाद चाहियो कऽ गाममे नहि रहि सकैत छल। कमा-खटा कऽ जे टाका संग अनैत छल से समाप्त भऽ जाइत छलैक।

अयोध्याक जीवनक बेसी भाग शहरेमे बितलैक। ओहि ठामक प्रत्येक सुविधा-असुविधासँ ओ अभ्यस्त भऽ गेल छल। तेँ एहि देहातमे ओकर मोन उजबुजा जाइत छलैक। एहन बूझि पड़ैत छलैक जेना कोनो कूपमे खसि पड़ल हो। ने बिजली, ने बस, ने ट्रेन, ने पीचक चिक्कन रोड, ने दुनियाँक समाचार जनबाक कोनो साधन। मुखियाजीक ओहि ठाम आठ दिन पर कोनो पत्रिका अबैत छलैक आ एकटा सरकारी रेडियो छलैक ताहिसँ लोक दुनियाँक खबरि बुझैत छल। मुखियाजीक ओहि ठाम जाकऽ बैसब अयोध्याकेँ बड़ खराब लगैत छलैक तेँ एहि बेर एकटा ट्रान्जिस्टर सेहो लेने आयल छल।

मुदा समाचारे सुनिकऽ गुजर चलऽवला नहि। मटिया तेलक घुँआइत ढिबरी, धूरा भरल सड़क पर बैलगाड़ी, की पुरना झरंठी साइकिलक सवारी, गमै दोकानक घटिया चाहक भखरल पत्ती, चीनीक बदलामे गूड़ देल काढ़ा सन चाहक रंग······सभ ओकरा जीवनकेँ दुरूह बना दैत छलैक। गोटेक साबुन, की कोनो दवाइ, की टार्च वा ट्रान्जिस्टरक बैट्री लेल चारि-पाँच कोस

बजार जायब---ई सभ अयोध्याकेँ असोकर्ये-असोकर्य छलैक। आ तेँ ओ घर सँ कोल्हुअरबे नीक बुझैत छल। आ तेँ एतेक-एतेक दिन पर गाम अबैत छल। आ तेँ छुट्टीक दस बारहे दिन बितला पर गामसँ शहर चल अयबाक लेल ओकर मोन उचटि जाइत छलैक। आ तेँ सभ बेर छुट्टी पूरऽसँ हप्ता–दू हप्ता पहिनहिसँ विदाक तैयारी करऽ लगैत छल। सैंसे छुट्टी बितायब पहाड़ भऽ जाइत छलैक। खाली, पत्नी, माय, कि बहिनिक दुराग्रह, ममत्व वा स्नेहक वशीभूत भऽ कऽ तार दऽ कऽ छुट्टी बढ़बा लैत छल। किछु दिन और अँटकि जाइत छल।

मुदा ई नहि जे अयोध्याकेँ गाम-घर नीक नहि लगैत छलैक, सऽर-समाजसँ स्नेह-सम्बन्ध नहि छलैक। से तँ ट्रेन पकड़ि कऽ जखन विदा होइत छल तँ आँखि करुणार्द्र भऽ जाइत छलैक। अपन गाम-घरक एक एकटा वस्तु स्मरण भऽ अबैत छलैक····गाछी, इनार, पोखरि, बड़क गाछ, महादेवक मन्दिर, गामक लोक-वेद, अपन काकी, भाउजि, बहीनि, पिउसि···!

सभसँ बेसी विह्वल कऽ दैत छलैक अपन माय-बापक आँखिक नोर। चलऽ कालमे आङनक महिला सभ आङनक दुरुक्खा लग धरि अरियाति दैत छलैक। माय आ बहीनि दूनू माइ-धी महादेवक मन्दिर धरि अरियाति अबैत छलैक आ ताबत धरि नोर पोछैत ठाढ़ि भेलि तकैत रहैत छलैक जाबत धरि नजरिक इरोत नहि भऽ जाइक। अयोध्यो उनटि-उनटि कऽ पाछाँ तकिते जाइत रहैत छल। गामक लोक, सऽर-सम्बन्धी सभ गामक बाहरक पोखरि धरि संग अबैत छलैक। मुदा पिता संगहि संग स्टेशन धरि अबैत छलथिन, भरि बाट बोल-भरोस दैत जे — ओहिठाम नीक जकाँ रहब··· देहक ध्यान राखब··· चिट्ठी दैत रहब··· गाम परक कोनो चिन्ता नहि, हम सब सम्हारि लेब। गामक फिकिर कयने परदेसीक मोन उदास भऽ जाइत छैक···' आ अयोध्या सभ किछु मूड़ी झुकौने सुनैत जाइत छल।

स्टेशन पर पिता अपनेसँ दोकानसँ पूड़ी-तरकारी आ जिलेबी आनि कऽ खुआ दैत छलथिन आ ट्रेन पर चढ़ा कऽ ट्रेन फुजला पर अपनो ओही संग चलऽ लगैत छलाह। गाड़ी तेज भेला पर दौड़ऽ लगैत छलाह। गाड़ी तेज भेला सँ ओकरा संग दौड़ऽमे नहि सकला पर हुकमि कऽ ठाढ़ भऽ जाइत छलाह आ गाड़ीक क्रमशः दूर होइत जाइत पछिला डिब्बाकेँ देखैत रहि जाइत छलाह।

अयोध्या जखन गोड़ लागि कऽ चढ़ैत छल आ गाड़ी फुजैत छलैक तखन विह्वल भऽ उठैत छलैक मोन। पिताक आवेश देखि होइत छलैक जे लपकि कऽ जंजीर खीचि ली आ उतरि जाइ। ने तँ चलतीये गाड़ीसँ कूदि कऽ गाम पड़ा जाइ। किन्तु से सभ कहियो ने कऽ सकल अयोध्या।

रस्ता भरि एकटा सघन पीड़ा होइत रहैत छलैक जे—की, सौंसे जिनगी एहिना प्रवासेमे बितबऽ पड़त ! की एहिना अपन देस-कोससँ दूर रहि कऽ जीबऽ पड़त !

आ ओहि विशाल शहरमे पहुँचि कऽ फेर ओहिमे रमि जाइत छल। आ फेर गाम परसँ सय-सयटा आग्रहक चिट्ठी गेलापर एहिना मास-दू मास लेल गाम आबि जाइत छल।

अयोध्या ओतऽ कोनो कपड़ाक मीलमे काज करैत छल। पहिने पत्नी गामेपर रहैत छलैक, मुदा आब अपना संगहि रखैत छल। छुट्टीमे गाम अयला पर पत्नी ओ धीया-पूता सभकेँ सेहो संगहि आनऽ पड़ैत छलैक। एहि बेर ओ पूरे तीन बरखपर देस आयल छल। पछिला बेरुक यात्रा शुभ नहि रहलैक। पिता बूढ़ भऽ गेल छलथिन, से ओहि छुट्टीक क्रममे हुनक देहान्त भऽ गेलनि। अयोध्या अत्यन्त शोकमग्न भऽ गेल छल। ओहि बेर गामसँ जखन विदा होमऽ लागल छल तँ माय बोल-भरोस बड़ देने छलैक किन्तु ओहि बोल-भरोसमे वेदनाक जे कम्पन छलैक तकरा अयोध्या नीक जकाँ अनुभव कयने छल।

ओहि बेर अयोध्या गामसँ विदा भेल ठीक, मुदा स्टेशनपर आबि कऽ बुकौर लागि गेल छलैक। पिता संग नहि छलथिन। ओकरा विदा करबाक लेल प्लैटफारमपर क्यौ ठाढ़ नहि छलैक जकरा गोड़ लागि ट्रेन पर चढ़ैत। ओ हिचकऽ लागल छल। बेडिङ पर बैसि हिचकैत-हिचकैत एकटा ट्रेनो छोड़ि देने छल।

एहि बेर बुढ़िया मायक मरणासन्न हालत सूनि कऽ आयल छल। मायक दबाइ-बीरो करा देलकैक आ ओ ठीक भऽ गेलैक। मुदा घर-दुआर, खेत-पथार, सभक हाल जेना रुग्ण भऽ गेल छलैक। मासे-मासे ओ मायकेँ टाका पठबैत छलैक जाहिसँ खेती-बाड़ी, जऽन-बोनिहार चलैत छलैक, मुदा पिताक अमल-दारीक जे रंग छलैक से जेना बिला गेलैक।

अयोध्याक पिता कर्मठ गृहस्थ छलथिन। अपन चारि भाइक भयारी, बटबरामे तीन बिगहा खेत भेटल छलनि आ अपना बाहुबल पर ओ ओकरा दस बिगहामे बदलि देने छलाह। रंग-विरंगक अन्न उपजबैत छलाह ओ अपना धरतीसँ। डेढ़-दू बिगहामे कलम आ बाँस लगौने छलाह। एकटा चमच्चा खुनबौने छलाह। ओकरा चारू भीड़ पर अछिन्नरय राड़ी-डाभी होइत छलनि जाहिसँ अपनो घर छारैत छलाह आ अनको दैत छलथिन। अयोध्या जाबत गाममे रहैत छल ताबत पिता तेसरा दिनपर कऽ ओहि चभच्चामे जाल फेकबबैत छलथिन। अयोध्या भरि मोन माँछ खाइत छल। एहन माँछ शहरमे कहाँ भेटैत छलैक!

किन्तु तीने बरखमे सभ किछु जेना श्रीहत भऽ गेलैक। होउक कोना नहि! जहिना सौन्दर्यमयी नारीक समस्त श्री ओकर पतिमे सन्निहित रहैत छैक, तहिना धरतीक समस्त श्री, उर्वरता ओ शस्यश्यामलता ओकर कर्मठ गृहस्थमे सन्निहित रहैत छैक। अयोध्याकेँ बूझि पड़लैक जेना ई खेत-पथार गाछी-बिरछी, घर-दुआर ओकर पिताक मृत्युसँ टूगर भऽ गेलैक।

अयाध्या एहि तीनू मास खेतक आरिये-आरि खूब बौआयल। गाछिये-गाछी टौआइत रहल। आ ताहीमे कोमहर दऽ तीनू मास बहि गेलैक तकर आभासो नहि भेलैक। खेत सभक आरिपर बैसैत छल तँ बूझि पड़ैत छलैक जेना ओ अपन दुखनामा कहैत होइक। खेतक कोन-कान ओहिना पड़ल छलैक। जँ पिता रहितथिन तँ ओहि खेतक ओहन दशा नहि रहितैक।

कलम दू टा छलैक--पुरना आ नवका। पुरना कलममे गेल तँ देखलक जे कलमी आमक सभटा निचला डारि काटल वा लिबाकऽ तोड़ल छलैक। जारनि लेल लोक चोरा-चोरा कऽ काटि कऽ लऽ गेल छलैक। गाछ सभ अपन अंग-भंग भेला पर जेना हकन्न कनैत छलैक आ से देखि कऽ अयोध्याक मोन कानि उठलैक।

नवका कलम गेल देखऽ। बड़ स्नेहसँ ओकर पिता लगौने छलथिन। रंग-विरंगक आम जहाँ-तहाँसँ ऊपर कऽ कऽ रोपने छलथिन। चारू कात भरि छाती आरा देल। ओहि पर भाँति-भाँतिक बेख लगौने छलथिन ओकर पिता। हुनक लगाओल नवगछुली देखि-देखि लोककेँ सेहन्ता होइत छलैक। मुदा ओहि दिन ओहि कलमक दशा देखि विक्षिप्त जकाँ भऽ गेल। घास छिलैत-

छिलैत आ माल-जालक चरैत-चरैत आरा गासि गेल छलैक। चारू कातक बेखक कोना पता नहि। जारनिबिछनी तोड़ि-तोड़ि कऽ लऽ गेल छलैक। पाँती सभमे सँ बीच-बीचमे खाली दऽरी पड़ल——कलम नदारति। बचलाहामे किछु ठुट्ठ भेल, किछुक पुनगी मात्र बचल। अधिकांश गाछक हाथसँ पयबा धरिक डारि-पात माल-जाल चरि गेलैक। दातमनिमे, जारनिमे तोड़ि-तोड़ि कऽ लोक लऽ गेलैक। तीन बरखसँ कलम तामल नहि गेल छलैक। गाछक जड़ि थलिआयल नहि गेल छलैक। कोदारि-खुरपी नहि पड़ल छलैक। भरि गामक माल-जालक गोचर बनि गेल छलैक।

अयोध्या माथपर हाथ धऽ कऽ आरा पर बैसि गेल। कलमक ओ रूप-रेखा देखि कऽ निर्णय नहि कऽ पबैत छल जे एकर एहि दुर्दशाक दोषी के ?

—सैह, बड़का भाइक कलमक ई दशा ! हुनका सोझाँ एहिमे चानन छिलकैत छल, आ से······'

अयोध्याक ध्यान टुटलैक। ओ नजरि उठा कऽ तकलक। आगाँमे मद्धू काका ठाढ़ छलथिन। ओकर पिताक अभिन्न मित्र। ओ सान्त्वना दैत कहलथिन—आब सोचे केने कोन फल ? कहल छैक जे नित्तहि खेती दोसरहि गाय, जे नहि देखय तकरहि जाय। बाउ, धरती तँ माता थिकीह——वसुन्धरा, विश्वम्भरा, अन्नपूर्णा। हमरा सभक कर्त्तव्य थिक हुनक सेवा। जे करय सेवा, से पाबय मेवा।'

अयोध्या किछु उत्तर नहि दऽ निस्तब्ध तकैत रहल। किछु फुरलैक नहि जे मद्धूकाकाकेँ की कहनि।

ओमहरसँ अबैत काल बुढ़िया मोनिक चारूकात हरियर-हरियर कियारी सभ देखलक। मड़ुआ आ धानक बिड़ारक कियारी सभ। लोक अपन-अपन कोलीकेँ घैल, बाल्टीसँ मोनिसँ पानि आनि-आनि कऽ पटा रहल छल। गामक जाहि पोखरि पर जहिया कहियो साँझ कऽ अयोध्या गेल तँ यैह-दृश्य देखलक। घामे-पसेने नहायल बाले-बच्चे मीलि गृहस्थ सभ पटौनीमे लागल।

नवका कलमसँ गामपर अयबाक बाट अपन चभच्चे लग दऽ छलैक। बुढ़िया मोनिसँ आगाँ आबि कऽ ओकर चभच्चा छलैक। ओहिठाम अबिते ओकरा मोन पड़लैक जे कोना ओकर पिता चभच्चाक चारू कात किनारमे अगते बीया पाड़ि कऽ रखने रहैत छलथिन। मुदा अयोध्या देखलक, ओहि चभच्चाक चारू कात सौंसे परती-परात बनल।

छुट्टी समाप्तप्राय छलैक। बेडिङ आदि सरिया लेने छल। किन्तु विदा होयबाक निर्णय नहि कऽ पबैत छल। आइ-कालिह करैत कय दिन ने बीति गेलैक। अन्ततः किछु दिन आरो छुट्टी बढ़बौलक। तथापि विदा होयबाक प्रोग्राम अदबऽमे पड़ल छलैक। नगरक सुख-सुविधा आकर्षित करैत छलैक तँ अपन उपेक्षित उजड़ल चास ओकर पयर छानि लैत छलैक। पत्नीकेँ संग-लऽ जयबाक विचार करैत छल तँ मायक विवशता बाट घेरि लैत छलैक। अयोध्या बड़ अन्तर्द्वन्द्वक बाद पत्नी ओ धीया-पूताकेँ गामे पर छोड़ि कऽ जयबाक निश्चय कयलक।

एहि बेर रौदीक विकट प्रकोप छलैक। पानिक लेल हाहाकार मचल छलैक। रोहिणी आ मृगशिरा शुद्ध कऽ दागा दऽ गेलैक। आर्द्रा सेहो कय दिन बीति गेलैक। लोक आकाश दिस सतृष्ण आँखिञे तकैत छल पिपहिया जकाँ। सन-सन पुरिबा बहैत छलैक। मेघक टिक्कर पूबसँ पश्चिम दिस चल जाइत छलैक। आर्द्राकेँ बितैत देखि लोक निराश भेल जाइत छल। अचानक साँझ कऽ एकरत्ती पछबा सिहकलैक कि पश्चिम दिससँ कारी-घटाव कयने मेघक पहाड़ उठलैक आ सौंसे आकाशकेँ कानो-कान छापि लेलकैक। आधा राति बितैत-बितैत झमाझम बरखा होमऽ लगलैक।

अयोध्या ओहि भोरमे विदा होयबा लेल छल। किन्तु बदरी जे लधलकैक से चारि दिनुक बादे जा कऽ उबेर भेलैक। ओ तँ बड़ साहस कयलक जे बरखा होइत छैक तैयो चल जाइ। मुदा ओहि सुपानय बरखामे चारि-पाँच कोस दूर स्टेशन धरि जयबा लेल ने कोनो आदमीएँ तैयार भेलैक, ने कोनो बैलगाड़िये भेटलैक। ओ मोन मारि कऽ बैसल रहल। सोचलक जे जखने बरखा बन्द होयतैक कि कोनो आदमीकेँ संग कऽ विदा भऽ जायब।

उबेर भेलैक। चारू कात हुलास पसरि गेलैक। अयोध्या सौंसे गाम बौआ आयल मुदा क्यौ नहि भेटलैक। सभ खेतीक ताकमे लागि गेल छल। ओकर मोन विखिन्न भऽ गेलैक। ओ सोचऽ लागल जे कारखानाक मनेजर की कहैत होयत ? कहैत होयत जे अयोध्याकेँ बड़ मानैत छिऐक तेँ ओ नाजायज फायदा उठा रहल अछि। ओ चिन्तित भऽ उठल। ओही मनःस्थितिमे गाम पर आयल तँ देखलक जे पछबारी घरक दच्छिन-पच्छिम कोनचर खसि पड़लैक। कतेक दिनसँ चहकल छलैक। चारि दिनुक बदरीमे सलकि कऽ बैसि गेलैक। सुकुर भेलैक जे तखन क्यौ छलैक नहि घरमे।

आब ई भिन्ने झंझटि बजरि गेलैक। सौंसे घर भकोभंड भऽ गेल छलैक। ओकरा जोड़ा लेब आब सभसँ जरूरी भऽ गेलैक। जे अयोध्या मोटा-चोटा लऽ गेनिहार आदमी लेल बौआ आयल छल से आब राज-मजदूर ताकऽ विदा भेल।

गाममे चारि-पाँच गोट राज छलैक। सभक ओहिठाम ओ बेरा-बेरीसँ गेल। सभ ठाम पता लगलैक जे ओ सभ कतहु बीया उपाड़ि रहल अछि तँ बाधमे कतहु मड़ुआ रोपि रहल अछि। फेर ओ बाधे-बाध घूमऽ लागल। क्यो ओकरा घरक खसलाहा कोनचर आइ जोड़बाक लेल तैयार नहि भेलैक। सभ एके उत्तर दैक जे – सरकार! एखन खेतक ताक छोड़ि कऽ रोज कमाउ गऽ!'

अयोध्या, जतेक रोज भेटैत छलैक ताहिसँ एक टाका कऽ फाजिल देब सेहो गछलकैक, मुदा क्यो तैयार नहि भेलैक—नहि मालिक! एखन तँ हम अपने बोनि पर जऽन रखने छी।'

बौआइत-बौआइत फिरीसान भऽ गेल। मोन तीत भऽ गेलैक। मुदा बाध-बाध बौआइत काल देखलक सभ ठाम व्यस्तता। पीयर-पीयर ढाबुस बेङ सभ खेतमे जहाँ-तहाँ पसरल कोँ-केँ करैत। बेङ सभक दूनू गलफड़मे दू टा कऽ कारी गोली सन बहार भऽ कऽ सटकि जाइत छलैक। ऊपर खुलल नील आकाश आ नीचाँ पसरल धरती। एकटा खेतमे मड़ुआ रोपैत एकटा जऽन ऊठि कऽ डाँड़ सोझ करैत बाजि उठल—जकरे बनल अखढ़बारे भैया तकर बारहो मास......'

अयोध्याक लेल ई दृश्य सर्वथा अभिनव ओ अद्भुत छलैक। शहरमे रहनिहार तँ एहन दृश्यक हेतु लालायिते रहैत अछि। अयोध्यो जीवनक अधिकांश भाग शहरेमे बितौलक। ओ जऽनक उक्ति सुनलक। बूझि पड़लैक जेना कोनो इंजेक्शन दऽ देल गेलैक। बोल ओकरा हृदयमे खचित भऽ गेलैक।

ओ हारि-थाकि गामपर जाय चाहैत छल। मुदा आब ओ गामपर नहि जा कऽ मद्धू काकाक खेत दिस मुड़ि गेल। खेतपर देखलक आठ-दस गोट जऽन आ अपने तीनू-चारू बापुत मड़ुआ रोपऽमे भिड़ल छलाह। अयोध्या जखन आरि पर गेल आ मद्धू काकाक नजरि पड़लनि तँ ओ धड़फड़ाकऽ हाथ झाड़ैत उठि गेलाह। अयोध्याक लग आबि कऽ पुछलथिन—की बौआ, आइयो नहि जा सकलह?'

—कहाँ? क्यो आदमीये ने भेटल। ताहिपरसँ घरक कोनचर ढहि गेलैक भोरमे।'

—ई तँ बेस झंझटि भेलह ।'

— सौंसे बौआ अयलहुँ, क्यो राज तैयार नहि भेल ।'

—हँ, से तँ भेल होयतह ।' मद्धूकाका बजलाह—एखन अदराक पहिल बरखा भेलैए। खेतीक घमासान ताक छै ।'

अयोध्या कनेक रुकि प्रसंग बदलैत बाजल—काका ! हऽर नहि छै, जऽन-हरबाह नहि छै, बीया नहि छै, तकर खेती कोना हेतै ?'

—खेत छै ने ?' मद्धूकाका पुछलथिन ।

—हँ !' अयोध्या बाजल ।

—गृहस्थ अपने अछि ने ?' मद्धूकाकाक प्रश्न छलनि ।

—हँ, अनाड़ी-धुनाड़ी ।'

—तखन कोन परवाहि ?' मद्धूकाका रुकि कऽ बजलाह—मुदा एना छानि कऽ पुछबाक अर्थ की बाउ ?'

अयोध्या गह्वरित भऽ गेल छल। बुकौर लागि गेलैक। ओ रुकि-रुकि कऽ बाजल—हमही छी ओ अनाड़ी ।'

—आ नोकरी ? चास आ चाकरी तँ संग-संग नहि चलि सकै छै। कोनो एकटाकेँ छोड़हि पड़तह ।'

—जी, आब नहि जेबै। इस्तिफाक तार दऽ दैत छिऐ ।'

—वाह !' मद्धूकाका हुलसि उठलाह—बड़ दीब विचार। आब फेर तीन बरख पर बड़का भाइक खेत-पथार, गाछी-बिरछी, बाड़ी-झाड़ी, माल-जाल सनाथ भऽ गेलनि। ओकर दिन फीरि रहल छै ।' फेर नीचाँसँ एक आँजुर माँटि उठाकऽ अयोध्याकेँ सम्बोधित कऽ कहलथिन—बाउ ! ई धरती माता थिकीह। जे हिनक माता जकाँ सेवा करैत छनि से अजस्र वात्सल्य पबैत अछि आ जे सतमाय जकाँ देखैत छनि तकरा लेल ई रुच्छ माटि मात्र रहैत छथि ।'

मद्धूकाका भाव-विभोर भऽ चुटकी भरि माटिसँ अयोध्याक माथ पर ठोप कऽ देलथिन। □

जलक तल पर लिखल नाम

⊕

मालती पोखरिक घाट पर ठेहुन भरि पानिमे पैसल चुरुए-चुरु पानि लऽ फेकैत रहलि। फेर उपरका सीढ़ीपर बैसि कऽ एँड़ी रगड़ऽ लागलि। लगैत छलैक जेना कोनो वस्तुक प्रतीक्षा होइक। ओकर किछु सखी सभ पानिमे हेलि रहलि छलैक। किछु संगी नूआमे साबुन लगा कऽ खीचि रहलि छलि। ओहि घाटसँ पूब बीस-पचीस हाथ हटि कऽ दोसर घाट सेहो छलैक। ओहू पर लोक स्नान करैत छल। दूनू घाटक बीचमे शिवमन्दिर। लोक पोखरिमे स्नान कयलक आ लोटामे जल भरि कऽ महादेवकेँ रिसाल कयलक। पोखरिक घाटक यैह दिनचर्या।

पोखरि पुरान। ऐतिहासिक। मुदा के खुनबौने छल से अतीतमे बिलायल। उत्तरसँ दच्छिन नाम पोखरि आ ओकरा चारूकात विशाल भीड़क घेरा। ओहि भीड़ पर कनैल आ गुलैंचक जंगल। एकटा कोन पर पिड़ारक गाछ। दोसर दिस हरफा ओ धातरिक विशाल-विशाल गाछ सभ। भाँति-भाँतिक जंगली गाछ, लत्ती, साहोड़, बाँस आदिक वन आ ओहिसँ बनल बीहड़ झोंझ सभ। महदइ नामसँ इलाकामे प्रख्यात, पुरैनिक पात, कमल ओ कुमुदिनीक फूल एवं प्राचीन शिवमन्दिरक लेल प्रशस्त एहि पोखरि पर पुबारि ओ पछबारि गामक समान रूपसँ सामाजिक अधिकार।

दूनू गाम एकबद्धू। एक बाध, एक गाछी-बिरछी, एक स्कूल, एक पोस्ट-आफिस। दूहू गाममे नोत-हकार आ जबारी चलैत, तेँ वैवाहिको सम्बन्ध चलैत। तेँ दूहू गामक बच्चासँ बूढ़ धरिक पारस्परिक परिचय, हेलमेल।

मालती पुबरिया घाट पर बैसल रतनकेँ देखैत रहलि। रतन अपन सङ्गिता सभक संग बैसल छल स्नान करबाक उद्देश्यसँ। बेसी दिन पर गाम

आयल छल तें गप्प-सप्पक सूत्र पैघ भेल जाइत छलैक। ओ निश्चिन्तसँ बड़ी काल धरि बैसल रहल आ मालती बड़ी काल धरि एँड़ी रगड़ैत रहलि।

गाछीक आम ओगरैत मालती कहियो रतनकेँ गारि पढ़ने रहैक। आम गोटा-गोटी पाकऽ लागल रहैक। एक दिन दुपहरमे डोली बहल रहैक। मालती एकसरिए अपना गाछीमे छलि। पुबारी गामक छौंड़ा सभक हेंज पछबारी गामक गाछीमे अयलैक। मालती कतबो चिचियायलि, गारि पढ़लक तथापि ओ सभ डोली पर खसल आम बिछिते गेलैक। मालती कोढ़िया, जनिपिट्टा, आ औरो विभिन्न प्रकारक विशेषणक आविष्कार करैत रहलि किन्तु तकर कोनो असरि ओहि हेंजपर नहि पड़लैक। ओही हेंजमे रतन सेहो छल। मालतीक गारिक चर्खी बन्द नहि होइत देखि रतनकेँ किछु फुरलैक आ ओ घूमि कऽ मालतीकेँ मुँह दूसि कऽ आगाँ बढ़ि गेल। मालती बजैत-बजैत विवश भऽ कऽ कानऽ लागलि छलि। कनितो जाइत छलि आ फराकक घेरसँ आँखि आ नाक पोछैत जाइत छलि।

एतबेमे आनो आन गाछीक धियापुता सभ जमा भऽ गेलैक। बात बढ़ि जायवला छलैक। कारण, बेर उतरला पर गामसँ चेतन लोक अबितै आ गाम-गामक तकरार आरम्भ होइतैक।

किन्तु से अवसर अयलैक नहि। हाफपैंट आ हाफकमीज पहिरने रतन मालतीक गाछी दिस एक जलखरी पाकल-पाकल आम भरि कऽ लटकौने चल अबैत छल। मालती चिचिया उठलि—वैह जनिपिट्टा फेर अबैए। मूह दूसि कऽ पड़ायल छल। आबऽ ने, मारि आँठीसँ कपार फोड़ि दैत छियह।'

आ पाँच-सात टा आँठी रतनक देह पर खसलैक। किन्तु रतन रुकल नहि, बाजल नहि। मचान लग आबि कऽ ठाढ़ भऽ गेल। मालतीकेँ सम्बोधित करैत कहलकैक—गय! आब गारि-तारि नहि पढ़। तोहर जे आम बिछलियौ से लऽ ले।'

मालती तामसेँ बाजलि—लऽ ने जो कलराहा सभ। आमेक भुखल-कलायल छें तँ लऽ जो।'

—गय! अपनो गाछीक आम सूदिमे दऽ देलियौ। आब ने हल्ला कर, ने गारि पढ़, ने बाप-भाइकेँ कहिहें जे हमरा ओतऽ उपराग देत गऽ।' रतन

ई कहैत भरलो जनखरी आम मचान तरमे उझीलि देलकैक आ कहैत विदा भऽ गेल जे— तोहर सभक गारि आ ऐंठ आँठीक चेन्ह लेने जाइ छियौ नफामे ।'

मालती सकदम भऽ गेलि । आनो धियापुता बौक जकाँ चुप रहि गेल । की करओ, की बाजओ से नहि फुरलैक ।

से, मालती रतनकेँ फेर देखलकैक स्कूलमे । बायलोजी क्लासमे मालती सेहो आ रतन सेहो । ई कोना भऽ गेलैक ? दूनूक मोनमे कोनो प्रतिक्रिया भेलैक । एक दोसराक सामने नहि पड़बाक कोनो अव्यक्त संकल्प ।

दोसर दिन बायलोजीक बदला गणितक सेक्सन । रतन पहिनहि अपन विषय बदलि कऽ चल आयल । किन्तु वर्गारम्भक घंटी बजैत देरी मालती सेहो वर्गमे गेलि । कनेक सुस्थिर भेलापर सौंसे क्लासपर दृष्टि देलक तँ आँखि विस्फारित रहि गेलैक रतनकेँ ओही क्लासमे देखि कऽ आ रतन सेहो कम आश्चर्यित नहि ।

टिफिन भेलैक । सौंसे मैदानमे छात्र-सभ पसरि गेल । रतन मालतीकेँ सोर कयलकैक—गय ! तोरा डरेँ तँ हम बायलोजी छोड़ि गणितमे अयलहुँ । तँ अहूठाम जान नहि छोड़लेँ ?'

—हमहूँ तँ तोरे डरेँ गणित सेक्सनमे चल अयलहुँ मुदा……'

—मुदा की ?' मालतीक बात बीचेमे रतन काटि देलकैक—आबे की बिगड़लौ ? चल जो बायलोजीमे । कमसँ कम नर्सौ तँ भैये जेबेँ ।'

—से तोँही चल ने जो, कम्पाउण्डरो तँ भैये जेबेँ ।

मालती घाट पर एँड़ी रगड़ैत रहलि आ मोन पाड़ैत रहलि जे कोना सहमति भेलैक आ दूनू बायलोजी क्लासमे चल आयल छल । मोन पड़लैक मालतीकेँ जे कहने छलिऐक, कम्पाउण्डरो तँ भैये जेबेँ ।…… आइ ओ मेडिकलक छात्र अछि आ हम……'

मालती खूब जोरसँ एँड़ी रगड़ैत रहलि । रतन धोखोमे पछबरिया घाट दिस घूमि कऽ नहि तकलकैक । मालती मोने-मोन अपन अस्तित्वक खोज करऽ लागलि जे पारिवारिक आर्थिक संकट, सामाजिक मर्यादा, कन्याक शिक्षाक प्रति उदासीनता, उपेक्षा ओ विरोधक जंगलमे कतहु भुतिया गेल छलैक ।

मोन पड़लैक। एहि पोखरिमे नहाइत छलि। पहिने ओ हेलैत-हेलैत आधा पोखरि धरि चलि जाइत छलि। किन्तु जहिना-जहिना लज्जा-बोध बढ़ैत गेलैक तहिना-तहिना हेलनाइ कम होइत गेलैक। ओहि दिन रतन अपन संगीक संग हेलैत छल। पुरैनिक पात आ कमलक फूल तोड़ैत छल। मालती घाटपर भरि छाती पानिमे ठाढ़ि छलि। मोन भेलैक जे ओहो हेलि जाय आ कमलक फूल तोड़ि आनय। मुदा संकोचेँ ठाढ़िए रहलि। फेर किछू फुरलैक। रतनकेँ जोरसँ सोर पाड़ि कऽ कहलकैक—– तीन-चारि टा फूल तोड़िकऽ एमहर फेक तँ।'

रतन सुनलक आ हेलिकऽ वेहाइ पोखरिमे गेल। पाँच-सात टा फूल नाल सहित घिचने आयल आ पछबरिया घाटक सोझामे आबि हेलिते-हेलिते मालती दिस फूल फेकि देलकैक। आखरी फूल ओकरा मुँहपर लगलैक। सौंसे मुँह-आँखि पर पानिक फोहार पड़ि गेलैक। मालती नहा कऽ उपर भेलि आ ओहि आखरी फूलकेँ अपना केशमे खोंसि लेलक। शेष फूल लऽ कऽ महादेव-मन्दिरमे चल गेलि। जल ढारि कऽ ब्रहराइत छलि तँ रतन लोटामे जल लऽ कऽ मन्दिरमे जाइत आगाँमे भेटि गेलैक। मालती टोकि देलकैक—– हय! ओना फूल किएक फेकलेँ?'

रतन कनेक रुकल, कनेक हँसल, कहलकैक—– आ तोँ ओ फूल केशमे किएक खोंसि लेलेँ?' आ मन्दिरमे चल गेल।

एँड़ी रगड़ैत मालती सोचैत रहलि—–सत्ते, ओ फूल केशमे खोंसि लेलक। किएक……किएक……किएक… ? ई प्रश्न माथमे अनुगुंजित होमऽ लगलैक। आ मोन पड़लैक ओहि दिनुक घटना। जल ढारबाक लेल मन्दिरमे प्रवेश कयलक। रतन महादेवपर माथ टेकने पाठ कऽ रहल छल—–करचरण कृतं वा कायजं कर्मजं वा…… श्रवण नयन… …

मन्दिरमे क्यो छलैक नहि। मालती अच्छत आ बेलपत्र महादेव पर छिटैत लोटो भरि जल ढारि देलकैक। रतनक माथ अच्छत, बेलपत्र आ जलसँ नहा गेलैक। ओ चौंकि कऽ माथ उठौलक तँ देखलक, खाली लोटा लेने मालती हँसैत ठाढ़ि। रतनकेँ तामस भऽ गेलैक—गय! एना आन्हरि जकाँ जल किएक ढारलही?' सौंसे देह भीजि गेल।'

—देह तँ नहिञे गलि गेलौ ! आ ओना बलाह जकाँ महादेव पर माथ किएक टेकने छलैं ? लोकके पूजा नहि करऽ देबही ? माथ पर पड़ि गेलौ तँ हम की करियौ ?' आ ओ मन्दिरसँ बहरा गेलि ।

एँड़ी रगड़ैत मालती अपनेसँ प्रश्न पुछैत रहलि — ओना जल किएक ढारि देलकैक ? आ सोचैत रहलि जे रतनोक मोनमे ई प्रश्न उठल होयतैक जे ओहि दिन फूल केशमे किएक खोंसलिऐक ? ओकरा माथ पर जल किएक ढारलिऐक ?

मैट्रिकक रिजल्ट बहरयलैक तँ मालती स्कूल गेलि । अंकपत्र लेने रतन बहराइत छल । मालतीकेँ देखि कऽ कहलकैक — कांग्रेचुलेशन्स फॉर योर ग्रैण्ड सक्सेस ।'

मालती थकमका कऽ ठाढ़ि भऽ गेलि । मौन, निश्चल आँखिसँ ताकऽ लागलि, जेना कहऽ चाहैत होइक जे—तोहर सक्सेस सार्थक छह । हमर सक्सेसक कोन उपयोगिता ?' मुदा मुँहसँ शब्द नहि बहरयलैक । रतन सेहो कोनो अनुकूल उत्तर नहि सुनि अकबका जकाँ गेल । दुनू किछु क्षण 'न ययौ न तस्थौ'क स्थितिमे ठाढ़ रहल । फेर नीचाँ दिस तकैत नहुएँसँ बाजलि मालती—लक्ष्मणरेखाक घेरामे जतबे भेल सैह बहुत । तोँ आगाँ मेडिकलमे जयबह । डाक्टर बनबह ।'

मालती रतनकेँ 'रे' सँ 'हओ' कोना कहि देलकैक से नहि ध्यान पर अयलैक । ओ निराश आँखिसँ फिल्ड दिस ताकऽ लागलि ।

—कोनो उपाय नहि भऽ सकै छौ ?' रतन बाजल ।

—ऊँह ! गरीब बापक बेटीक की उपाय ? एतबय कहाँक थोड़ भेल ?'

—आगाँ पढ़ितैं तँ बड़ राइज करितैं । फूलक सार्थकता छैक पूर्ण विकास मे ओ...............'

—सभ फूल भगवाने पर नहि चढ़ैत छैक । भाग्यशाली फूल भगवानक मस्तक पर अर्पित होइत छैक आ अभागल फूल गाछेमे मौलिकऽ झड़ि जाइत छैक । ठीके छैक.......... '

आ मालती आफिस दिस अपन अंकपत्र लेमऽ चल गेल छलि।

मालती सोचैत रहलि, रतन कतेक आगाँ बढ़ि गेलैक ! व्यक्तित्व केहन निखरलक ! किन्तु रतन एकोबेर घूमि कऽ तकलकैक नहि । मालती एँड़ी रगड़िते रहलि, ताबत कतेक गोटे आयल, नहायल, गेल। रगड़ैत -रगड़ैत मालतीक पैर लाल भऽ गेलैक। ओ फेर कपड़ा सभकेँ भिजा कऽ साबुन लगबऽ लागलि। बेराबेरी कपड़ा खीचऽ लागलि। साबुनक फेनमे सौंसे हाथ बोरल। फेन सभ बहि-बहि कऽ पानिक सतह पर दहाइत रहलैक। स्मृतिक फेन ओकर मस्तिष्कक सतह पर पसरैत रहलैक। ....कतेक दिन पर रतन बाहरसँ आयल छलैक। एहिना कोनो रवि कऽ एही मन्दिर पर भेंट भऽ गेलैक—की गय ! की हाल-चाल। पढ़ाइ-लिखाइक की हाल ? '

—सभ बिसरा गेलै। आ मोनो राखि कऽ की,अनेरे माथक भार। शिक्षा हमरा सभक लेल नहि छै। माय-बापके चिन्ताक एकटा और बोझ भऽ जाइत छै।' मालती अन्यमनस्क भऽ कऽ कहने छलैक।

रतनकेँ नहि फुरयलैक जे की कहैक। मालतीक आँखिक विषादमे जेना ओ डूबऽ लागल। बात टारैत कहलकैक—बाबू जी स्वस्थ, प्रसन्न छथुन ने ?'

—हँ, मालतीक पिताकेँ जतेक स्वस्थ रहबाक चाही।'

मालती अपन पिताक मानसिक क्लेशक अनुभव करैत छलि। जतबे ओ पढ़ि लेलक ततबे ओकर पिताक उपर चिन्ताक भार बढ़ि गेलैक। नहि पढ़लि रहितय तँ ओतेक चिन्ता नहि होइतैक। मालतीक संगी सभ बियाह होइत देरी ओकरा हेंड़सँ फराक भऽ कऽ विवाहिताक समूहमे चल जाइत छलैक। लगैत छलैक जेना ओ सभ सीनियर भऽ गेलैक आ मालती दिनो-दिन जेना जूनियर होइत गेलि।

मालती सोचैत रहलि रतनक सम्बन्धमे। जकरा ओ ऐँठ आँठीसँ मारने छलैक, कलराहा कहने छलैक से कतेक मूल्यवान् भऽ गेलैक ! पछिले दिन तँ चर्चा होइत छलैक कतहु, रतनक व्यवस्थापर। बाप रे ! रतनक एतेक दाम ? रतनकेँ ई नीक कोना लगतैक ?

मालतीकेँ कपड़ो खीचल-पखारल भऽ गेलैक। बेरो बहुत भेल जाइत छलैक। ओ थोड़ेक प्रतीक्षामे रहलि। आकांक्षाक उधियानसँ मोन भरल—रतनकेँ कमसँ कम एक बेर तकबाक तँ चाहिऐक। तामस भेलैक जे—हमर

अस्तित्वक आभास किएक ने भऽ रहल छैक रतनकें। ओ ऊपर आबि कऽ एकटा ईंटा उठा लेलक आ घाट पर आबि खूब जुमा कऽ जोरसँ पानिमे फेंकि देलकैक। ईंट चभाक् दऽ पानिमे खसलैक। जोरसँ आवाज भेलैक। थोड़ेक पानि उड़लैक आ पोखरिक तरंग चारू कात पसरि गेलैक।

रतन पानिमे ईंट खसबाक स्वर सूनि चौंकल आ पाछू तकलक तँ तकिते रहि गेल। पछबरिया घाट पर मालती ठाढ़ि भेलि ओकरे दिस निर्निमेष तकैत छलि। मालती कोनो महाकविक महाकाव्यक नायिका जकाँ बूझि पड़लैक। कोनो चित्रकारक उरेहल नायिका जकाँ बूझि पड़लैक। कोनो शिल्पीक मूर्त्ति-शिल्प जकाँ बूझि पड़लैक। मूर्त्तिमती रागिणी जकाँ बूझि पड़लैक। रतन मालतीकें किछु क्षण देखैत रहल, फेर मुँहपर एकटा मुस्कान छिड़िया गेलैक। मालतीक चेहरापर संचारी भाव जकाँ क्षणिक उल्लास आ तृप्तिक रंग अयलैक किन्तु तुरन्ते विषादक कारी मेघ पसरि गेलैक। आँखिमे असीम उदासी आ शून्यता उतरि अयलैक। ओ माथ झुका लेलक आ पानिमे पैसि गेलि। भरि डाँड़ पानिमे थोड़ेक काल ठाढ़ि भेलि पानिक छिटका उड़बैत रहलि। एक बेर ओकर आँखि फेर रतन दिस गेलैक। मोनमे क्षणिक चिन्तन अयलैक—की रतनकें सेहो उद्वेग भेल हेतै! नहि, ओकरा किएक हेतै?

ओ पुन: पानिक सतहकें हाथक तरहत्थीसँ नीपऽ लागलि। फेर छोड़ि देलकैक। पानिक सतह जखन स्थिर भऽ गेलैक, कम्पन बन्द भऽ गेलैक, तखन जलक तल अपन तर्जनीसँ लीखऽ लागलि र·· त ··न! र···त··न! र·· त····न! फेर ओहि लिखलाहा स्थानक तरंगक बीचमे रतन दीस ताकि कऽ जल्दी-जल्दी दू-तीन डूब दऽ देलक। रतनक नामसँ जेना ओकर सौंसे देह नहा गेलैक। रतनक नामसँ ओकरा समग्र देह जेना आवृत भऽ गेलैक। □

मनुक्ख



माघ मास। पाँच-छौ दिनसँ भयानक शीतलहरीक प्रकोप चलि रहल छलैक। सन-सन पछबा बसातसँ ठाड़ आ कनकनी विकट रूपेँ बढ़ि गेल छलैक। अनेक ठामसँ माल-जाल ओ अनेक व्यक्तिक ठड़िकऽ मरि जयबाक समाचार अबैत छलैक। आधा राति धरि रमन-चमनसँ भरल रहऽवला शहरक रस्ता सभ सुनसान भऽ गेल छलैक। सिनेमाहाँलमे दर्शकक संख्या नगण्य भऽ गेल छलैक। ओहिठाम बड़ी दूर धरि रिक्साक धारी लागल रहैत छलैक से एहि शीतलहरीक साँझमे कतहु-दृष्टिगोचर नहि होइत छलैक। ओकरा सभकेँ अपन-अपन जानक मोह छलैक आ तेँ सभ अपन-अपन बाट धयने छल—खाली अथवा सवारी लऽ कऽ।

गनेसी एक हाथमे खायकक मोटरी लटकौने आ दोसर हाथकेँ काँखतर दबौने आयल छल। फाटल तौनीकेँ माथसँ ओढ़ने छल, मुदा जाड़ आ ठंढसँ सिटसिटा रहल छल। साहस कऽ कऽ चलल छल अस्पताल। मुदा डेरासँ सिनेमाहाॅल लग अबैत-अबैत ओकर हाथ-पयर ठिठुरि कऽ सुन्न भऽ गेलैक।

किन्तु ताहिसँ की ? ओकरा अस्पताल पहुँचबाक छलैक, नहि तँ ओकर पत्नी ठक दऽ उपास पड़ि जइतैक। तीन-चारि दिन पहिने ओ पानि पीने छलैक। आइ दिनोमे गनेसी खायक नहि दऽ अयलैक। भरि दिन ओकर घरवाली ओकर आ खायकक बाट तकने होयतैक आ सम्भवत: पीड़ासँ आँखिमे नोर भरि गेल होयतैक। गनेसी ई बात बूझैत छल आ तेँ ओहि भयानक शीतलहरीमे जल्दीसँ जल्दी अस्पताल पहुँचि जाय चाहैत छल।

गनेसी जँ आइ गाममे रहितय तँ एतेक चिन्ता नहि होइतैक। गाम गामे छलैक। गनेसी गाममे छल तँ हरबाहि करैत छल, बोनि पबैत छल। मझिली बेर धरि हरबाहि आ बेरुक पहर अपन काज-धन्धा करैत छल। कटनी बेरमे बोनिक अतिरिक्त हरबाही आँटी-मुट्ठी होइत छलैक। प्रसन्न रहैत छल। काज करबामे भूत छल गनेसी। तेँ कहियो बैसाड़ी नहि होइत छलैक। बोनि लगले रहैत छलैक।

आ शहरमे तँ ओ सप्ताहक सप्ताह हरमाद रहल। साँझक साँझ उपास पड़ैत रहलैक। शहरक प्रति ओकरा कहियो आकर्षण छलैक, मुदा आब विरक्ति भऽ गेलैक। आब होइत छलैक जे शहर खखोड़िकऽ खा जयतैक। हड्डी मात्र बचल रहि जयतैक। प्रत्युत देह ओकरा छलैक कहाँ? ओ तँ अपन बचल हड्डीकेँ घसि रहल छल। ओहि घसाइत हड्डीक पीड़ासँ जखन छटपटाय लगैत छल तँ तामस होइत छलैक मंगला पर। वैह रंगीन सपना देखाकऽ शहरक बबुरबनीमे पटकि देने छलैक। सहानुभूतिहीन मरुभूमिमे भटका देने छलैक।

मंगला जखन शहरसँ गाम अबैत छल तँ खूब फैशन करैत छल। खूब फूकैत छल। आ से देखि कऽ गनेसीकेँ स्पृहा भऽ जाइत छलैक। ओहि स्पृहामे पुछने छलैक मंगलाकेँ—'भाइ रे! कोन काज कऽ कऽ कमाइत छही ओतऽ?'

मंगला शान भरल ऐंठीक स्वरमे कहने छलैक—'रे गनेसिया! शहरमे काम का कोनो कम्मी हय? साला हजार ठो काम मिलता है, हजार ठाम। लोक-लड़िका को भी ले गया। हींया रहता तँ बकरी चराता आ हुआँ छौंड़ा पढ़ता है आ औरतिया सेहो काज करती है।'

गनेसी आश्चर्यसँ मंगला दिस तकैत रहल। मंगला फेर गनेसीक पीठपर हाथ रखैत कहलकैक—'भाइ गनेसी! मुदा सभसँ असान काज छै रिक्सा चलायब। भरि दिन रिक्सा चला। साँझमे मालिककेँ जमा दऽ कऽ बाँकी अपन खो, उड़ा, जे कर। सीजिनमे तँ हम सभ बीस-बीस, तीस-तीस रुपैया कमा लै छियौ। थोड़ेक पाइ बचा कऽ जँ पुरानो-धुरानो अपन रिक्सा कीनि ले तँ फेर रइसक जिनगी बितबैत रह। अपने मालिक, अपने नोकर। क्यो टोकनाहर नहि। जखन मोन होउ चला, जखन मन होउ आराम कर।'

—चलौनाइ कोना सिखतै?' के रिक्सा देतै? गनेसी पुछने छलैक।

—धूर ! दू दिनमे ट्रेंड। चारि-छौ मास बिना डरेबरी लेसनकें सेहो चला लै छै लोक, मुदा डरेबरी जरूरी होइ छै। मालिक सभ रहै छै जकरा तीस-तीस चालिस-चालिसटा रिक्सा रहै छै। रिक्साक कोन कमी हेतै ?'

गनेसी ओही हौस पर शहर चल आयल छल। छौ मास, बरख दिन धरि एहि ठामक जीवनमे रमैत रहल। पाछाँ जखन शहरी जीवनक अभ्यस्त भेल तँ अपन घरवाली आ बाल-बच्चाकें सेहो गामसँ लऽ आयल। अपना एकोरत्ती इच्छा नहि रहैक, मुदा घरेबाली बड़ जोर कयलकैक तें लऽ आनऽ पड़लैक।

गनेसी पहिल बेर रिक्साक हैंडिल धयने छल तँ खुशीसँ छाती धक-धक करऽ लगलैक। मंगला ओकरा अपन रिक्सापर चलौनाइ सिखौने छलैक। तें ओ सुरूमे रिक्सा चला कऽ जे पाइ आनय से मंगलाकें दऽ दैक आ मंगला जखन अपने चलबऽ जाय तँ गनेसी भानस-भात करैक। ओही भानसमे गनेसी अपनो खाय। पाछाँ मंगले एकटा मालिकसँ चिन्हार करा कऽ एकटा रिक्साक ड्राइवरी देया देलकैक। लाइसेन्स बनबा देलकैक आ शहरक जे रस्ता-मोहल्ला नहि देखल छलैक से देखा-सुना कऽ तालिम कऽ देलकैक।

ओहि दिनसँ गनेसी रिक्सा चलबैत रहल। एहि आशामे चलबैत रहल जे कहियो ने कहियो अपन रिक्सा—पुरानो-धुरानो अपन रिक्सा भऽ जयतैक आ ओ अपन जिनगी बिता सकत। अनकर मातहतीसँ मुक्त भऽ कऽ अपन स्वतन्त्र, आत्मनिर्भर जीवन बितयबाक आकांक्षा ककरा नहि होइत छैक ? किन्तु से पूर्ण भऽ पबैत छैक कतेक गोटे कें ? परिस्थितिक ढेह पर भसियाइत असंख्य मानव-समूहमे एकटा घासक हस्तीए कतेक ? आ गनेसी तँ घासोक टुकड़ी बराबरि नहि छल।

ओहि दिनसँ गनेसी रिक्साक अपने मालिक होयबाक सपना देखिते रहल। एहि बीचमे ओ कतेक बेर ने रिक्सा-मालिक बदललक। मुदा नीक जकाँ पेटो ने भरि सकलैक कहियो। भरि देह वस्त्रो ने पहीरि सकल।

आठ दिन पहिने आखरी रिक्सामालिक रामप्रसादसँ झगड़ा भऽ गेलैक आ मालिक रिक्सा छीनि लेलकैक। रामप्रसाद तँ मंगलाक संगे शहरमे डरेबरी सुरू कयने चल मुदा आइ ओ तीस-चालिसटा रिक्सा चलबबैत छल आ ओकरा ओतऽ मंगलाक गौआँ, मंगलाक सिखाओल गनेसी डरेबरी करैत छल।

किछु दिन पहिने मंगला भेटल छलैक। कहलकैक जे—अपन रिक्सा सेकेंड-हैंड छल। टायर-ट्यूब खतम भऽ गेलै, रीम टूटि गेलै, सीट फाटि गेलै। हारि कऽ कंडम कऽ दियऽ पड़ल। आब फेर जमा पर रिक्सा चलबैत छी।' मंगला आ गनेसी दूनू फेर एके धूरी पर घूमऽ लागल। आ रामप्रसाद; सौंसे शहरक रिक्सा ड्राइवर ओकरा जनैत छलैक। क्यो कहैत छलैक जे कोनो माल हाथ लागि गेलैक तेँ ओ रमपरसदबासँ रामप्रसाद भऽ गेल। कतोक गोटेक धारणा जे रामप्रसादक पूजी थोड़बे छलैक! ओ तँ म्युनिसिपैलिटीक वार्ड कमिश्नर साहेब गिरधारीचरणक पूजी छलनि। तेँ ने चारिटा रिक्साक पास पर चालिसटा रिक्सा चला रहल छल रामप्रसाद आ कतहु क्यो पकड़ैत नहि छलैक। सत्त बात जे होइक, रिक्सा चालक समाजमे रामप्रसाद छल चालिस गोट रिक्साक अओनर, मालिक।

गनेसी ओहि दिन साँझमे रिक्साक जमा नहि देलकैक। घरवाली दुखित छलैक तकरे लेल दवाइ कीनि लेलकैक। रामप्रसादकेँ एहिसँ कोनो मतलब नहि जे के कोन हालतिमे अछि। ओकरा बस जमाक टाका चाही। से नहि भेला पर ओ तुरुक भऽ जाइत छल। बेतुकारे गारि पढ़ऽ लगैत छलैक। जँ कोनो दिन रिक्सावलाक कारणेँ रिक्सा बैसाड़ी भऽ गेलैक तँ रामप्रसाद ओकरासँ जमाक टाका असुलिये लैत छलैक। गनेसी ओहि दिन रामप्रसादकेँ कतबो सप्पत खा कऽ कहलकैक जे— हम काल्हि अझुको जमाक टाका दऽ देबऽ मुदा रामप्रसाद ओकरासँ रिक्सा छीनिये लेलकैक। गनेसी ओहिठामसँ चलऽ लागल तँ रामप्रसादे ओकरे कान्ह परक गमछा उतारि लेलकैक।

आठ दिनसँ गनेसी बेकार भऽ गेल छल। घरवाली अस्पतालमे पड़लि छलैक। पाँच हाथक खोपड़ीवला डेरामे चारि-पाँचटा धियापूता सभ भूखसँ कल्ह-मल्ह करैत छलैक। गनेसी; डेरा, अस्पताल आ कोनो नऽव रोजीक खोजमे फिफियायल घुरैत छल। वैह जनैत छल जे एतेक दिन ओ कोना कऽ निमहैत रहल।

आइ साँझमे पैंच-पालट कऽ कऽ किछु टाकाक जोगाड़ कऽ सकल। ओहीमेसँ थोड़ेक पथ्य-पानि, किछु दवाइ आ घरक खर्चक ओरियान कयने छल। तथापि किछु पाइ बचा कऽ डाँड़मे रखने छल जे काल्हुक दिन गुजारब।

काल्हि साँझ खन घरवाली बड़ अनुनयसँ कहने छलैक जे— नहि किछु होइछै तँ खालियो हाथे आबि गेल करौ। भरोस बन्हा जाइछै तखन। ने तँ बड़ अहलदिली होबऽ लगैए।'

किन्तु खालियो हाथे घरवालीकें देखऽ लेल अस्पताल जायमे ओ बड़ संकोच ओ पराभवक अनुभव करैत छल । पौरुषक पराभवक भार वहन करब ककरहु लेल असह्य भऽ सकैत छैक । तेँ दिनमे ओ अस्पताल नहि गेल छल । आ तेँ भरि दिन पत्नी-वंचनाक ग्लानिसँ सीदित होइत रहल छल । रातियोमे ओ घरवालीक खयबाक लेल कहाँ किछु लऽ गेल छलैक ! राति आ दिन दुइ साँझ जाहि परसौती पत्नीकें खायक नहि दऽ अयलैक तकरा सम्बन्धमे सोचि कऽ गनेसीक अन्तर हाहाकार कऽ उठैत छलैक । तेँ एहन शीतलहरीक रातिमे अस्पताल जायब नितान्त अनिवार्य छलैक ।

मुदा सिनेमाहॉल लग अबैत-अबैत गनेसीक हाथ-पयर जबाब दऽ देलकैक । ओ निरीह जकाँ विवश आँखिसँ जनशून्य सड़ककें देखऽ लागल आ मोने-मोन ओतऽसँ अस्पतालक दूरी नापऽ लागल । सोचऽ लागल जे जँ कोनो च्न्हिार रिक्सा ओम्हर जाइत भेटि जाइत ! फेर मोनमे निश्चय कयलक जे चारि-छौ आना पाइयो दऽ कऽ एक सवारीवला टमटम कि रिक्सा पकड़ि ली । मुदा सिनेमाहॉल लग सुनसान देखि आँगा रिक्सा-स्टैंड दिस आयल ।

ओहिठाम केवल एकटा रिक्सा लागल छलैक आ ओकरा सीट पर घोंकड़ी लगा कऽ रिक्सावला सूतल छल । गनेसी निराश भऽ ओकरा लग गेल । थोड़ेक काल थतमत भेल ठाढ़ रहल । फेर पुछलकैक—भाइ ! रिक्सावला ! हौ !'

ओ कनेक उनमुनायल आ मुँह झँपनहि पुछलकैक— के छी ?'

गनेसी पुछलकैक— अस्पताल चलबहऽ हौ ?'

—हय ! अखनी के जायत जान गमाबे ला ?'

—हौ, बड़ जरूरी अछि हौ ।'' गनेसी विकल होइत कहलकैक ।

—दू रुपैया लगेगा ।' रिक्सावला धन्न सन मुद्रामे बाजल ।

—हौ, भाइ हौ ! अस्पतालक तँ बारहे आना किराया छै । हमहूँ तँ रिक्सेवाला छी, हौ भाइ ।'

गनेसीक ई उत्तर सूनि कऽ ओ फुरफुरा कऽ उठि बैसल— के छिऐँ रे मर्दें ! कोन विपति पड़लौ ?'

—आङन सँ दुखित छै । तीन साँझसँ खाना नै दऽ एलिऐए । उपासे पड़लि हेतै ।' गनेसी बाजल ।

रिक्सावला थोड़ेक काल स्तब्ध रहल, फेर कहलकैक-- हमरा बुतें चलाओल नहि हेतौ। अपने बरु चला कऽ लऽ चल।'

गनेसीकें ओहि शीतलहरीक रातिमे रिक्सावला देवता बूझि पड़लैक। ओ खायकके रिक्सा पर राखि देलक। रिक्सावला अपन सीट पर सुतले रहल। गनेसी रिक्सा हाँकऽ लागल।

अस्पताल निःशब्द भऽ गेल छलैक। गेट सभ बन्द भऽ गेल छलैक। गनेसी छहरदेवालीक टुटलाहा टपान दऽ कऽ भीतर गेल आ दस मिनटक बाद फेर चल आयल। रिक्सावला ओहिना सूतल छल। गनेसीक हाथ-पयर ठिठुरि कऽ एकदम जकड़ि गेल छलैक। तैयो ओ फेर रिक्सा चलबऽ लागल।

स्टैंड पर आबि रिक्सावलाकें उठबैत कहलकैक---हौ भाइ! उठह, स्टैंड पर आबि गेलह।'

गनेसी ई कहैत सीटपरसँ उतरि गेल आ रिक्साकें स्टैंडक एक कात लगा देलक। डाँड़सँ पाइ बहार कऽ ओहि रिक्सावलाक दिस बढ़बैत कहलकैक --हौ भाइ! ई बारह आना पाइ लैह।'

रिक्सावलाक निन्न टूटि गेलैक। अङैठी-ममोड़ करैत बाजल---रे मर्दे! केहन लोक छें? सौंसे संसारमे अन्याय कयनिहारक कमी छै जे हमरा अन्याय करऽ कहैत छें? हम तँ रिक्सा पर कतहु सुतले रहितहुँ। तों अपना पयरें चला कऽ गेलें आ अयलेंहें तकर हम की लियौ? रे! हमहूँ मनुक्खे छी आ मनुक्खेक काज मनुक्खकें होइ छै, से किए ने बुझै छिही?'

गनेसी मुट्ठीमे पाइ रखने स्तब्ध भेल ठाढ़े रहि गेल माटिक कोनो मूर्त्त जकाँ। आगाँमे एकटा साक्षात् मनुक्ख विद्यमान छलैक।

□

हत्थाजोड़ी

⊕

एके बेर एकटा स्त्री-कंठक चीत्कार बहरयलैक---देखै जाह हौ लोक सभ ! ई मरदाबा हमरा बलजोरी घेरैए।'

स्टेशनक मोसाफिर खानामे लोक सभ भरल छल। टिकटवला खिड़की लग पैघ-सन धारी लागल छलैक। किछु रिक्सा-टमटम खाली ठाढ़ छल। किछुपरसँ सवारी उतरि रहल छलैक। किछु कुली समान उठाकऽ लेने जाइत छल प्लैटफारम पर आ किछु कुली ठाढ़ भेल नव सवारीक अयबाक बाट तकैत छल। स्त्री-कंठक ई चीत्कार सूनि सभक ध्यान ओहि दिस चल गेलैक।

एकटा नवयुवक, वयस बर्ष तीसेक--एकटा युवतीकेँ हाथ पकड़ि कऽ घीचैत छलैक आ ओ युवती हाथ बड़ी जोरसँ झमारि रहल छलैक। दिना-दिनिस ई काण्ड देखि लग पासक दर्शक सभमे आश्चर्य, आक्रोश, आशंका आ त्रास भरि गेलैक। एकटा प्रौढ़ व्यक्ति होलडाल पर बैसल अपन प्रौढ़ा पत्नी ओ युवती कन्या लग जा कऽ ठाढ़ भऽ गेल। एक नवदम्पती छल, से युवक बाहरमे होइत झगड़ा दिस उत्सुक भऽ ओम्हर बढ़ऽ लागल तँ ओकर पत्नी ओकर साँचिक निचला खूट पकड़ि कऽ घीचि लेलकैक-- ओम्हर कहाँ जाइ छी औ ? अपन चिन्ता करू।'

—कहाँ जाइछी कतहु ?' आ युवक घबड़ायल मुद्रामे अपन पत्नीक आर लग ससरि कऽ चल आयल।

---बड़ मारुक भऽ गेल आब ई टीसन।' एकटा यात्री लगमे बैसल दोसर अनचिन्हार यात्रीसँ कहैत छलैक-- देखियौ ने, एहन अन्हेर देखने छलहुँ कहियो ? की जमाना भऽ गेलै ?'

ट्रेनक प्रतीक्षा करैत यात्री सभ अपन-अपन मोटा-चोटा लग सावधान भऽ गेल। लगैत छलैक जेना क्यो सामान छीनक लेल आबि गेलैक। डेरबुक जन समूह कनेको टा घटनासँ त्रस्त भऽ कऽ आत्मरक्षाक बाट ताकऽ लगैत अछि। परिस्थितिसँ निर्भीकतापूर्वक लड़बाक साहसक कोन कथा जे ओकर यथार्थतो जनबाक प्रयास नहि करैत अछि आ समाजमे एहन लोकक संख्या अधिक। से युवतीक संग बलजोरी होइत देखियोकऽ यात्री समूहमेसँ क्यो ओम्हर नहि टसकल।

ओम्हर झंझमंझ बढ़िते जाइत छलैक। ओ मौगी ओहिना आर्त्तनाद कऽ रहलि छलि। किछु किशोर-युवा वर्गक लोक प्लैटफारम पर छल। ओकरा सभकें गाड़ी पकड़बाक नहि छलैक, ओहिना टहलैत छल। आ ओ सभ हल्ला सूनि प्लैटफारमसँ बाहर आबि ओहि दूनू युवक-युवतीकें घेरि लेलक। लोककें जमा होइत देखि आरो लोक सभ सहटि कऽ आबऽ लागल। भीड़ बढ़ि गेलैक आ ओहिमेसँ आबाज उठऽ लगलैक—अय ! ऐसे काहे करता है ?'

—हमर लोक हय तऽ हम कहबै नै ?' मौगीकें डेन पकड़निहार ओ व्यक्ति बाजल। ठेहुन धरि मैलछोन ढट्ठा धोती, डोरिया हाफ कमीज आ कान्ह पर चरखाना गमछा धयने ओ युवक हकमि रहल छल। रूप-रंगसँ लगपासक देहातक लगैत छल।

किन्तु ओकर वाक्य पूरा होइतैक आ ओ आर किछु बजितय ताहिसँ पहिने ओ युवती कनैत बाजि उठलि—नै बाबू ! हम एकरा नै चिन्है छिऐ। हम एकर क्यौ नै छिऐ।'

युवतीक बयस बाइस-तैस वर्षक छल होयतैक। लाल छीटक पुरान साड़ी पहिरने, रंग पिंडश्याम मुदा शरीरसँ खूब स्वस्थ। खूब गस्सल गोल बाँहि, चौकस देह, मुँह पर चिक्कनै, बड़ सुन्नरि नहि, मुदा नाक-नक्सामे आकर्षण। तें लोककें सहजें विश्वास भऽ गेलैक जे एकरा संग बलजोरी कयनिहार कोनो गुण्डा थिक। एक गोटे क्रोधसँ बाजल—मारो साले को। दिने-देखार साला गुण्डै करता है।'

ओ युवक ओहि युवतीक हाथ भयसँ छोड़ि देलकैक आ ओ युवती हिचकि-हिचकि कऽ आँचरसँ आँखिक नोर पोछऽ लागलि......

एकटा विद्यार्थी लपकि कऽ ओहि देहाती युवकक आगाँसँ कमीजक कालर पकड़ि कऽ खीचि लेलकैक आ थापड़ लगा देलकैक। युवक मारि खाकऽ अपन कनपट्टी हँसोथऽ लागल।

किछु आर थापड़ ओकरा लागि जैतैक किन्तु बीचमे एक दोसर व्यक्ति रोकैत कहलकैक -- रौ, कनेक बातो तँ बूझि ले! मौगियेक ने कोनो खेल-बेल होइक।

—रे, ई के छियौ तोहर ?'

—की नाम छौ ?'

—अइ मौगीक की नाम छिऐक ?'

चारू कातसँ प्रश्न होबऽ लगलैक। ओ युवक थापड़क चोटसँ हतप्रभ भेल अपराधी जकाँ चकुआयल भयत्रस्त आँखिसँ चारू कात तकैत छल। लोक जखन बड़ हुतकारलकैक तँ ओ साहस कऽ बाजल--ई हमर आङनबाली हय। हमर नाम छीतन अइ आ एकर— युवती दिस देखा कऽ कहलकैक-- नाम छिऐ मनबतिया।'

—नै यौ, हमर ई वयौ ने छी। हमर नाम छी मनतोड़िया।'

—तखन मार सारकेँ। आइ खतम्मे कऽ देल जाय।' एकटा स्वर उठलैक।

—लऽ चल थाना पर।' दोसर स्वर उठलैक।

ओ युवक आब आर घबड़ा गेल। मारि आ पुलिस-थानाक आतंकसँ जेना ओकर सौंसे देह थरथर कँपैत छलैक। ओ घिघिआइत बाजल-- बाबू! चलू। हम हलुमानजीक पीड़ी छूबि कऽ सप्पत खा कऽ कहब जे ई हमर आङनबाली छी। नहिराक नाम मनतोड़िया छिऐ। जखन हम गौना करा कऽ अपना ओतऽ अनलिऐ तँ हमर माय एकर नाम मानबती राखि देलकै, से ई मौगी नहिरा-ससुरा दूनूक नाम बजा रहल अइ।'

—की गय! साफ-साफ बाज। ने तँ आइ एकरा हम सभ कोनो दशा बाँकी नै रखबै।' ......एकटा नमहर केशवला विद्यार्थी बाजल -- जेल तँ जेबे करत।'

मनतोड़िया मने मानबती सेहो लोकक हजूम देखि, लोकक आक्रोश देखि हकबका गेलि। कनेक थकमकाइलि रहलि, फेर बाजलि—मारियौ नै, मुदा आब हम एकर बहु नै छिऐ। हम जबाब दऽ देलिऐ।'

लोक सभमे हँसी पसरि गेलैक। लोक सभ मनभनाय लागल—दुर ! बेकार बात छै। साँय-बहुक झगड़ा छिऐ। मौगी ताल केहन कयने छल ! मङनीमे बेचारा मारि खयलक।'

छितनकेँ उग्रास बुझि पड़लैक। ओकरा पर चारू कातसँ जे आक्रोशक भार पड़ि रहल छलैक से जेना एके बेर कम भऽ गेलैक। ओ मनतोड़ियाक बातपर तड़पि उठल—जबाब दऽ देलिऐ ! जो ने तँ, सगाइ कऽ ने ले। तोरा रोकै छौ के ?'

—तँ कथी लय हमरा संग रगड़ कयने छैँ। हम सगाइ कऽ लेब तँ तोँ की करबेँ ? आ सगाइ करब से तोरेसँ पूछिकऽ ? कहलकै ने !' मनतोड़िया चमकि कऽ बाजलि आ ऐँठि कऽ दोसर दिस घूमि कऽ ठाढ़ि भऽ गेलि।

थोड़े काल स्तब्ध वातावरण रहलैक। फेर एकटा वयस्क व्यक्ति मनतोड़ियाकेँ पुचकारि कऽ पुछलकैक—गय मानवती ! ई तोहर घरवला छिऔ से तँ मानै छही ?'

—छलय, आब नै। हम जबाब दऽ देलिऐ। आब हम एकर क्यौ नहि, हमरासँ एकरा कोनो मतलब नै।'

—किए ? जबाब किए देलही ?'

—हमरा ई बड़ दुख दैए। आब बनाइन नहि हयत एकरा संग।' मनतोड़िया ई कहैत सिसकऽ लागलि। पहिलुका कानब आ एखनुक सिसकब—दुनूमे अन्तर छलैक। ओ नोर पोछैत बाजलि—एकरा संग रहि कऽ हमर कोन सऽख-सेहन्ता पूरल अछि ?'

—औ बाबू सभ ! हम एकरा दुख दै छिऐ ? एकरा कथीक दुख दै छिऐ ? अन्नक की वस्त्रक ?' छीतन गह्वरित होइत बाजल—आ से ई मौगी ताल लगौने अइ। कोनो बातक पित्त-तामस होइते टीसन बिदा होइए। हम बूझै छलिऐ जे पित्त-तामस पर कतौ चलिये जाय, की रेलेमे कटि जाय ! की औ बाबू ! रूसलकेँ लोक बौंसौ नहि ?'

—हँ, खाली अन्न-वस्तरसँ सुख होइ छै ?' मनतोड़िया बाजलि — ई सन्देही तँ तेहन जे संदिखन होइत रहै छै जेना हमरा क्यो उठाइये कऽ लऽ जायत ।'

—चुप्प ।' छीतन गरजल आ एकटा गारि पढ़ि देलकैक ।

—देखै छी ? ई जे गारि पढ़ैए ! एकर जे मुँह छूटल छै से देखि लिऔ अपने सभ । देखि लिऔ । एकर बहु छिऐ तँ ई हमरा गारी देत दस लोकमे ?'

—अय ! तुम गाली काहे देता हय ?' ओहिमेसँ क्यो बाजल ।

छीतन फेर मुँहचुरू भऽ गेल । थोड़ेक जे साहस भेल छलैक से फेर भहरि गेलैक । छीतन सफाइ दैत बाजल — हम भोरे काम पर जाइ छी । भरि दिन देह तोड़िकऽ कमाइ छी । से ई जलखै हमरा लय नै रखैए । रातिमे जे भानस करत से खा-पी लेत आ हमरा लय किछु ने राखत । हमरा बासिए मुहेँ काम पर जाय पड़ैए । ताही लय कनी रऽझऽ भऽ गेल, से अइ पेम्ही मौगीक नेप चुआयब देखै छिऐ ?'

—हम पेम्ही आ ई बड़ सतबरता ! ग़ैह बहु डेबऽ चललाहय ! मखानक पातसँ मुँह पोछि ने आ ।' मनतोड़िया भौंह टेढ़ करैत बाजलि ।

ओ वयस्क व्यक्ति दुहू पति-पत्नीक बीच सोलह करा देबऽ चाहैत छलैक । ओ मनतोड़ियासँ पुछलकैक — गय ! कय टा धिया-पुता छौ ?'

मनतोड़िया मौन रहि गेलि । धिया-पुताक प्रश्न जेना ओकर सुप्त व्यथाकेँ जगा देलकैक । ओकर चेहरा गम्भीर भऽ गेलैक । कोनो उत्तर नहि दऽ कऽ जेना बहुत किछु कहि गेलि छलि ।

ओ वयस्क व्यक्ति बात बदलि मनतोड़ियाकेँ बुझबैत कहलकैक— होअह, अहिना भऽ जाइ छै । आब जाह अपन घर । लोक की कहैत हेतह ? कहऽ तँ, दूनू गोटे केहन सोहनगर जोड़ी छह । तखन सरेना पर अपनेसँ देखार होइ छह !'

—रेलमे कटि-मरि जायब मुदा ओकरा संग नहि जायब ।' अस्वीकारमे माथ डोलबैत मनतोड़िया बाजलि ।

—किए ? किए ने जेबही ? तोरा जाय पड़तौ ।' चारू कातसँ लोक बाजऽ लागल ।

—ई हमरा कहलक सगाइ कऽ ले । एकर एहन सपरतीब जे हमरा कहलक सगाइ कऽ ले ! कोन मरद अपना लोककेँ एहन बात कहतै ?' मनतोड़िया रोबसँ बाजलि — ई तँ हमरा मारि देत । रातिकऽ भानस करै छी तँ दू-दू बेर कऽ हूड़ि लैए आ बिहाने डाँउ-डाँउ करऽ लगैए । जहिया घरमे नै किछु रहै छै, तहिया की अपन कोँढ़-करेज देबै ? ताहि लै नै किछु फुरैत छै तँ पिटपिटा दैए । आइयो भिनसरे ईंटा लऽ कऽ मारलक अछि । हे देखू !' ई कहि मनतोड़िया अपन पीठ उघारिकऽ देखा देलकैक आ कानऽ लागलि । चाकर-चौरस कारी पीठ पर लीला-मासा ओहिना झलकैत छलैक । एतबा कालमे बेसी लोक चल गेल छल तथापि किछु नवतुरिया वर्ग मनोरंजनक साधन देखि ओहिना घेरनहि छलैक । से मनतोड़ियाक बात सूनि, ओकर पीठ पर लीला-मासा देखि सभक मुह एके बेर तमतमा गेलैक ।

—अय ! तुम इसको मारता हय ?' एकटा छौंड़ा फेर एक थापड़ छितनाकेँ मारलकैक । ओकर सौंसे देह झनझना गेलैक । ओ करुण आँखिसँ मनतोड़िया दिस ताकऽ लागल । मनतोड़ियाक मोनमे सेहो जेना दरेग भऽ गेलैक । ओकर तामस उतरि गेल छलैक । आ सहज नारीत्वक स्वरूपमे आबि गेल छलि । से सहज भावसँ कहलकैक — नै मारियौक बाबू ! हम तँ जबाबो दऽ देलिऐ तखन हमरा खातिर कथी लय मारि खायत ?'

—गय ! आबो चल ने गय !' छीतन अनुनय कयलकैक । ओ वयस्क व्यक्ति औखन ठाढ़े छल । ओ थोरथाम्ह लगबैत कहलकैक — आब माफ कऽ दही आ चल जो ।'

—नै यौ ! ई तीनसँ तिरपट भऽ जायत तैयो ने जेबै । ई हमरा कहैए सगाइ कऽ ने ले । ईंटा लऽ कऽ मारैए ।'

—रे मर्दे ! गलती मानि ने लही आ हटो झंझटि ।'

—हँ, हमरासँ गलती भेलै । आब नै कहबै किछु ।' छीतन कननमुँह होइत बाजल ।

विद्यार्थी सभ एक्के बेर बाजि उठल — पयर पकड़ पहिने । बिना पयर पकड़ने नहि छोड़बौ ।

छीतन असमंजसमे पड़ि गेल। ओकर पौरुष अपन पत्नीक पयर पकड़बाक लेल तैयार नहि छलैक।

विद्यार्थी सभ चारू कातसँ ओकरा कुब्बी आ ठुनकासँ मारऽ लगलैक—सार ! पयर पकड़हक ने तँ मारैत मारैत थौआ कऽ देबऽ।'

मनतोड़ियोकेँ छीतनक दुर्गति देखि सन्तोष भऽ गेल छलैक। छीतनकेँ जखन कोनो उपाय नहि भेटलैक। भेलैक जे आब ई सभ जान नहि बचऽ देत तँ ओ विद्यार्थीए सभक ठेलान पर मनतोड़िया लग चल आयल आ बड़ दीन भावसँ बाजल—की गय मानबती ! आबो नै चलबही ? आब कत्ते दुर्गति करेबें ?' मनतोड़िया पर कोनो असरि होइत नहि देखि कऽ बाजल—की गय ? आब हमरा तोहर पयर पकड़हि पड़त ! केहन निट्ठुर छें ? चल गाम पर, कहबें तँ पयरो जाँति देबौ।'

आ बढ़ि कऽ ओकर हाथ पकड़ि लेलकैक। मनतोड़ियाकेँ छीतनक बात पर हँसी लागि गेलैक। छीतन जखन ओकरा घीचि कऽ लऽ चलऽ लगलैक तँ ओ कोनो प्रतिरोध नहि कऽ छीतनक संग चलि देलक।

ओहिठाम ठाढ़ लोक एक्के बेर खूब जोरसँ पिहकारी देलक आ देखलक जे ओ दूनू बेकती हत्थाजोड़ी कयने चल जा रहल छल। आ आगाँसँ चल अबैत एकटा खाली रिक्सा पर पहिने मनतोड़िया आ तखन छीतन बैसि गेल।

□

बसातक दाम

⊕

साँझके जखन टहलि कऽ अबैत छलहुँ अथवा खा-पी कऽ सूतऽ जाइत छलहुँ तँ ओ चुपचाप अबैत छल। अपन काज सम्पन्न कऽ चल जाइत छल। जे पाइ हाथमे दऽ दैत छलिऐक, चुप्पे लऽ लैत छल। कहियो ओहि लय बाजल नहि, दोहसौलक नहि, प्रतिवाद नहि कयलक।

होटलमे दुइये-तीन दिन रहला भेल छल कि एकाएक साँझमे सरबन आबि कऽ आगाँमे ठाढ़ भऽ गेल। ओहि स्थानसँ, स्थानक लोकसँ, नगरक वातावरणसँ छलहुँ एकदम अपरिचित। तेँ एहि अपरिचित व्यक्तिकेँ देखि अत्यन्त आशंकित भऽ उठलहुँ— के थिक? किएक आयल अछि? कोनो चोर-उचक्का तँ ने थिक?

हम ओकरा परखैत पुछलिऐक — के छह तोँ हौ? की काज छह? हम तँ तोरा चिन्हैत नहि छियह, ने ककरो हम बजौलिऐक अछि।'

मोनमे भेल जे होटलक कोनो नोकर होयत जे प्रायः नवे आयल होयत। ने तँ हमरा अयला पर छुट्टीसँ घूमि कऽ आयल होयत। होटलक आर नोकर सभकेँ चीन्हि गेल छलिऐक। चीन्हि की जयबैक? वस्तुतः होटलेवला सभ नोकरकेँ बजा कऽ देखा देने छल आ सभकेँ कहि देने छलैक — हे, कालेजक प्रोफेसर साहेब छथिन। तीन नम्बर कोठली, तेमहला पर रहथिन। जखन जे कहथुन से काज कऽ दिहनु। कोनो तकलीफ ने होइनि।'

ओहि नोकर सभमे एकरा देखने नहि छलिऐक।

ओ आर लग आबि बाजल — बाबू! हमर नाम सरबन। देह दबाय दिहौँ की? कुछो पैसा दय दिहौँ।'

—ई कोन बलाय आबि गेल।' मोनमे सोचलहुँ। फेर होटल-मालिकके सोर कयलिऐक। होटल-मालिक आयल तँ सरबन दिस देखा कऽ पुछलिऐक —ई महानुभाव के थिकाह ? कोमहर अयलाह अछि ? केहन लोक छथि ?'

होटल-मालिक हँसैत बाजल — सर ! शंकाक कोनो बात नहि। एकर नाम थिकैक सरबन। पहिने पानि भरबाक काज करैत छल। वयस आ समाङसँ असक भेलासँ आब सकैत नहि अछि। दोसर, शहरमे पानिक टंकी भऽ गेलासँ काजो कम भऽ गेलैक। दुमंजिला-तेमंजिला पर टंकीक पानि नहि चढ़ैत छैक। ओही ठाम भारसँ पानि पहुँचयबाक काज होइत छैक से एतेक ऊँच सीढ़ीपर चढ़ब-उतरब एकरा पार नहि लगैत छैक। दू-चारि भार पानि उघलक की हकमि जाइत अछि। की करौ बेचारा ! तेँ लोकक देह जाँति कऽ गुजर चलबैत अछि। स्वभाव नीक छैक। सुन्नो घरमे आओत तँ किछु छुअत नहि। ने तँ, हम अपन होटलमे टपऽ दितिऐक ?'

हम आश्वस्त भेलहुँ आ क्रमहि सरबन पर एकटा विश्वास जमि गेल। ओ प्राय: दोसरे-तेसरे आबि कऽ जाँति जाय। पाछाँ तँ ओकर आयब आ जाँतब हमरा लेल अनिवार्यता भऽ गेल। किन्तु, जहिया थाकल नहिञो रही, मोन-नहि रहय तैयो ओकरा जँतबासँ मना नहि करिऐक। यदि किछु पाइ ओकरा भेटि जाइत छैक तँ ओ हमरा लेल भार नहि होइत अछि। यैह सोचि कऽ ओकरा कार्यक्रममे बाधा नहि देलिऐक कहियो। जँ कहियो मित्रलोकनि उपस्थित रहैत छलाह तँ ओ बाहरमे बैसि रहय आ हुनका सभक जयबाक प्रतीक्षा करैत रहय। जखन ओ सभ चल जाथि तखन ओ जाँतऽ चल आबय।

कहियो काल बजारोक काज अढ़ा दिऐक। से ओ कऽ देल करय। पाइ-पाइक हिसाब दऽ देअय आ हम दू-चारि आना दऽ देल करिऐक।

ई गप्प आइसँ दस-बारह वर्ष पूर्वक थिकैक। नबे-नबे दुमका कालेजमे प्राध्यापक बनल छलहुँ। शहर छोट। आबादी बढ़ल जाइत छलैक तेँ आवासक असुविधा बेसी। सहजेँ डेरा भेटऽवला नहि। कतहु ठौर नहि भेटल तँ एकटा होटलमे डेरा लेलहुँ। होटलोमे संयोगेसँ स्थान भेटि गेल। होटल-मालिक एजेंट सभकेँ बेसी पसिन्न करैत छल। स्थायी रूपेँ रहनिहारकेँ बेसीकाल अस्वीकारे कऽ दैत छलैक। किन्तु, कालेजक प्राध्यापकक प्रति होटलवलाकेँ श्रद्धाभाव, तेँ हमरा एकटा कोठली भेटि गेल। आँकड़वला भात, पनिगर दालि आ कचकच रोटी भेटैत छल, मुदा से भेटि जाइत छल। वस्तुतः दुमकामे ओहि समयमे होटलो बेसी नहि छलैक।

मइ मास छलैक। विश्वविद्यालयक परीक्षा सभ भऽ रहल छलैक। परीक्षा साढ़े छौ बजेसँ डेढ़ बजे धरि होइत छलैक। गार्डिङ्केर कड़ा ड्यूटी। दुमकाक ओहि पथराह धीपल सड़ककेँ नापि कऽ बासा अबैत छलहुँ तँ मोन-देह असोथकित भऽ जाइत छल। कालेज नगरसँ दू-अढ़ाइ मील दूर उत्तरमे छलैक। आबा-जाहीक कोनो साधन नहि। जयबाकालमे रिक्सा भेटियो जाइत छल किन्तु अयबाकाल पदयात्रा छोड़ि आन कोनो उपाय नहि। साइकिल रखने छलहुँ, किन्तु ओहि पहाड़ी शहरमे चढ़बासँ बेसी गुड़काबहि पड़ैत छल। खास कऽ कालेजक बाटमे पड़ैत छलैक शिवपहाड़। ओहि पर चढ़ाइमे साइकिल गुड़काकऽ आनऽ पड़ैत छल। मइ मासक गर्मीमे ई दुर्वह भऽ जाइत छल। साइकिल रहने हाथ बाझल रहैत छल, से नहि रहने कमसँ कम छत्ता तानि कऽ रौदमँ माथ तँ बचबैत छलहुँ।

वर्षा भेले ने छलैक तेँ गर्मी बड़ बढ़ि गेल छलैक। एहि ठामक विशेषता छलैक जे राति तँ कनेक शीतल रहितो छलैक किन्तु दिनमे जहिना-जहिना चारू कातक पहाड़ी सभ गरम होइत जाइत छलैक, तहिना-तहिना वातावरणमे उष्णता बढ़ैत जाइत छलैक। दस-एगारह बजैत-बजैत लगैत छलैक जेना आगिक भट्ठी पजरि गेल हो। बसातो जँ बहैत छलैक तँ ओहिसँ धाहे लगैत छलैक।

ओहि दिन गर्मी लगैत छल जेना चरम विन्दु पर चल गेल होइक। परीक्षा समाप्त भेल। कापी सभ जमा कयलहुँ आ बरामदापर आबि कऽ ठाढ़ भऽ गेलहुँ। आरो सहकर्मी सभ आबि-आबि कऽ ठाढ़ भऽ गेलाह। छात्रो सभ छाहरि ताकि-ताकि कऽ ठाढ़ छल।

कालेजक उतरबारी ओ पुबारी दिसक खल्वाट पहाड़ी सभ कम्पायमान लगैत छल। बूझि पड़ैत छल जेना धधरा ऊठि रहल होइक। हरिजन होस्टलक सुपरिंटेंडेंट प्रोफेसर वंशीबाबू बजलाह— एना थहाथही भेल किएक छी? चलू, सभ गोटा होस्टलमे आराम करू। भोजनक आग्रह नहि होयत, खाली छाहरिमे विश्रामक नोत। ठंढा जलसँ स्वागत करब।'

जहियासँ गर्मी धबलैक आ परीक्षा चललैक, प्रायः सभ दिन वंशीबाबू चलबाकाल ई वाक्य दोहरा दैत छलथिन। आन दिन एहि पर वेश हास-परिहास चलैक किन्तु आइ सभ निःस्तब्ध छल। एक मोन होइक जे प्रस्ताव स्वीकार कैये लेल जाय।

विद्यापति बाबू बजलाह—औ महराज! आजुक बाद ने कालेज शहर दिस चल जायत आ ने शहरे कालेज लग आओत। ने परीक्षा टरतैक ने भुवन भास्कर

महोदय कनेको ठंढयताह। सभ दिन तँ वैह रामा वैह खटोलबा, तखन ई थतमती किएक? चलै चलू साहस कऽ कऽ।'

ई कहि ओ छत्ता तानि कऽ विदा भेलाह। हम हुनक पाछाँ चललहुँ आ ताहि पाछाँ आरो-आरो बन्धु सभ साहस बटोरि कऽ विदा भेलाह।

होटलमे अयलहुँ तँ सौंसे देह घामे-पसेने भीजि गेल छल। कपड़ा-लत्ता बोदर-बोदर भऽ गेल छल। आँखि कड़ुआ रहल छल। मोन होइत छल, खूब शीतल जलसँ भरि पोख स्नान करितहुँ। मुदा, एहि अग्निकालमे पीबाक लेल जल भेटि जाय सैह बहुत। टंकी पाँचसँ एमहर फूजऽबला नहि। इनारोसँ पानि भरि क्यौ अननिहार नहि। जँ अनलक तँ आठ-आठ आने भार।

पंखा खोलि देलिऐक। कपड़ा बदललहुँ आ चौकी पर पड़ि रहलहुं। थोड़ेक कालमे होटलक नोकर आयल—सर! खाना।'

खयबाक मोन नहि छल। तथापि मोन मारि कऽ खाय लगलहुँ—आँकड़-वला सर्द भात, सेरायल पनिगर दालि, हरदियाइन तरकारी। कोनहुना कंठक नीचाँ ससारल।

बाहरसँ गरम बसात ने आबि जाय तेँ खिड़की लगा देलिऐक। केबाड़ ओठङा देलिऐक। बाल्टीक पानि सौंसे घरमे पटा देलिऐक। पंखाकेँ फुल स्पीड पर धऽ देलिऐक। वातावरण कनेक शीतल भेलैक।

ओछाओन पर पड़लहुँ आ एखबार देखऽ लगलहुँ। मोन ततेक थाकि गेल छल, देह ततेक शिथिल भऽ गेल छल जे पढ़िते-पढ़िते आँखि लागि गेल। सहसा बूझि पड़ल जे केवाड़ फूजल आ क्यौ भीतर प्रवेश कयलक। अकचका कऽ औंघायल आँखि फूजल तँ देखै छी, सरबन आबि कऽ ठाढ़ अछि। मैल-चिक्कट हाफ पैंट, मैले डोरिया हाफ कमीज। कोनो पैघ देहक कमीज छलैक से ओकरा देह पर पहिरल सन नहि, लटकैत-झूलैत जकाँ लगैत छलैक। डाँड़मे ओहने मैल गमछा लपेटल। तिलकल केश, झोखड़ल मुँह, डाँड़ कनेक झुकल। रौदसँ आयल छल से झमारल जकाँ लगैत छल। पसेनासँ तर-बतर भेल सौंसे देह। एहि समयमे ओकर आयब सोहायल नहि। विश्रामक एहि पहरमे बाधा दऽ कऽ मोनकेँ ओ खौंझा देलक। मोनमे भेल जे जोरसँ डाँटि दिऐक। वास्तवमे ई ढीठ भऽ गेल अछि। किन्तु, अपनाकेँ संयत राखि ओकरा दिस जिज्ञासासँ तकलिऐक — की छैक? कोमहर अयलह एहि कुबेरमे?

हम किछु पुछितिऐक ताहिसँ पहिने ओ हमर गोड़थारीमे जा कऽ पयर जाँतऽ लागल। थकनी ततेक छल जे ओकर जाँतब नीके लागल। किछुए छन पहिलुक खौंझाहटि उतरि गेल। हमहूँ पयर तानि देह ओरि देलिऐक।

ओ जँतैत रहल। सौंसे देह जँतैत रहल। हमरा निन्न भऽ गेल। कखन धरि सरबन जँतैत रहल से ध्याने ने रहल। ओकर अभ्यास छलैक — जाबत मना नहि करितिऐक ताबत ओ जाँनब छोड़ैत नहि।

बेर ढरि गेलैक। चारि-साढ़े चारिमे निन्न टूटल। सरबन जँतिते छल। कतेक काल धरि जँतलक? थाकियो गेल होयत। मोनमे कचोट भेल। पहिने निन्न किएक ने टूटल जे मना कऽ दितिऐक! हम कहलिऐक— हौ! तों तखनसँ जँतिते छलह? छोड़ि दितहक। आब छोड़ह।'

हम ऊठि कऽ बैसि रहलहुँ। मोनमे छन भरिक लेल भेल जे प्राय: अपन मेहनताना लेबाक लेल अँटकल रहल। फेर आबि कऽ लऽ जाइत से धैर्य नहि रहलैक प्राय:। मुदा हमरा जगायब उचित नहिं बूझि जँतैत रहल, से सोचि ओकर विवेक बुद्धिक प्रति एकटा क्षणिक प्रशंसा भात्र मोनमे चल आयल।

हमर कथनपर ओ बाजल—आज बड़ी थाकल छलहौं की?'

हम ओकर बात पर बिना कान देनहि खुट्टीमे टाङल कुर्त्ताक जेबीमे हाथ देलहुँ। सरबन डाँड़मे बान्हल गमछा खोलि कऽ घाम पोछऽ लागल।

जेबीसँ पाइ बहार करबामे तारतम्य मोनमे होमऽ लागल, कतेक पाइ दियौक एकरा? दू आना? चारि आना? आठ आना? निश्चय नहि भऽ पबैत छल। एतेक काल जँतलक। एतेक परिश्रम कयलक अछि। सिद्धान्त-वादी होयबाक कारणे ततमतक भाव आर बढ़ि गेल। कम पाइ देबामे संकोच भेल—मोन छोट भऽ जयतैक। फेर मोनमे भेल जे एना सभ दिन आबि-आबि जँतैत रहय आ एकरा दैत रहिऐक से तँ अपव्यये होयत। देह जँतायब कोनो आवश्यकता नहि थिकैक। बड़ नीक, कोनो दिन थाकनि-ठेही हेठ करबाक लेल जँता ली तँ नहि कोनो बात। अन्तत: निश्चय कयलहुँ जे आठ आना दिऐक। एतेक पाइ ओकरा कहियो देनहु ने छलिऐक तें आँखियो लागल। मुदा मोनमे भेल जे अठन्नी देखि कऽ सरबनमा धरि होयत खूब प्रसन्न। जाबत हम जेबीसँ पाइ बहार करैत रहलहुँ ताबत ओ ठाढ़े रहल जेना सुस्ताइत घाम सुखबैत हो। पाइ लितय तखन ने जैतय!

हम अठन्नी ओकरा दिस बढ़बैत कहलिऐक— लयह।'

सरबन पाइ तँ नहि लेलक, खाली दाँत खिसोड़ि कऽ केबाड़ लग चल गेल। हम फेर कहलिऐक— लयह ने !'

सरबन दाँत खिसोड़नहि बाजल — मालिक ! आज ऊ पैसा हम्मे नञ लेभौं। आज छोड़ी दहीं।'

हमरा ओकर व्यवहारपर आश्चर्य भेल। आइसँ पूर्व धरि जे पाइ दैत छलिऐक से लऽ लैत छल। कहियो बजैत नहि छल। आइ तँ आन दिनुक अपेक्षा सभसँ बेसी पाइ देने छलिऐक। आब आर कतेक पाइ दियौक ? मोनमे तामस उठल— कोन ई मालिश-विशेषज्ञ अछि जे पुष्ट कऽ पाइ चाहिऐक ! गहूमक चिक्कस जेना सानैत छै तहिना तँ ई जँतैत अछि। सहायतेक दृष्टिञो तँ एकरा आइ धरि दैत रहलिऐक अछि। तखन ई टेढ़ी ! आब हिनका पुष्ट कऽ चाहियनि ! बाज अयलहुँ एहन जतानसँ ! हम जोरसँ बाजऽ लेल छलहुँ मुदा ओकर निरीह मुँह देखि बाजि नहि सकलहुँ। तथापि कनेक रुच्छ स्वरमे कहलिऐक — किए ? की बात छै ? कम लगै छह की ? आइ सभ दिनसँ बेसिए पाइ देलियह अछि।'

—से बात नै छै मालिक ! हमे आज नञ लेभौं पैसा।'

—से किएक ?'

—मालिक, आज गरमी कइसन छै ? दुपहरमे कहीं छाँहमे बैसइ खातिर जगह नञ भेटै छलै। गाछ-बिरिछमे पातोने डोलै छै। मोन बड़ा व्याकुल हो गेलै। तबे मोन पड़लै जे मालिक के कोठली खुललऽ रहै छै, से हम्मे तोरऽ कोठलीमे आबी पंखाक बसातमे भरि दुपरिया आराम करैत रहलियौं। हम्मे पैसा कइसन लेभौं ?' फेर गमछा माथमे बन्हैत बाजल— अच्छा मालिक ! आब ठंढ़ा होलऽ छै, हम्मे जाइ छियौ।'

सरबन चल गेल। हमर तामस आ अहंकारक पहाड़ हड़हड़ा कऽ ढहि गेल। सरबनक स्वाभिमान-शिखर उच्चसँ उच्चतर होइत बूझि पड़ल। वस्तुतः वस्त्रक हीनता, कृशकाया, परिस्थितिक विवशता देखि कोनो व्यक्तिक स्वाभिमानकेँ हीन मानब भ्रम थिक। सरबनक व्यवहारसँ हम तिलमिला गेलहुँ। लागल जेना हमर सम्भ्रान्तिक गाल पर कसि कऽ एक चाट लगा गेल। तँ ई बिजलीक पंखाक बसातमे आराम करऽ आयल छल ! दुपहरक गर्मी बिताबऽ आयल छल ! परिश्रम तँ करिते रहल तँ आराम की भेलैक ? घाम-पसेनासँ भीजल रहल तँ बसातक लाभ की भेलैक ? एखन धरि हाथमे पड़ल अठन्नी दिस ध्यान गेल। हमरा दिससँ यैह ओकर परिश्रमक दाम छलैक। आ से अठन्नी छोड़ि कऽ सरबन हमर पंखाक बसातक दाम देने गेल ! □

उद्घाटन

⊕

चाह-पानक दोकानपर, होटल सभमे, पोखरिक मोहार परक धर्मशालामे, चट्टीपर, मने जतऽ कतहु कोनो बैसाड़ वा चौखड़ी छलैक; सभ ठाम एके बातक चर्चा पसरल। गप्प-सप्प, वाद-विवाद आ उतरा-चौरीक एके विषय छल--- उदयाचल उच्चविद्यालयक उद्घाटन। के करत उद्घाटन? ककरा कर-कमलसँ एहि स्कूलक शुभारम्भ कयल जायत? रंग-विरंगक अनुमान भिड़ाओल जा रहल छल आ प्रत्येक अनुमान पर गरमा-गरम बहस लधि जाइत छल। वाद-विवाद बढ़ैत-बढ़ैत उकटा-पैंचीपर चल अबैत छल।

क्षेत्रक उत्साही कार्यकर्त्ता, युवक, छात्र, सभ वर्गक लोक रंग-विरंगक कागतक पताकासँ बाटक दूनू कात सजा रहल छल। किछु गोटे अशोकक हरियर पातवला डारिसँ मेहराब बनयबामे संलग्न छल। आइये एहि स्कूलक उद्घाटन जे होमऽवला छलैक!

ई स्कूल बहुत दिनसँ स्वप्नलोकमे पड़ल छल। क्यौ एकरा वास्तविक धरातल पर अनबाक साहस वा दुस्साहस नहि कयने छल। क्यौ करबो कोना करैत? एकटा जनहितकर काज करऽ लय क्यौ आगाँ अबैत अछि तँ एक सय व्यक्ति बाधा बनि कऽ ठाढ़ भऽ जाइत छैक। अनावश्यक विरोध, प्रतिरोध, आलोचना, अयश, चरित्र-हननसँ नीक लोकक डेरायब स्वाभाविके।

किन्तु सामान्य लोक अनुभव करैत छल जे रेलबीसँ पूब एहि विशाल आबादीवला क्षेत्रमे एकटा स्कूल होयब आवश्यक। कारण शहर घनगर भेल गेलैक। जेना भरल बासनमे सँ पानि छिलकऽ लगैत छैक तहिना जखन शहरी

भागमे अँटावेश नहि भऽ सकलैक तँ लोक रेलवे लाइनक पुबारीपारक देहाती भागमे बसऽ लागल ।

उतरे-दछिने रेलवे लाइन जाइत छैक । मुख्य शहर पच्छिम पार बसल छैक । कोट-कचहरी, जेल, अस्पताल, बैंक, अन्य सरकारी आफिस, बजार इत्यादि ओही पार । एहि पार तँ गाम सभ बसल छलैक । अगिला-पछिला सभ वर्गक लोक । जीविकाक नाम पर किछु खेती, बाजारमे दोकानदारी, मजदूरी, आफिसमे चपरासी वा किरानीक काज । लगमे स्टेशन तेँ बहुत लोक ओकरे जीविकाक आधार बना लेने । मालगोदाममे गहूम, सिमटी, स्टोनचिप्स, लोहाक छड़, लकड़ी, बालु, चून, पानिक पाइप—किछुओ उतरलैक कि क्रृष्ण-व्यवसायमे तेजी आबि जाइत छलैक । एकर असरि पड़ैत रहलैक छोट-छोट बच्चा सभपर । स्कूल आदिक सुविधाक अभावमे ई सभ नमहर भऽ कऽ गुण्डा-लफन्दर बनि शहरक अशान्तिक कारण बनैत छल ।

एही क्रममे एहि पार सरकार द्वारा लोकक उपजाउ जमीन जे जीविकाक बचल साधन छलैक, से सागक मोल दखल कऽ कऽ बिजली, ब्लौक, सिचाइ आदिक आफिस बनाओल जाइत रहल । ओहिमे काज कयनिहार बाबू, ठिकेदार, व्यवसायी, ओकील, डाक्टर एहि क्षेत्रक अर्धविपन्न ओ बेगरतित लोकक भूमि कीनि-कीनि मकान ठाढ़ करऽ लागल—अपन रहबाक लेल, किराया लगयबाक लेल, क्लिनिक आ गोदाम बनयबाक लेल जमीन कीनऽ लागल ।

ई सभ पतनक गतिकेँ आरो तेज कऽ देलकैक । नव आ पुरान वासीक बीच नित्य दिनुक संघर्ष, मारि, गारि, दंगा-फसादि, झगड़ा-झाँटी बढ़ऽ लगलैक । कोनो डेराक नोकर गाछी वा बँसबाड़िमे दतमनि तोड़लक तँ गामवला ओकरा पकड़ि कऽ बान्हि देलकैक । कोनो डेरामे नेबो, लताम वा फूले तोड़ऽ कोनो गमै छौंड़ा चल गेल तँ नवीन वासी ओकरा पकड़ि कऽ पीटि देलनि वा चोरीक इल्जाममे हाजति पठा देलथिन । ककरो गाय वा बड़द संजोगसँ फूजि कऽ कोनो डेराक बाबूक फूल खा गेलनि तँ ओकरा पकड़वा कऽ फाटक पठबा देलथिन् ।

नगरपालिकासँ बाहर रहने एमहर तीन-चारि टा ग्राम-पंचायत सेहो छलैक । किन्तु मुखिया-सरपंच लोकनि अपन-अपन तिकड़ममे व्यस्त । ठिकेदारी लेल फिरीसान । रिलीफ आ तकाबीकेँ आमदनीमे बदलबाक जोगाड़मे आफिसक बो०डी०ओ०, ओभरसीयर ओ किरानी बाबू लोकनिक खुशामदिमे, डाली पहुँचयबामे आ कमीशनक हिसाब जोड़बामे बाझल । तखन नीक काज करत के ? पलखति ककरा ?

श्रीचन्द्रबाबू एकटा भद्रलोक। एहिठाम ओकील छथि। सार्वजनिक काजमे रुचि रखैत छथि। युवा लोक छथि तेँ अपरिमित उत्साहसँ भरल। घरक सुभ्यस्त नहियो रहने परवाहि कम। रेलवीक पुवारी भागमे भूमि कीनि हालेमे मकान बनौलनि अछि। स्थानीय लोक-समाजसँ आत्मीय सम्बन्ध बनयबाक इच्छुक। दसगर्दा काजमे सतत आगाँ रहबाक कारणेँ दसलोक चीन्हऽ लगलनि अछि। से ओहि दिन चाह पिबैत काल गप्प-सप्पक क्रममे स्कूलक चर्चा उठि गेल। श्रीचन्द्रबाबू कहलथिन जे—एहिठामक किछुओ लोकक सहयोग भेटय तँ स्कूल खोलब कोन कठिन काज छैक ?'

प्रोफेसर परमानन्द बजलाह— सर ! हम अहाँक संग छी। जेना जे कहब, हम प्रस्तुत रहब।'

—एवमस्तु।'

आ स्कूलक स्थापनाक कार्यारम्भ भऽ गेल।

राताराती ई खबरि इलाकामे पसरि गेल। इलाकाक विधाता लोकनिक, नेता आ अग्रेसर लोकनिक कान ठाढ़ भेलनि। ककरासँ पूछि कऽ ई स्कूल ठाढ़ भऽ रहल अछि ? ककरा नाम पर फुजतैक ? के टाका देतैक ? कोन स्थान पर फुजतैक ? के सेक्रेटरी होयत ? के प्रेसिडेंट होयत ? ककरा सभक बहाली होयतैक ? गाही-गंडा सबाल पूछल जाय लगलैक। सुनैत-सुनैत श्रीचन्द्रबाबू आ प्रोफेसर साहेबक कान पाकऽ लगलनि।

हारि-दारि कऽ इलाकाक लोकक बैसक बजौलनि। बैसक की भेल, एकटा हंगामा ठाढ़ भऽ गेल। रेका-तोकीसँ वातावरण भरि गेल। एक-एक कऽ लोक सहटऽ लागल। बैसक अनिर्णयमे खतम भऽ गेल। ओहिठाम बैसल रहि गेलाह दुइ गोटे—श्रीचन्द्रबाबू आ परमानन्दजी।

बाहर वातावरणमे आशंका आ अविश्वास, आक्रोश ओ आक्षेप, आलोचना ओ अवरोध भरल जाय लागल। भाँति-भाँतिक काकु, कटूक्ति व्यंग्यवाण चलऽ लागल।

—हँ, स्कूलक नामपर जेबी खूब गरम हेतै। आमदनीक बेजाय सोर्स नहि !'

—अगुआ सभ अपन-अपन समाङकेँ मास्टर-किरानीमे बहाल करत। रोजी-रोटी चलि जेतै।'

—बाहरी आदमी एतऽ स्कूल खोलत से बिना लोभे ?'

एकटा खद्धड़धारी नेता-टाइप लोक भफाइत चाहक चुस्की लैत गम्भीर स्वरमे बजलाह —— एकर रहस्य तँ हमहीं बुझै छिऐ ।'

लग-पासक लोक सकांच भऽ उठल। सभक मुँहसँ बहरयलैक— की रहस्य छै ?'

——अहाँ सभ की बुझबै ? अरे ! ई अगिला एलेक्सनक तैयारी थिकै। कंटेस्ट करताह ई ओकील साहेब ओ प्रोफेसर साहेब।

——कोन एलेक्शन ?' कय गोटेक मुँहसँ बहरायल।

——कोनो एलेक्शन।' एकटा प्रौढ़ ठिकेदार सन व्यक्ति बाजल —— ग्राम-पंचायतसँ लऽ असेम्बली पार्लियामेंट धरिक भऽ सकै छै। पहिने ग्राउण्ड तँ बनय। फिल्ड तँ तैयार होअय।'

एकटा उजड्ड सन लोक टेबुल पर मुक्का मारलक। चाहक खाली गिलास खनखना उठलैक। एकटा गिलासक पानि छिलकि कऽ खसि पड़लैक। ओ तार स्वरमे बाजऽ लागल —— पंचायतक मुखिया-सरपंच बनताह ? बहरिया लोकक ई साहस ? हमरा इलाकामे बहरिया लोक हुकुम चलाओत ?'

नेताजी बजलाह —— ओहो सम्भव छै, किन्तु एतेक हल्लुक नहि बुझियौ ! हमर विश्वास अछि जे ई एमेलेक टिकटक जोगाड़ छिऐ।'

——हँ, से लच्छन लगै छै। ओकिल साहेब इलाकाक एकटा प्रोफेसरकेँ मुड़िये लेने अछि। किछु औरो लोक भैये जेतै, बस पौ-बारह।' कोनमे बैसल एकटा अधवयसू लोक बिस्कुट खाइत बाजल आ चारू कात अपन बातक असरि देखऽ लागल।

लोक स्तब्ध रहि गेल। एतेक दूरसँ शतरंजक गोटी चलैत छथि श्रीचन्द्र बाबू से स्पष्ट भऽ गेल।

नेताजी चाहक कप समाप्त करैत बजलाह——हँ यौ ! स्कूलक नाममे कोनो मिनिस्टरक नाम जोड़ल जेतै। कोनो नेता उद्घाटन करथिन। पैरबी-पयगाम हेतै आ गोटी लाल। प्रैक्टिसो चमकतनि।'

लोकक खून गरम भऽ गेलैक। क्यौ बाजल —— इलाकाक लोककेँ एतेक बूड़ि किएक बुझैत छथिन ई सभ ? एक तँ हमरा सभक अछैत स्कूल फूजि नहि सकै छै। फुजतै तँ चन्दा नहि होमऽ देबै। विद्यार्थी नहि जुटऽ देबै। आ अन्तमे नहि किछु हेतै तँ आगि लगा देबै--- सम्मताय स्वाहा ! जो त्तोरी कै !'

लगेमे मास्टर साहेब शिवनाथझा ठाढ़ भेल सभ किछु सुनैत छलाह। बजारसँ तरकारी लऽ कऽ घुरल छलाह, स्कूलक गप्प सूनि कऽ ठाढ़ भऽ गेल छलाह। नेताजीक दृष्टि गेलनि हुनका पर--- की शिवनाथ बाबू ! स्कूलक सम्बन्धमे की विचार ?'

शिवनाथ मास्टर जबाब देलथिन---बड़ उत्तम विचार। एतेटा इलाकामे एकटा स्कूल नहि ! शहरक स्कूल सभ तँ आफिसरान आ बाबू-बबुआनक धीया-पुतासँ भरल रहै छै। गरीबक बेटाक गुजर कतऽ ? देखै छिऐ, एहि पारक गाम-घरक बच्चा सभ बहेड़ भेल जाइ छै। स्कूल भेलासँ इलाका सुधरि जेतै।'

नेताजी कठहँसी हँसलाह---हँ, हमरो बड़ खुशी भेल। हम तँ श्रीचन्द्रजीकेँ कहलियनि जे स्कूल खूजय से नीक मुदा हेडमास्टर शिवनाथे बाबूकेँ रखियनि। इलाकाक छथि। अनुभवी छथि।'

शिवनाथ मास्टर बात कटैत कहलथिन---नहि, आब तँ नियमतः हम हेडमास्टर नहि भऽ सकै छी। हमरा तँ रिटायरो भेला सात-आठ बरख भेल। हम आब नोकरी की करब ? तखन जे सहयोग सम्भव हेतै से करबै। अवैतनिक पढ़ाइओ सकै छिऐ।'

शिवनाथ मास्टर भेलाह बूढ़। बयस सत्तरि-बहत्तरि लग। सऽन सन केश, मुह-देहक चमड़ी झोखड़ल। ठेहुन धरि धोती, पयरमे टायरक चट्टी, बेमाय फाटल एँड़ी। डाँड़ कनेक झुकल। कान्ह पर चद्दरि, हाथमे छड़ी---यैह छलनि हुनक रूप-रेखा। मुदा, इलाकाक जे क्यौ किछु पढ़ने-लिखने, से हिनक विद्यार्थी रहले छल। तेँ आदरणीय पात्र। नेताजी स्कूलक विरुद्ध एहि मोहड़ाक उपयोग करऽ चाहलनि किन्तु से पहिले चालि उफाँटि पड़ि गेलनि।

ई सभ तँ चलिते रहलैक मुदा स्कूलोक गतिविधिमे शिथिलता नहि अयलैक। श्रीचन्द्रबाबू परिस्थितिक अन्दाज कऽ लेलनि तेँ चन्दाक कोनो अभियान नहि कयलनि। खाली, लोक सभसँ सहयोगक आश्वासन लैत गेलाह। एकटा पुरान खाली मकान भाड़ा पर लैल गेल। किछु अपेक्षित लोकसँ टूटल पुरान कुर्सी, टेबुल, चौकी आदि मङनी कयल गेल। ओकर मरम्मति करा कऽ स्कूलक उपस्कर जुटाओल गेल आ स्कूलक ठट्ठर ठाढ़ भऽ गेल। नामकरणो अनायासे भऽ गेलैक। परमानन्दजी कहलथिन---एकटा नवीन संस्थाक उदय भेल।'

बस, श्रीचन्द्रबाबू लोकलनि––तखन एकर नाम भेल उदयाचल उच्च-विद्यालय। आ एही नामसँ स्कूलक बोर्ड टङा गेल।

एतेक विघ्न-बाधाक अछैतो काज ततबा आगाँ बढ़ि गेलैक जे आइ ओकर उद्घाटन समारोह सेहो होबऽ जा रहल छलैक। उद्घाटनक नोटिस बहाराइत देरी फेर बिरड़ो उठि गेलैक। के उद्घाटन करत? कोनो मुखिया, कोनो नेता, कोनो आफीसर, कलक्टर, मिनिस्टर वा के? ई एकटा पैघ रहस्य आ सर्वत्र चर्चा-उत्सुकताक विषय बनि गेल।

नेताजी फेर प्रकट भेलाह। उद्घाटनक अवसर पर की सभ रमन-चमन होयत, तकर योजना बनऽ लागल। बुद्धिक हारल व्यक्ति बलसँ हरयबाक चेष्टा करैत अछि। हारल जुआड़ी गारि पढ़ऽ लगैछ। नेताजी आ ओहि इलाकाक समस्त बगुला पंखी लोक सभक अहंकार पर उदयाचल विद्यालय कसिकऽ चोट कयलक। तेँ एहन लोक सभ एक दिस भऽ गेल। तेँ बाधा-योजनामे सभक सक्रिय वा मौन सहमति छलैक जे––नारेबाजी होअय, कारी झंडा देखाओल जाय, मिटिंगमे हो-हल्ला कयल जाय आ जँ कोनो रोक-छेक हो तँ रोड़ाक सेहो इन्तिजाम रहय। आगि लगयबाक लेल मटिया तेलमे भिजाओल लत्ताक गोला सभक इन्तिजाम रहय।

सभ इन्तिजामो भऽ गेल छलैक।

श्रीचन्द्रबाबू ओ प्रोफेसर साहेब परसूएसँ उद्घाटनक इन्तिजाममे लागल छलाह। इलाकाक एक-एक व्यक्तिकेँ एहि अवसर पर उपस्थित होयबाक लेल आमन्त्रित कऽ रहल छलाह। भेट कऽ कऽ आग्रह करैत छलथिन। शिवनाथो मास्टरसँ भेंट भेलनि तँ कहलथिन – मास्टर साहेब! अपने अयबै ने!'

––अवश्य, अवश्य।' शिवनाथ कहने छलथिन।

बेरुक पहर होइत-होइत सभास्थली हजारो लोकसँ भरि गेल। नगर भरिक वकील, डाक्टर, व्यवसायी, नेता, कार्यकर्त्ता, आफीसर आबि-आबि कऽ बैसि गेलाह। पाँछा, दू-तीन एम०एल०ए० ओ एम०पी०क संग मिनिस्टर साहेब सेहो अयलाह। लोक हड़बड़ा कऽ उठल –– संभव एही सभमेसँ क्यौ उद्घाटक होथि। वस्तुतः राजनीति सामाजिक जीवन पर तेना सवारी कसि देने छैक जे कोनो समारोह, संस्था, समिति राजनीतिक नेता वा मन्त्रीक विना होयबाक कल्पनो ने कयल जा सकैछ। जेना राजनीति भऽ गेल तुलसीदल। से

मिनिस्टरकें देखि लोकक ई अनुमान स्वाभाविक छल जे कहीं यैह मिनिस्टर ने उद्घाटन करथि। हुनका सभक स्वागतमे स्वभावक अनुसार लोक हड़बड़ाकऽ उठल आ फेर बैसि रहल।

कनफुसकी बढ़ल जाइत छलैक -- के करतै उद्घाटन? जखन कोनो व्यक्ति प्रभावशाली व्यक्तित्वक संग पंडालमे प्रवेश करैत छल तँ लोकक आँखि ओहीं दिस उठि जाइत छलैक। अन्दाज होबऽ लगैत छलैक जे प्रायः यैह उद्घाटन करताह। एवं क्रमे सौंसे सभामे महत्त्वपूर्ण व्यक्ति सभक समूह देखि अन्ततः कोनो अन्दाज करब कठिन भऽ गेलैक! गुलगाल होइत रहलैक।

श्रीचन्द्रबाबू बाजब आरम्भे कयलनि कि पाछाँसँ एकटा कर्कश ध्वनि आयल— उद्घाटन के करताह? आब देरी किएक?'

एहि संग अनेको कंठसँ आवाज आबऽ लागल। श्रीचन्द्रबाबू पछिला लोककें शान्त करैत दू मिनटमे भाषण सम्पन्न कयलनि आ घोषणा कयलनि जे आब उद्घाटनक विधि होयत। ओ मंचसँ उतरि उद्घाटन कयनिहार महानुभाव दिस विदा भेलाह।

लोकक आँखि सन्दिग्ध, उत्सुक छल -- के छथि ओ महानुभाव जनिक नाम नहि जानल जा सकल! श्रीचन्द्रबाबू महत्त्वपूर्ण व्यक्तिसँ भरल अगिला कतोक पाँती दिस तकबो ने कयलनि। ओ लोकक भीड़कें चीरैत सभसँ पाछाँ चल गेलाह। पाछाँमे बैसबाक स्थानक असौकर्य रहने लोक सभ ठाढ़े छल। ओही ठाढ़ भीड़मे सामियानाक एकटा खाम्ह धयने ठाढ़ छलाह शिवनाथ मास्टर। मुग्ध भावसँ एहि समारोहकें देखैत।'

श्रीचन्द्रबाबू एवं हुनका पाछाँ परमानन्दजी हुनक लग ठाढ़ भऽ गेलाह। कहलथिन -- चलियौ, मास्टर साहेब! उद्घाटन अहीं करबै।'

--हम!' शिवनाथ मास्टर आश्चर्यसँ बजलाह। हुनक आँखि विस्फारित भऽ गेलनि।

आ समस्त सभा सेहो विस्मित-विस्फारित आँखिसँ देखैत रहल जे इलाकाक अत्यन्त साधारण व्यक्तिमेसँ एकटा व्यक्ति किन्तु आदरणीय पात्र शिवनाथ मास्टर उद्घाटन करऽ जा रहल छल। श्रीचन्द्रबाबू, परमानन्दजी आ आन-आन कतोक गण्यमान्य व्यक्ति स्तब्ध भावें पाछाँ-पाछाँ जा रहल छथि।

स्कूलक भवन पसाहनि कयल दुरगमनिञा कनिञा जकाँ लागि रहल छल। चारू कात वन्दनवार लटकल छलैक। मध्यभागमे चारिटा चौकी जोड़ि कऽ मंच बनाओल गेल छल। चारू कोन पर झालरि लागल करड़िक थम्ह चौकीक पौआमे बान्हि कऽ ठाढ़ कयल छल। मंचक पछिला भागमे दानमे प्राप्त पुरना पोथीसँ बनाओल मन्दिरमे सरस्वतीक एकटा फोटो, आगाँमे किछु फूल राखल। एक कात धुपदानीमे जरैत धूप, धूमन आ गुग्गुलक धुआँसँ महमहाइत वातावरण।

मंचक अगिला भागमे पतियानीसँ मंगल कलश, वारि-पूरित मंगल कलश सभ सजाओल छल। कलशक ऊपर आमक पल्लव पर राखल चौमुख दीप। शिवनाथ मास्टरक वृद्ध हाथ जखने एकटा कलशक चौमुख दीपकेँ लेसलक कि सौंसे पंडाल थपड़ीक ध्वनिसँ गुंजायमान भऽ उठल। लोक पुलकित भऽ उठल।

किन्तु ई पुलक कनेके काल रहल। पाछाँ सँ किछु हल्ला भेलैक — आगि ! आगि ! आगि लागि गेलै !' स्कूलक पछिला भागसँ धुआँक गुड़रौट उठि रहल छलैक। स्कूलक कार्यकर्त्ता सभ जेना किंकर्त्तव्यविमूढ़ भऽ गेल। सभामे हड़बिरड़ो मचि गेलैक।

शिवनाथो मास्टर स्तम्भित जकाँ कनेक काल ठाढ़ रहलाह। फेर जोरसँ बजलाह— उदयाचल अस्त हेबा लेल नहि भेलै अछि। अस्त नहि होमऽ देबै।'

आ एकटा कलश उठा कऽ दौड़ि गेलाह आगिक गुड़रौट दिस आ हुनक पाछाँ श्रीचन्द्रबाबू, परमानन्दजी आ अन्य कार्यकर्त्ता सभ सेहो एक-एकटा पानि भरल कलश उठा-उठा कऽ ओही दिस दौड़ि गेलाह।

□

पराजयक मुद्रा

⊕

कतेक दिनसँ मनोहराकेँ मोन होइत छलैक जे एक दिन सिनेमा जा कऽ देखि ली। अपना तँ ओतेक इच्छा नहि होइत छलैक, किन्तु एक बेर बुधियाकेँ अवश्ये देखा देबाक मोन होइत छलैक। बुधियाकेँ शहर अयना तँ आब छौ माससँ ऊपर भऽ गेल छलैक। कय दिन ओ मुँह फोड़ि कऽ सिनेमा देखा देबाक आग्रहो कयने छलैक; कोनो नीक, रमनगर सिनेमा देखा देबाक लेल। मुदा मनोहरा बातकेँ टारि दैत छलैक। होइत छलैक जे एक दिन सिनेमामे दू-चारि टाका खर्च करब से ओहिसँ एक दिनक गुजारा कऽ लेब। आ पलखति कहाँ भेटैत छलैक ओकरा? भरि दिन भरि राति तँ रिक्सा चलबैमे व्यस्त रहैत छल।

व्यस्त कोना ने रहितय? छौ मास पहिने जे कर्ज-बर्ज भऽ गेल छलैक सेहो नीक जकाँ नहि सधि सकलैक। ताहिपरसँ खर्च से बढ़ि गेलैक। पाइ तँ बचिते ने छलैक जे पैंच सधबितय आ ताहिपरसँ सिनेमा देखबाक सामर्थ्य कतऽसँ?

कर्ज-बर्ज होइतैक कोना नै? छौ मास पहिने ओ दुखित कतेक जोर पड़ि गेल छल! ओतेक ठंढा पड़ैत रहैक, ओहीमे ओ रेलबी टीशनसँ सवारी लऽ कऽ जाइत छल कि लगलैक जेना हाथ-पयर सुन्न भेल जा रहल छलैक। सवारी जखन अपन डेरा लग पहुँचल आ कहलकैक जे—रोक दो जी!' तँ ओकरा बुते रोकल नहि भेलैक, ब्रेक लेल नहि भेलैक। ओकर पयर जेना मशीनक पहिया जकाँ घुमिते रहलैक।

सवारी छलैक पति-पत्नी। अपन गामसँ आयल छल, से मारि सामान सभ छलैक लादल। ट्रेनसँ उतरल छल आ मोसाफिरखानासँ बाहर आयल तँ चारू कात सुनसान छलैक। एकोटा रिक्सा, कि टमटम, कि टेम्पो सवारीक प्रतिक्षामे ठाढ़ नहि छलैक। कोनो हल्ला नहि होइत छलैक— एक सवारी टावर। सिनेमा चौक आइये। बाकरगंज, बाकरगंज।'

रिक्सावला सभ स्टैंड पर अपन-अपन रिक्साकेँ पाछाँ मुँह घुमा कऽ ओकरा सीट पर घोँकड़ी लगा कऽ सूतल छल। सवारी कतबो ककरो उठयबाक चेष्टा कयलकैक मुदा क्यो उठलैक नहि। सवारी एकदम घबरायल छल। एतेक सामान, संगमे एकटा जनानी, शीतलहरीक राति। तखन ओ किच्छु भाड़ा देबाक लेल तैयार भऽ जैतैक। अन्तमे हारि कऽ मनोहराक रिक्सा लग आयल आ जी-जान अवधारिकऽ ओकरा जोरसँ झमारिकऽ उठा देलकैक। मनोहरा कहलकैक—अओ बाबू! एखन हम कत्तहु ने जायब।'

—भाड़ा जे छै तकर दुन्ना भेलऽ तोहर, मुदा चलह।'

—भाड़ाक बात नै, मुदा ठंढि नै देखै छिऐ? हमरा सभकेँ घर-दुआर नै अछि तेँ ने एतऽ छी? ने तँ जकरा घर-दुआर छै से के घरसँ बहरायत?'

—सैह तँ बात छै। एकसर रहितहुँ तँ कोनो बात नहि। संगमे एकटा जनानी सवारी सें अछि। कहऽ, एहि सुनसानमे एतेक सामान सभ लऽ कऽ कोना रहू? इज्जति-आबरूक सवाल छै से तँ तोँहू सभ बुझिते छहक। तोँही कहऽ जे एहनामे जँ तोँ अपन कनियाँ संग रहितह तँ केहन मोन होइतह?'

—ओ! कनियाँकेँ सेहो अनने छी?' कनियाँ शब्द सूनि कऽ जेना पघीलि गेल। मनोहराकेँ जोड़ी सवारी उठबैत बड़ा मन लगैत छलैक। ओना कतबो फैसनवाली युवती रहौक, ओकरा अपना रिक्सा पर बैसयबामे हुलास नहि होइत छलैक। ई नहि होइत छलैक जे ई हमरे रिक्सा पर बैसैत। मुदा कोनो पति-पत्नीक जोड़ी देखि जेना उत्साहित भऽ जाइत छल। रिक्सा चलबैत काल, ओकर मोन आ कान पछिले सीट पर रहैत छलैक। ओकर सभक अस्फुट आत्मीय वार्त्तालाप, कि हँसीक अस्फुट ध्वनि, कि चूड़ीक खनखनायब, कि रेघायल सन 'ऊँह' स्वर सूनि जेना अद्भुत तृप्ति होइत छलैक। ओ अनुभव करऽ लगैत छल बुधियाक स्वप्निल संसर्ग-सुख। लगैत छलैक जेना ओ अपने बुधियाक संग रिक्साक सीट पर बैसल अछि आ आन क्यो रिक्सा चला रहल छैक। से कनियाँक नाम सुनैत देरी ओ तैयार भऽ गेलैक। स्टेशनक

पोर्टिकोमे आबि कऽ देखलक सामान सभ पसरल आ ओहीठाम शाल ओढ़ने एकटा युवती। ओ बाजल—'कनियाँ पहिले बेर अयली अछि ?'

—हँ, डेरा नहि भेटैत छल तेँ नहि अनने छलियनि।' सवारी रिक्सा पर सामान लदलक। कनियाँके बैसौलक सरियाकऽ आ अपनो बैसल। मनोहरा गमछासँ कान बन्हलक, चद्दरिकेँ देहमे नीक जकाँ लपटौलक आ पैडिल मारऽ लागल।

किन्तु गन्तव्य स्थान पर कहलो उत्तर रिक्सा नहि रुकलैक तँ दूनू पति-पत्नी जेना भयसँ सिहरि उठल। पुरुष सवारी धरफड़ाकऽ कूदल आ आगाँसँ हैंडिल रोकलक। ओ किछु जोरसँ बजितय वा आक्रोशमे मारियो बैसितैक मुदा मनोहराकेँ देखलकैक जड़वत् बैसल। मनोहराकेँ देह धऽ कऽ डोलबैत किछु पूछऽ चाहलकैक। तँ मनोहरा उनटि-पुनटि कऽ नीचाँमे खसि पड़लैक।

—जल्दी उतरू अय। ई तँ बेहोस भऽ गेलै। एक्सपोजर लागि गेलैक।'

संयोगसँ लगेमे डेरा छलैक, से दूनू बेकती कोनो-ना ओकरा टाङि कऽ डेरामे लऽ गेलैक। सामान सहित रिक्साकेँ अङनैमे लगा देलकैक। घरमे जे ताला लागल छलैक से खोलि कऽ, एकटा सिक्कड़ी लऽ कऽ रिक्सामे ताला भरि देलकैक।

राति भरि जागि कऽ घरक पुरना एकबार, कागत, दबाइक डिब्बा इत्यादि जरा कऽ मनोहराकेँ तपबैत रहलैक। परन्तु, मनोहराकेँ ने होस अयलैक, ने ऐँठल हाथ-पयर सोझ भेलैक। ओ बेचारा भोरे एकटा रिक्सा पर लादि कऽ अस्पतालमे एमरजेन्सीमे लऽ जा कऽ भरती करा देलकैक। मनोहराकेँ होस तँ भेलैक मुदा ठंढि आ चोटसँ सौंसे देह निष्क्रिय जकाँ भऽ गेल छलैक। मनोहरा अपन गामक पता देलकैक। ओ सवारी मनोहराक संगी सभकेँ ताकि कऽ आनि देलकैक। वैह ओकरा गाम पर तार दऽ देलकैक। तखन पहुँचल छलैक बुधिया, मनोहराक छोट भाइ जसोधराक संग।

जसोधरा तँ चल गेलैक गाम मुदा बुधियाकेँ रहि जाय पड़लैक। रहितैक कोना नै ? मास दिन रहऽ पड़ल छलैक अस्पतालमे, बुधिया लगमे नहि रहितैक तँ मनोहरा बिलटि कऽ रहि जैतय। ओहन लबेजान देखि कऽ बुधिया कोना चल जैतैक ?

तँ दवाइ-बीरो, पथ-पानि आ खर्चामे अपन जमा-पूजी जे छलैक से तँ खर्च भैए गेलैक आ ताहिपरसँ पैंच-उधार से भऽ गेलैक। अपना इलाकाक जे रिक्सावला सभ छलैक से धरि ठाढ़ भऽ गेलैक ओकरा बचयबा लेल। दस गोटे मिलिकऽ अपन कमाइमेसँ नित्य एक टाका कऽ ओकरा दऽ जाइत छलैक। मनोहरा कहैत छलैक— भाइ! जँ बाँचि गेलियौ तँ सभक सधा देबौ कमा कऽ; नहि, चल गेलियौ तँ बुझिहेँ दाने केलहुँ।'

बुधिया ई सुनैत छल तँ कोँढ़ फाटऽ लगैत छलैक। मुदा एहि अनजान शहरमे किछु कैयो ने सकैत छलि। वैह रिक्सावला सभ दस टाकाक मास, किरायापर एकटा खोपड़ी सनक घर ताकि देलकैक। मनोहरा अस्पतालसँ छूटल तँ एही घरमे आयल।

बिमारी मनोहराकेँ तोड़ि देने छलैक, तनो केँ आ धनोकेँ। देह जुटैमे ओना समय लगितैक किन्तु बैसल रहलो पर गुजर नहि छलैक। बुधिया गाम पर रहैत छलैक तँ कटनी-खोटनी, बोनि, पनिभर सभसँ गुजर कऽ लैत छलैक। मनोहरा किछु टाका पठा दैत छलैक। दसमी, फगुआमे गाम जाइत छल तँ कपड़ा-लत्ता लैए जाइत छलैक। नीक जकाँ समय कटल जाइत छलैक। आब अपन खर्चा, बुधियाक खर्चा, घरक किराया, कर्जा-बर्जा सभक भार पड़ि गेल छलैक। बुधिया कहबो कयलकैक जे दू-एक टा डेरामे चौका-बर्त्तनक काज धरा दितै तँ थोड़ेक भार कम भऽ जैतै।'

मुदा मनोहरा तैयार नहि भेलैक। कहलकैक— शहरमे आबियो कऽ अनके पमोजिम करबेँ? गाम जैहेँ तँ फेर अपन काज-धन्धा करिहेँ। अइ ठाम कनियाँ जकाँ रह।'

से बुधिया रहऽ लागलि छलि कनियाँ जकाँ। रिक्सा चला कऽ जखन मनोहरा अबैत छल तँ बुधिया हबर-हबर बीयनि हौंकऽ लगैत छलैक। हबर-हबर परसिकऽ आँगामे थारी राखि जाइत छलैक। अलमुनियाँवला लोटामे पानि भरि कऽ दऽ जाइत छलैक। जखन मनोहरा खाय लगैत छलैक तँ बुधिया फेर बीयनि हौंकऽ लगैत छलैक। बीच-बीचमे पूछैत रहैत छलैक— नोन बेसी तँ ने पड़ि गेलैक? किछु लेतै? एक परसन आर लऽ लौक ने? आइ तँ बड़ कमे खेलकै? एना केनाइ कम किए कऽ देलकैए?'

आ मनोहराकेँ होइत छलैक जे अमृत पीबि रहल हो। भोजनसँ बेसी पत्नीक बोल आ स्नेह ओकर मोनकेँ स्वस्थ बना देने छलैक आ मोन स्वस्थ भेलासँ शरीर आपरूपी स्वस्थ भऽ जाइत छैक। से मनोहरा, जल्दीए स्वस्थ भऽ

गेल पहिने जकाँ। ओहिना सवारी खीचऽ लागल छल। ओहिना बिनु थकने दिन-राति रिक्सा चलबऽ लागल छल। दिन-राति रिक्सा चलौनाइ जरूरी भऽ गेल छलैक ने! ओकरा जल्दीसँ जल्दी कर्ज-बर्ज सधा देबाक कछमछी पैसल छलैक। संगहि इहो चिन्ता बनल रहैत छलैक जे बुधियाकेँ कोनो कष्ट नहि होइक, खयबाक, पहिरबाक, रहबाक। तेँ भोरे चारिए बजे निकलि जाइत छल आ राति बारह बजे धरि रिक्सा चलबैत रहैत छल। कहियो काल तँ राति-राति भरि चलबैत रहि जाइत छल।

एहि लेल बुधिया कय बेर बजबो कयलकैक, झगड़ो कयलकैक। मुदा मनोहरा अपन धुनिमे लागल छल। एक दिन तँ बुधिया ततेक उग्र भऽ गेलैक जे मनोहराकेँ किछु कहैत बनैत छलैक, ने नै कहैत।

मनोहरा ओहि दिन एक-डेढ़ बजे रातिमे अयलैक आ एक-डेढ़ घंटा आराम कऽ कऽ फेर चारिए बजे जयबाक सूरसार कयलक। बुधियाक निन्न सेहो टूटि गेलैक। ओ बाजय लागलि— एक रत्ती देहकेँ अराम नै दैत छै, फेर जँ बेराम पड़तै तँ क्यौ काज नै औतै। से हम कहैत-कहैत हारि गेली मुदा कैसा तेरा रंगा! हमरा ऐ जहलमे राखि कऽ अपने भरि दिन भरि राति पार रहैए।'

—ऐ ठाँ तोँ जहलमे छेँ? तोरा कोन वस्तुक खगता छौ? कोन वस्तुमे नै कहलियौ?'

—जहल ने तँ की? भरि दिन ऐठाँ बन्द रहू आ रिक्साक घंटीक टुनटुन सुनै लेल कान पथने रहू। कोन सुख हमरा एतऽ रहि कऽ? कहै छै, जैसे कन्ता घर रहे तैसे रहे बिदेस। पठा देअओ हमरा गाम कऽ।' आ आँखि-नाक पोछऽ लागलि छलि आँचरसँ।

मनोहरा ओकरा बुझबैत कहलकैक— गय बुधो!' मनोहराक सुरूएसँ अभ्यास छलैक जे जखन ओ अति स्नेहसँ किछु कहऽ चाहैत छलैक तँ यैह सम्बोधन करैत छलैक आ बुधियाकेँ मनोहराक मुँहसँ 'बुधो' शब्द सुनैत देरी आधा तामस तँ ओहिना पानि भऽ जाइत छलैक। मुदा आइ तकर कोनो असरि नहि भेलैक बुधियापर। मनोहरा बाजल— गय बुधो! जाबत तोँ छेँ ताबत तँ खयबा-पीबाक चिन्तासँ निचेन छी, तेँ होइए जे जल्दी-जल्दी भार उतारि ली। फेर जखन तोँ गाम चल जेबेँ तखन तँ वैह रामा वैह खटोलबा।'

—ठीके तँ छै। हम छिऐ तँ एते फिरसानी होइ छै, हम चल जेबै तँ खाइओ-पीअइक इन्तिजाममे अरामक पलखति भऽ जेतै। तँ हमरा दैए आबओ ने।'

----बुधो ! तों बात नै बुझै छही। गाम जेबही तँ सनेस-बारी नै लऽ जेबही ? माय लय, बहीन लय, बाबू लय कपड़ा लत्ता नै लऽ जेबही ? गाम पर किछु टका-पाइ नै लऽ जेबही तँ लोक की कहतौ ?'

बुधिया एहि बेर तमसा कऽ आगाँ फेर किछु नहि बाजि सकलि छलि। चुपचाप चारिटा रोटीपर भुजिया राखि कऽ मनोहरा दिस बढ़ा देलकैक आ चारिटा रोटी एकटा कप्पामे बान्हि कऽ रिक्साक सीटतरवला खोलीमे राखि देलकैक। मनोहरा रिक्सा टुनटुनबैत विदा भऽ गेल छल आ बुधिया देखैत रहि गेलि छलैक। एहिना सभ दिन बुधिया ओकरा जाइत देखैत छलैक।

मनोहरा जहियासँ अस्पतालसँ आयल, बुधिया संग रहऽ लागल छलैक आ ओ फेरसँ रिक्सा चलबऽ लागल छल, तहियासँ दोकानमे चाह पीब छोड़ि देने छल। आब ओ रिक्सास्टैंडक फुटपाथवला दोकानपर गिलासमे चाह आ ओहिमे मुरही, की विस्कुट, की छोटकी पाँवरोटी मिला कऽ खयनाइ छोड़ि देलक। जलखैमे घुघनी कीनि कऽ खायब छोड़ि देलक। सवारी नै रहला पर स्टैंडपर रिक्सा लगा कऽ ओकरे सीट पर सूति रहबाक आदति छोड़ि देलक। ओ चाह पीबा लेल चल अबैत छल डेरा पर। बुधियाकें चाह बनायब सिखा देलकैक सैह नहि, चाह पीबो सिखा देलकैक। जलखैक पोटरी सदिखन ओकरा रहिते छलैक। खाइ बेरमे ओ कोनो ने कोनो प्रकारें चले अबैत छल आ जाहि दिन नहि अबैत छल ताहि दिन बुधिया सेहो बिनु खयनहि रहि जाइत छल। ई बात जखनसँ मनोहरा बुझलक तखनसँ खयबामे कहियो नागा नहि करैत छल।

मनोहरा जखन रातिमे अबैत छल तँ बुधिया लेल किछु ने किछु छोट-मोट चीज अनबे करैत छलैक। पहिने कपड़ावला साबुन आनऽ लागल तँ मनोहराक अपनो कपड़ा साफ रहऽ लगलैक। ओकर गंजी आब घामसँ महकैत नहि रहैत छलैक। पैंट आ पैजामा पहिने जकाँ मैल-चिक्कट नहि रहैत छलैक। एहि सभसँ मनोहराक उत्साह बढ़िते जाइत छलैक, तँ देहक साबुन, रीबन, क्लिफ, तेल, टिकुली आर जे कोनो वस्तु बुधियाक उपयोगक भेटैक, से अनिते रहैत छलैक।

एहि सभ लय बुधिया कहियो आग्रह नहि कयलकैक, अपितु मने करैत रहैत छलैक। मुदा मनोहराकें बुधिया नीक लगैत छलैक ओ रीबन बन्हने, टिकुली सटने, स्नो आ पाउडर लगौने, प्रिंट साड़ी पहिरने। आ एहन बुधियाकें संग लऽ कऽ टहलबाक मोन भऽ जाइत छलैक मनोहराकें। ठीक ओहिना, जेना

देखैत छलैक लोक सभकेँ सिनेमाहॉल लग, श्यामा मन्दिरमे, महावीर स्थानमे, पोलो फिल्डमे, चिल्ड्रेन पार्कमे। मुदा से कऽ नहि सकल छल। कोना करितय ? टहलै बेरमे रिक्सा चला कऽ चारि-पाँच टाका कमा लैत छल। से मोनक बात मोनेमे रहि गेल छलैक। एहिना एखन धरि मोनमे रहि गेल छलैक बुधियाकेँ एक दिन सिनेमा देखायब।

यैह टा बात ओ पूरा नहि कऽ सकल छल। आन वस्तुलय बुधिया कहियो आग्रह-अनुरोध नहि करैत छलैक, से तँ ओ अपने मोने आनि दैत छलैक, मुदा सिनेमा देखबालेल बुधिया कतेक बेर बाजलि छलि। मनोहराके ँ ओहि लेल फुरसति नहि होइत छलैक। बुधिया कय बेर बजितो छलैक—- कते बेर कहलिऐक जे एक दिन सिनेमा देखितियै तँ गदहा गेला स्वर्ग तँ छान लगले गेलनि।'

मनोहरा बुधियाके ँ सिनेमा देखबऽ चाहैत छलैक। ओ प्रस्तावो कयलकैक--चल ने, रिक्सा पर चढ़ौने चलैत छियौ, टिकट कटा कऽ सिनेमामे बैसा देबौ आ खतम भेलापर फेर लेने एबौ।'

जहिया कहियो मनोहरा ई बात कहैत छलैक कि बुधिया तेना कऽ मुँह चमका लैत छलैक जे मनोहराक मुँहक बात मुँहेमे रहि जाइत छलैक। बुधिया कहैत छलैक— एकरा रिक्सा पर चढ़ि कऽ जायब से लोक की कहत ? एकरा लोक देखतै तँ की कहतै जे बोहुके ँ रिक्सा पर चढ़ौने जाइ छै !'

—की कहत ? लोक बुझतै जे कोनो जनानी सवारी लेने जाइ छै। आर की ?'

—हमरा ई पाप नहि चढ़यबाक अछि जे ....आ ई बात तँ बुझै छै जे सिनेमा कतौ लोक एकसर देखलकै अछि ? एकर तँ सभ सऽख सेहन्ता जेना कठुआ गेलैए। सदिखन हाय पाइ ! हाय पाइ करैत रहैए !' आ बुधिया चमकि कऽ घर चल गेलि छलि।

—बड़ तामस भऽ गेलौ बुधो !' आ मनोहरा रिक्सा हाँकि देने छल हँसैत।

मुदा मोनमे सदति बुधियाक बात चक्कर मारैत रहैत छलैक। ठीके तँ कहै छै बुधिया, सिनेमा कतौ एकसर देखलक अछि लोक ! एखनो कोनो तेहने सिनेमा चलैत छलैक। सिनेमा देखनिहार जोड़ी सभक भीड़ लागल रहैत छलैक। कतेक सवारी तँ मनोहरो उठबैत छल नित्य। 'जयन्ती' सिनेमाहॉलमे टिकटघरक खिड़की पर सभ दिन तेहन भीड़ रहैत छलैक जे कतेकके ँ टिकटे

ने भेटैत छलैक। तेँ सबेरेसँ सिनेमार्थी सभक पाँती लागि जाइत छलैक। मनोहरा कैक हप्तासँ ई देखैत छल। से ओकरो मोन भेलैक जे दूनू गोटे संग-संग ई सिनेमा देखितहुँ। आ, संग-संग सिनेमा देखबाक, एकदम सटल-सटल बैसि कऽ सिनेमा देखबाक कल्पनासँ मोने मोने मुग्ध भऽ गेल--जे हेतै से हेतै, देखब एक दिन सिनेमा। देखब तँ नीक जकाँ देखब। रिक्साबला जकाँ नहि देखब। जेना बाबू-भैया सभ देखैत अछि तेना देखब। बुधियो की बुझत ?'

ओहि दिन गामपरसँ बुधियाक झगड़ा देखिकऽ विदा भेल तँ अनुभव भेलैक जे आइ बुधियाक तामस शान्त नहि भेलैक अछि। से ओ बाटेमे निश्चय कऽ लेलक।

ओहि दिन सबेरे आबि कऽ रिक्सा लगा देलक। खा कऽ सूति रहल आ भोरमे बड़ अबेर धरि सूतल रहल। बुधिया सबेरे उठल आने दिन जकाँ। मनोहराकेँ उठैत नहि देखि आश्चर्य होबऽ लगलैक। ओ थोड़ेक काल घर-बाहर करैत रहलि। फेर भेलैक जे कहीँ मोन तँ ने सुस्त भऽ गेलैक, से ओ मनोहराकेँ देह जाँतऽ लगलैक। मनोहरो अपन देह ओरि देलकैक। बड़ी काल जतलाक बाद आस्तेसँ पुछलकैक-- मन सुस्त छै की ? आइ तँ बड़ अबेर धरि सूतल रहलै।'

—"ऊँह !" मनोहरा हफिआइत उठल आ अङैठी-मोड़ करैत बाजल--नहि, ठीके छै।' फेर बाहरमे ऊगल रौदकेँ देखि धड़फड़ा कऽ ऊठल--ठीके, बड़ अबेर भऽ गेलै।'

फेर उठि कऽ गेल। रिक्साक सीट तरसँ तरकारीक पोटरी बहार कयलक। दू टा साबुन बहार कयलक। तरकारी बुधियाकेँ दैत कहलकै--क़नी फस्टसँ तरकारी कर गऽ।'

—आइ बड़ी निचेन देखै छिऐ ? आइ रिक्सामे नै जेतै की ?'

—नै।'

—किए ? हमहूँ बुझिऐ।'

—ओहिना। आइ बाबूगीरी।' आ मनोहरा हँसि देलकैक।

ओहि दिन मनोहरा सड़क पर वला कल पर चल गेल। फैलसँ साबुन लगौलक आ कले पर सँ एक बाल्टी पानि भरने अयलैक। बाल्टी राखि साबुन बुधिया दिस फेकैत कहलकैक-- इहो साबुन लगा कऽ जल्दीसँ नहा लौक। गमकौआ साबुन छै, एकदम कीमती।'

—बात की छै से बजबे ने करै छै ?' बुधिया चूल्हे लगसँ पुछलकैक।

—कहलियौ, जल्दी तैयार हो। आइ मेटनी शो चलक छौ। बड़ी बढ़ियाँ फिलिम लागल छै।'

—ओ ! आइ कोमहर सुरुज उगलथिन ?'

दूनू गोटे जल्दी तैयार भेल मुदा तैयो एक बाजि गेलैक। अपने पैजामा-कुर्त्ता पहिरलक। बुधिया छपुआ साड़ी पहिरलक। ओ, जखन आगाँ-आगाँ मनोहरा आ पाछाँ-पाछाँ बुधिया अपन डेरासँ बहार भेल तँ एकटा भद्र-दम्पतीक अन्दाजसँ चलऽ लागल। आगाँ रिक्सा पकड़बाक विचार छलैक मुदा अपन रिक्सा-स्टैंड पर जाइमे संकोच भेलैक। ओहिठाम मारि चिन्हार रिक्साबला सभ भेटि जैतैक। ओ नहि चाहैत छल जे आइ ओकरा क्यौ रिक्साबलाक रूपमे चिन्हैक, बुधियाकेँ रिक्सा-ड्राइवरक पत्नीक रूपमे चिन्हैक, तेँ ओ रस्ता कटा कऽ अगिला स्टैंड दिस बढ़ल।

जून मासक दुपहरक रौद प्रचण्ड रूप धारण कऽ लेने छलैक। दूनू बेकती घामे-पसेने नहा गेल छल। समय भेल जा रहल छलैक आ एतेक दूर जयबाक छलैक। मैटिनी शो पकड़बाक छलैक आ सभसँ पैघ छलैक रिक्सा पर बैसिकऽ सिनेमा जयबाक इच्छा। मुदा कतहु एकोटा रिक्सा भेटिते ने छलैक। जे खाली रिक्सा भेटैत छलैक से 'खाली नही है' 'टेम नहीं है' 'गाड़ी देना है' कहि कऽ आगाँ बढ़ि जाइत छलैक। मनोहराकेँ तामस होइत छलैक रिक्सावला सभपर। एक बेर बुधियोपर तामस भेलैक जे अपने रिक्सा लऽ लितहुँ तँ एकरे जिद्दक दुआरे नहि लेलहुँ। मुदा फेर भेलैक जे नहि, आइ तँ रिक्सा-ड्राइवर नहि छी।

तावत एकटा खाली रिक्सा देखलकैक तँ मोन पड़लैक जे बाबू-भैया सभ कोना रोब देखा कऽ जबरदस्ती रिक्सा पर बैसि जाइत छैक आ ताहूमे तखन, जखन कोनो समतुरिया जनानी सवारी रहैक। ओहो बुधिया दिस देखलक आ लग अबैत रिक्साकेँ रुकबाक इसारा कयलकैक। रिक्सावला आने जकाँ 'खाली नही है' कहैत आगाँ बढ़ऽ लगलैक कि मनोहरा बड़ी जोर सँ 'रोको' कहैत दौड़ि कऽ गाड़ीक हुड पकड़िकऽ घीचि लेलकैक आ छड़पिकऽ रिक्सा पर चढ़ि गेल। बुधियाकेँ बैसबाक लेल कहलकैक। बुधिया सेहो बैसि गेलि।

— जबरदस्तीक तँ जवाब नहि। हमको गाड़ी देना है।' रिक्साबला कहलकैक।

—अभी तीन बजा है ? देखता नही है जनानी सवारी है ? रिक्सा खाली रखने रहत आ सवारी नहि लेत ।' मनोहरा डाँटि कऽ कहलकैक— चलो जल्दी जयन्ती सिनेमा। सवारी उतरती नै, चलबाक छौहे।'

रिक्साबला हारि कऽ गाड़ी घुमा लेलक। मनोहराकेँ अनुभव भेलैक जे ओ आइ एकदम सुसभ्य सम्भ्रान्त लोक अछि। बुधिया एकटा भद्रलोकक पत्नी भद्रमहिला। ओ बुधियासँ कनेक सटि कऽ बैसि रहल आ रोआबसँ देखैत रहल पैडिल मारैत रिक्साबलाकेँ।

सिनेमाहॉल लग अपार भीड़ छलैक। शो शुरू होइमे कनेके काल रहि गेल छलैक। मनोहरा जल्दीसँ टिकट लऽ लेबऽ चाहैत छल। ओ धड़फड़ा कऽ उतरल। हाथ धऽ कऽ बुधियाकेँ उतारलकैक। जल्दी-जल्दी जेबीसँ दुटकही निकालि कऽ रिक्साबलाकेँ देलकैक—जल्दी फिरता लाबऽ।'

रिक्साबला एकटा अठन्नी निकालि कऽ बढ़ा देलकैक।

—कितना लिया जी !' मनोहरा आश्चर्यसँ पुछलकैक।

—डेढ़ रुपैया तँ मिलबे करता है हजूर।'

मनोहराकेँ अनुभव भेलैक जे ई मफाइ बैमानी कऽ रहल अछि। स्टैंडपरसँ एहि सिनेमा घरक एक टाका भाड़ा छलैक। सैकड़ो सवारी ओ पहुँचौने छल होयत। आ ओ तँ स्टैंडसँ बहुत आगाँ आबि कऽ चढ़ल छल। हिसावेँ बारहे आना होयबाक चाही। से ओ कहलकैक— नहि हौ ! होइतह तँ बारहे आना मुदा तोँ एक रुपैया लऽ लैह।'

—नय हजूर। डेढ़ रुपैया।'

—तोरा कहने, एक रुपैयासँ एक पाइ फाजिल नै।'

—लगैए रिक्सा पर कहियो चढ़बे ने कैलीयऽ। अइ रौदमे जबरदस्ती बैठ गेली आ आब उचित भाड़ामे........'

मनोहराकेँ बड्ड तामस भेलैक—तोँ सभ एहने चालि पर मारि खाइ छह। जनानी सवारी देखि कऽ मूड़ि लैत छहक।'

झंझमंझ बढ़िते गेलैक। लगपासक कय गोटे सहटि कऽ चल अयलैक। एही बीचमे मनोहरा रिक्साबलाक हाथसँ दुटकही लऽ लेने छल। रिक्साबला जोर-जोरसँ बाजऽ लागल छल आ मनोहरा जबाब दैत छलैक। ताबतमे क्यो

जोर सँ कहलकैक —— की रौ यरबा ! की छियौ रौ।' मनोहरा देखलक अपन स्टैंड परक एकटा संगी ड्राइवर सोनमाकेँ अपन रिक्सा छोड़ि लगमे अबैत।

मनोहरा कहलकैक—— देखही ने, ई रिक्साबला जे बदमासी करैए ! आधा रस्तासँ एलिऐए आ बारह आनाक बदलामे एक रुपैया दैत छिऐ तँ डेढ़ रुपैया लय हल्ला कयने अछि।'

बुधिया सोनमाकेँ देखि कनेक लजाकऽ मरोत काढ़ि लेलक। सोनमाक नजरि बुधिया पर गेलैक तँ बड़ी जोरसँ हँसैत बाजल—— आरौ तोरी के ! कनियाँकेँ अनलहीएँ सिनेमा देखबै लय ? हमरा कहितेँ, हमहीँ पहुँचा दितियौ।' फेर अपना जेबीसँ एकटा एकटकही निकालि कऽ रिक्साबलाकेँ दैत सोनमा कहलकैक—— सभकेँ देहातिए बूझि लैत छहक ? हमहूँ डरेबर छी आ इहो रिक्से-डरेबर छै। हम सभ तँ सभ दिन एहि सिनेमा लय सवारी अनै छी। कतऽ छै भाड़ा डेढ़ रुपैया ? एही पर लोक चोटिया दै छह ने !'

मनोहराकेँ भेलैक जे ओ बेकार हुज्जति कयलक। आठे आनाक तँ बात छलैक। जाहि डरेँ पड़ायल से भैए नें गेलैक ! चिन्हार डरेवर भेटिए गेलैक ! रिक्सा-ड्राइवर कहि कऽ परिचय दैये देलकैक ! बुधिया रिक्सा-ड्राइवरक घर-बालीक रूपमे चिन्हाइए गेलि !

ओ ठकमकायल ठाढ़ छल ता सिनेमा शुरू भऽ गेल छलैक। टिकट घरक खिड़की परसँ लोक छटि गेल छलैक। 'हाउस फुल'क बोर्ड सिनेमाहॉलक गेट पर लागि गेल छलैक। सोनमाकेँ कोनो सवारी तखने भेटि गेल छलैक, से ओ चलि देने छल। मनोहरा आ बुधिया लोकक भीड़सँ सहटि देबालक कातमे ठाढ़ छल अनिश्चयक स्थितिमे। मनोहराक चेहरा पर पराजयक मुद्रा सघन भऽ गेल छलैक।

□

चोर

⊕

गामसँ दच्छिन छोट सन परती। भरि दिन गामक माल-जाल ओहिमे चरैत रहैत छलैक। साँझ कऽ विद्यार्थी सभ फुटबॉल खेलाइत छल। ओहि दिन जखन खेल खतम भेलैक तँ शोभाकान्त थाकि कऽ बीच परतीमे बैसि रहल। सभ खेलाड़ी विदा भेल अपन-अपन घर दिस मुदा शोभाकान्त बैसले रहल। संगी सभ ओकरा चलऽ कहलकैक तँ ओ बाजल-- भाइ रे! हमरा पियास बड़ जोर लागल छौ, हम जाइ छियौ पानि पियऽ।'

एकटा संगी कहलकैक — गरमायलमे पानि नहि पी। सर्दी-बोखार भऽ जेतौ।'

शोभा एकर उत्तर नहि दऽ चुपचाप उठि कऽ दोसर दिस चलि देलक। थोड़ेक दूर हटि कऽ मिडिल स्कूल छलैक। ओहिठाम एकटा कऽल छलैक। लोक ओतहि जा कऽ हाथ-मुँह धोइत छल, पानि पिबैत छल। शोभाकान्त सेहो ओही कऽल पर चल गेल।

शोभाकान्त फुटबॉलक नीक खेलाड़ी छल। ओ जखन मैदानक बीचमे अबैत छल तँ खेलमे रंग आनि दैत छल। छल ओ हाइ-स्कूलक विद्यार्थी। स्कूलमे एकटा नीक मेधावी छात्र बूझल जाइत छल। ओकर खेल आ स्कूलक कैरियर देखि कऽ ओकर संगी-साथीकेँ सेहन्ता होबऽ लगैत छलैक, स्पर्द्धा होबऽ लगैत छलैक। ओकर बगय-बनि अत्यन्त साधारण। एकटा हाफ-पैंट पहिरने, देह पर मैल हाफशर्ट तकरो बाँहि फाटल, पीठ पर कय ठाम सीयल आ मसकल।

ओ कऽल पर गेल । हाथ-पायर धोयलक, कुरड़ कयलक । माथ पर कऽलैक ठंढा पानि दऽ कऽ केश-कपार सभकेँ धोयलक आ हाफशर्टक अगिला भागसँ पोछि लेलक । पानि पीलक ! सर्दी-ज्वर भऽ जयबाक मय भेलैक । से भेला पर कोनो दबाइयो-बीरो नहि होयतैक से ओ नीक जकाँ जनैत छल । अपने मने जहिया ज्वर उतरितैक तकरा बादे पथ्य पड़ितैक । अपन परिवारक विवशतासँ ओ परिचित छल । तेँ ओ एहि सभमे अपना जनैत बड़ सावधान रहैत छल ।

किन्तु वस्तुतः ओहि दिन ओकरा पानि पीबाक पियास छलैके नहि । ओ तँ समय बितबऽ चाहैत छल जे ओकर संगी सभ चल जाइक । लोक सभ चल जाइक । चारू कात सुनसान भऽ जाइक । ओ एकदम एकसर भऽ जाय । एकदम निरन्तर भऽ गेला पर ओ अपन योजना पूरा कऽ सकय ।

जतऽ जे कोनो लोक छल से सभ अपन-अपन वास दिस विदा भऽ गेल छल । मिडिल स्कूल सेहो सुनसान भऽ गेल छलैक । शोभाकान्त एकसरे रहि गेल छल । ओकरा जखन विश्वास भऽ गेलैक जे क्यौ कतहु नहि रहि गेलैक अछि तखन ओ फेर परती दिस पलटल । गोधूलि बेला बीतल जाइत छलैक । कने-मने झोलफलो भऽ गेल छलैक ।

परती पर आबि कऽ ओ फेर चारू कात दृष्टि फेरलक । क्यौ कतहु दृष्टि पर नहि पड़लैक । परतीक पच्छिम दिस मोटका भेमहा आमक गाछ पर अन्हरिया लटकल जाइत छलैक मने । एहितँ ओ गाछ आरो झमटगर लगैत छलैक ! ओ ओही गाछ दिस बढ़ल । ओहिठाम गाछक जड़िमे एक जोड़ फीताबला जूता ओहिना अनामति राखल छलैक । ओ थोड़ेक काल ओहि जूताकेँ टकटकी लगा कऽ देखैत रहल । फेर चौकन्न भऽ कऽ चारूकात तकलक आ घूमि कऽ पुनः परतीक बीचमे चल आयल ।

जखन खेल आरम्भ भऽ गेल छलैक तखन शोभाकान्त आयल छल । तखने ओकर दृष्टि एहि जूता पर गेल छलैक आ भरि खेल एहीपर ओकर ध्यान टाङल रहलैक । ओकर मोनमे कोना ने कोना विश्वास भऽ गेलैक जे जकर ककरो ई थिकैक से आइ बिसरि जयबे करत । खेल खतम भेला पर शोभाकान्त एही दुआरेँ बीच परतीमे बैसि गेल जे देखी, ई जूता क्यो उठबैत छैक वा नहि । ओ देखलक जे सभ खेलाड़ी गाम दिस विदा भऽ गेल । क्यौ जूताकेँ छुइलकैक नहि ।

ओ बड़ी काल धरि परतीमे ततमत करैत ठाढ़ रहल। फेर ओहो गाछ दिस बढ़ि गेल। गाछतरमे जा कऽ बड़ी काल धरि ठाढ़ रहल। छाती ओकर धड़-धड़ करऽ लगलैक। अकस्मात् गाछपर कोनो चिड़ै पाँखि फड़फड़ौलकैक। ओ चौंकि कऽ तीन-चारि डेग पाछाँ हटि गेल। भेलैक जेना गाछपर बैसिकऽ ओहि जूताक क्यो रखबारी कऽ रहल होइक। अन्हार थोड़ेक आर बढ़ि गेल छलैक। ओ थोड़ेक काल आरो ठाढ़ रहल। क्रमे ओकरामे कोनो दुस्साहस प्रवेश करऽ लगलैक।

कोनो वस्तुक उत्कट आवश्यकता वा अभिलाषा होइत छैक किन्तु तकरा पूर्ण करबाक अक्षमता रहैत छैक तँ ओ अक्षमता मनुष्यकेँ चोरि अथवा अन्य प्रकारेँ ओकरा पूरा करबाक दुस्साहस प्रदान कऽ दैत छैक। तखने लोक नीति-विरुद्ध कार्य करबाक लेल प्रेरित ओ अग्रसर होइत अछि। यद्यपि ओ दुस्साहस ने सार्वकालिक होइत छैक ने स्थायी। किन्तु जखने ओ जतबे कालक लेल होइत छैक सैह मनुष्यक पतनक महान् कारण बनि जाइत छैक। से दुस्साहस जखन शोमाकान्तमे अयलैक तँ ओ आगाँ बढ़ि कऽ ओहि जूतामे अपन पयर पैसा देलक। फीता कसि लेलक।

ओकरा पयरमे गुदगुदी लागऽ लगलैक। जूता पहिरलाक बाद केहन सुखद लगैद छैक तकर अनुभूति ओकरा जीवनमे पहिले बेर भेल छलैक। ओ जूता पहीरि कऽ सौंसे परती बौआय लागल। परतीमे ओना बौआइत ओकरा बड़ नीक लागि रहल छलैक। कनेक काल ठाढ़ भऽ कऽ जूताक भीतरमे अपन पयरक आङुरकेँ चला कऽ देखलक। बूझि पड़लैक जेना आब ओ आङुर सभ सुरक्षित अछि। पयरक ठेसाह आङुरक ठुट्ठ नऽह सभ जेना आब बढ़ि गेल बूझि पड़लैक।

ठेसाह आङुर सभ ओकरा कतेक पीड़ा देने छलैक से स्मरण कऽ ओ सिहरि-सिहरि जाइत छल। ठेसक घाव ओकरा छौ-छौ मास धरि तबाह करैत रहैत छलैक। जँ कनेक घाव चोखाइत छलैक कि फेर ठेस लागि जाइत छलैक। ओ कतबो बचाकऽ चलैत छल तथापि ठेसाह आङुरमे ठेस लागिए जाइत छलैक।

एक बेर स्कूलसँ अबैत काल एहिना बड़ जोरसँ ठेस लागि गेलैक। फेफसी बहार भऽ गेलैक। बन्न-बन्न लिधुर बहऽ लगलैक। ओ सड़कक कातमे बैसि पयरक ओहि फुटलाहा आङुरकेँ जाँति बाप-बाप कऽ कानऽ लागल छल।

लगक एकटा पानबला दौड़िकऽ अयलैक आ हाँइ-हाँइ कऽ भङरिया उखाड़ि कऽ ओकर रस आङ ुर पर गाड़ि देलकैक। भङरियाक रस आर छनछनाकऽ लगलैक। ओ आर जोरसँ चिचिया उठल छल। पानबला कहलकैक—माय-बाप केहन निट्ठ ुर छै, एकटा जुत्ता कीनि देतै से नै !'

शोभाकान्तकेँ पानबलाक ओ सहानुभूति चाननक लेप जकाँ शीतल लागल छलैक। कठोर पीड़ामे ककरो कनेको सहानुभूति औषधिक काज करैत छैक आ ओहिसँ पीड़ा बहुत कम भऽ जाइत छैक। मुदा ओ जनैत छल जे ओकर माय-बाप जुत्ता नहि कीनि दऽ सकैत छलैक। एतबा विभव नहि छलैक।

आइ ओहि चिर अभीप्सित वस्तुकेँ अनायास पाबि शोभाकान्त अत्यन्त तृप्त ओ विभोर भऽ गेल। सहसा अन्तस्तलमे कोनो काँट जकाँ गड़ि कऽ कचकि उठलै........चोरि तँ नै थिकैक ई ! .... चोरि थिकैक ई !! फेर अपने समाधान ताकि लेलक..........उँह्......अनेर पड़ल जुत्ता हम पौलहुँ तँ चोरि कोना भेलैक ? ई त पौलहुँ अछि। कोनो वस्तु पायब चोरि थिकैक ? हम नहि लेबैक तँ क्यौ तँ लैये लेतैक !

परन्तु गाम पर अयबा काल ओ सोझ बाटेँ नहि आयल। होइतो छैक। अनैतिकताक कनेको छाया पड़ला पर लोकक नैतिक बल विलीन भऽ जाइत छैक। लोक अनेरो आशंकित भऽ अनका दृष्टिसँ बचबाक चेष्टा करैत अछि। तेँ चोरक मुह चान सन लगैत छैक। से शोभाकान्त सेहो तेहने घुमानवाला रस्तासँ गाम पर आयल जाहिसँ क्यौ ओकरा देखैक नहि।

गाम पर आबि कऽ मायकेँ जुत्ता देखऽ देलकैक—माय ! देखही, केहन सुन्दर जुत्ता पौलिऐक अछि ? एकदम नऽबे छै।'

माय डिबिया लऽ कऽ जूत्ता देखलकैक। लाल रंगक चमचम करैत नवका जुत्ता। एकटा प्रसन्नताक चमकि मायोक आखिमे आबि गेलैक। ओ कहलकैक—कोठिक सान्हिमे नुका कऽ राखि दे। बात पुरना जेतै तँ थोड़े दिन बितला पर पहिरिहेँ।'

शोभाकान्तक मनमे उमड़ैत आशंका, द्वन्द्व, भय ओ हृदयमे गड़ैत काँटक कचकब मायक आश्वासन पाबि शान्त भऽ गेलैक। प्रत्युत ओ उत्साहित भऽ उठल। अपन लोकक कोनो प्रकारक आश्वासन-प्रोत्साहन चरित्र-स्खलनक गतिकेँ तीव्रसँ तीव्रतर बना दैत छैक। मायो शोभाकान्तक संग सैह कयलकैक।

—शोभा ! शोभाकान्त !!'

शोभाकान्त खा कऽ निश्चिन्त भऽ कऽ सूतऽ जाइत छल कि कुलानन्द लालटेम लऽ कऽ दलानपर पहुँचलैक। ओकरा संग तीन-चारिटा संगी-साथी सभ सेहो छलैक। कुलानन्दक सोर करब सूनि कऽ ओकर जी धक् दऽ रहि गेलैक। सौंसे देह पसेनासँ घमघमा गेलैक। ओ मायकेँ पुछलकैक—'गय! एकरे जुत्ता तँ ने छिऐ?'

—छिऐ तँ छिऐ।' गोंहछल स्वरमे माय उत्तर देलकैक।

—मङतै तँ की कहबै? दऽ देबै?' शोभाकान्त कँपैत स्वरमे बाजल

—कथी साती देबही? कोनो ओकरा घरसँ चोरि कऽ कऽ अनलही अछि? पाओल चीज ककरा के दै छै?' माय रुच्छ आ कठोर स्वरमे कहलकैक आ ऐंठ फेरऽ लागलि।

—शोभा! शोभाकान्त !!' बाहरसँ फेर कुलानन्दक स्वर।

—हँ यैह अबै छी।' शोभाकान्त ई कहैत बाहर आयल। देखलक, संगी सभक संग कुलानन्द ठाढ़। ओकरा बुकौर लागल छलैक। कुलानन्द थरथराइत शोभाकान्तसँ पुछलकैक—भाइ! परतीक पछबरिया भेमहा आमक गाछ तर जुत्ता राखि कऽ खेलाय लागल छलिऐ। अबै कालमे बेसोहे चल अयलिऐ। गाम पर आबि कऽ मोन पड़ल। दौड़ल गेलहुँ देखऽ लय तँ जुत्ता पार छल। नऽबे जुत्ता छलै। आब तँ बाबू कीनि नहिएँ देताह जे कालिह बूझि जेताह तँ बड़ मारि मारताह।' ई कहैत-कहैत कुलानन्द हिचकऽ लागल।

वेरुक पहर खेलसँ बहुत पहिने कुलानन्द परतीपर गेल छल। ओहि भेमहा गाछ तर जुत्ता खोलि कऽ फुटबॉल खेलायमे लागि गेल। कुलानन्दो हाइस्कूलक विद्यार्थी छल किन्तु ओ खेलाय लेल बड़ कम जाइत छल। बाप नऽब जुत्ता कीनि देने छलैक से सेहन्तासँ जुत्ता पहिरि कऽ ओहि दिन परती पर गेल छल। एहिमे प्रायः आत्म-प्रदर्शनक अहं-वृत्तिकेँ सन्तुष्ट करब मात्र प्रयोजन छलैक। किन्तु जुत्ताक अनभ्यस्त रहने खेल खतम भेला पर जुत्ता पहिरबे बिसरि गेल।

शोभाकान्त जेँ देरीसँ परतीपर पहुँचल छल तेँ कुलानन्दकेँ जुत्ता खोलैत नहि देखने छलैक। से एखन कुलानन्दक गप्प सुनि कऽ ने 'हँ' कहैत बनलैक ने 'नहि' कहैत। ओ हकहकाइत कहलकैक—हम ·····हम····· कहाँ····· हम कहाँ देखलियौ भाइ!'

—जतेक गोटे परतीपर छल, सभसँ पुछलिऐक। क्यो ने कबूल कयलक।' कुलानन्द बजैत गेल—सभ कहलक जे हम सभ संगे अयलहुँ, खाली शोभाकान्त पानि पीबाक लेल अँटकि गेल छल। से तों हमर जुत्ता देखलेँहेँ तँ दऽ दे भाइ! नहि तँ काल्हि हमर बाबू हमर खलड़ी खीचि लेताह।' कुलानन्दक भरि आँखि नोर ओहिना डबडबायल छलैक।

—हमरा जे सप्पत खुआ ले भाइ।' शोभाकान्त बाजल तँ मुदा कंठ, जीह, तारु सभ सुखा गेलैक। पियास लागि गेलैक। ठोर चटपटाय लगलैक।

कुलानन्दक एकटा संगी कहलकैक—चल कुला! आब बड़ राति भेलौ। काल्हि शनि छौ, सभकेँ चिड़ियारिक चाउर खुअबिहेँ। हमहूँ सभ खाइ लय तैयार छियौ। ने तँ परसू रवि कऽ मुर्गीक अंडा कटबा दिहैक। जे लेने हेतौ से लिधुर बोकरि कऽ अपने मरि जेतौ।'

—हँ, हँ, हमहूँ चिड़ियारिक चाउर खायब।' शोभाकान्त साहस कऽ बाजल।

कुलानन्द आ ओकर संगी सभ घूमि गेल। शोभाकान्त घूमि कऽ चुपेचाप आङन आयल। देखलक मायकेँ चुपचाप जुत्ताकेँ कोठीमे खसबैत। ओ अपन चौकीपर जा कऽ पड़ि रहल।

पड़ि तँ रहल मुदा निन्न नहि भेलैक। ओ ओछाओन पर कछमछ करैत रहल। मोनमे रंग-बिरंगक आशंका सभ उमड़ैत रहलैक····चिड़ियारिक चाउर खुआओल जयतै····· मुर्गीक अंडा कटबाओल जयतै····· नाम काढ़निहार अओतै ···बाटी चलतै ···पकड़ल जायब···· लोक काल्हिसँ कहत—चोर ······चोर ··· चोर। चोर भऽ कऽ कोना संगी-साथीमे रहब! कोना स्कूल जायब? स्कूलमे मास्टर साहेब सभ की कहताह! ······सोचैत सोचैत शोभाकान्तक माथ चनकऽ लगलैक। अशुभ ओ अकल्याणक भय, सामाजिक मर्यादाक भय, भावी दण्डक भय मनुष्यकेँ अपराधवृत्तिसँ रोकैत छैक। से भय शोभाकान्तक रोम-रोममे व्याप्त भऽ गेलैक। आइ धरि गाममे, स्कूलमे सभसँ सुशील, मेघावी विद्यार्थी काल्हि चोर बनि जायत। लोक घृणा करऽ लगतैक। ई कल्पना शोभाकेँ असह्य भऽ गेलैक, अशान्त बना देलकैक, उद्विग्न कऽ देलकैक।

बड़ी काल धरि ओ ओहिना खुरछाही कटैत रहल। फेर चारू कात अकानलक। ओकर माय बड़ी जोरसँ ठढ़र पाड़ैत छलैक। ओ थोड़ेक निश्चिन्त एवं आश्वस्त भऽ कऽ उठल। चोर जकाँ पयर बारि कऽ घरमे गेल। थोड़ेक काल धरि घरमे

किछु करबामे व्यस्त रहल। तकरा बाद काँखतर एकटा मोटरी लेने घरस बहार भेल। पयर बारनहि दलान पर चल गेल। दलानपर ठाढ़ भऽ आहटि लैत रहल। लोक सभ पहिल निन्नमे निभेर छल। ओ सतरि कऽ बाटपर आबि गेल आ कुलानन्दक घर दिस बढ़ऽ लागल।

थोड़ेक दूर आगाँ गेल तँ बाटपर दूटा कूकुर भूकऽ लगलैक। शोभाकान्त तीन बेर थुकथुका देलकैक। कूकुरक भूकब शान्त भऽ गेलैक। ओकरा मोनमे भेलैक जे कूकुरकेँ विश्वास भऽ गेलैक जे हम चोर नहि छी…… हम चोर नहि छी…… हम चोरि नहि कयलहुँ अछि।

कूकुरकेँ शान्त भेल देखि ओ निःशब्द आगाँ बढ़ैत गेल। जहिना-जहिना ओ कुलानन्दक दलान दिस बढ़ैत जाइत छल तहिना-तहिना ओकर माथ परक भार कम होइत जाइत छलैक। देहक चारूकात पसरल चोरक कारी घनगर छाया क्रमहि मद्धिम पड़ल जाइत छलैक आ विश्वास बढ़ल जाइत छलैक जे—— हम चोर नहि छी… हम चोर नहि छी… हम चोर नहि छी…। □

बोतल

डम्फा पर थाप पड़ि रहल छलैक आ ओकरा संग उन्मत्त भऽ होरी गयबाक स्वर आबि रहल छलैक। दोसर दिस कतहु ढोल-झालि पर फगुआक समूह-गानक घमाउर अनघोल कयने छलैक।

सम्मत जरयबाक लेल छौंड़ा सभ सड़क पर एमहरसँ ओमहर दौड़ कऽ रहल छल। ककरो ढाठ उजारैत छलैक तँ ककरो जाफरी। जकर कोनो वस्तु उठबैत छलैक सैह हो हो कऽ दौड़ैत छलैक। मुदा ई क्रम बेसी काल नहि रहलैक। वातावरण क्रमशः शान्त होबऽ लगलैक।

श्यामा घरमे फगुआक हेतु सामग्री सभक ओरियानमे लागलि छलि। सेबइ भुजबाक लेल मेही कऽ कऽ रखलक। सुज्जीकेँ चालि कऽ रखलक। मैदाकेँ एकटा बासनमे ठेकनाकऽ रखलक। कटुक मसाला निकालि कऽ सरौतासँ काटऽ लागलि। लगैत छलैक जेना कोनो प्रतीक्षामे हो।

वसन्त एखन धरि आयल नहि छलैक। श्यामाक मोन खुट-खुट करैत छलैक, जे जानि नहि आइ कतऽ, कतेक पीबि कऽ औतैक, की ओम्हरे कतहु ओंघरा जेतैक!

श्यामाक तँ मोन होइत छलैक जे छोड़ि-छाड़ि दी ई वस्तु सभ बनौनाइ। ककरा लय बनायब! जकरा लय एतेक आवेशसँ बनायब से अपने बेहोस भेल औताह आ बेसुध भऽ कऽ पड़ि रहताह।

नारियर-छोहाड़ा कतरल भऽ गेलैक तँ नहि फुरलैक जे की करी। ओ सोर कयलकैक—— नन्दा!'

—जी मलिकीनी !' नन्दा पायासँ ओठङल औंघाइत छल से चौंकिकऽ ठाढ़ भऽ गेल ।

—डोलमे पखारि कऽ पानि दे आ बौआके देखही तँ कतऽ छौ ? दूनू भाइ साँझे धीया-पूताक संग गेलौ से एखन धरि नहि अयलौ अछि ।'

नन्दा डोल पखारि कऽ कऽलसँ पानि भरि कऽ श्यामाकें देलकैक ।

—देखही सम्मत लगमे तमासा देखैत हेतौ । डेन पकड़ि कऽ लेने आ । बेकहल भऽ गेल अछि ई दूनू छौंड़ा । कहू तँ, कुखन गेल ?'

नन्दा विदा भऽ गेल चौबट्टी दिस । श्यामा पूआक हेतु मैदा घोरि कऽ फेनऽ लागलि । भेलैक जे मैदा एखन फेनि देलासँ काल्हि छानऽमे नीक रहतै । मुदा ओकर मोन ओहिमे लागि नहि रहल छलैक । जेना कोनो उचाट लेने होइक । अपनो ने बूझि पबैत छलि जे से किएक ?

अकस्मात् बाहरसँ केबाड़ ढकढकयलैक । जाबत श्यामा मैदा लागल हाथ साफ करैत ताबत बाहरमे वसन्त हल्ला मचबऽ लागल—नन्दा ! केबाड़ खोल, केबाड़ खोल । श्यामा ! श्यामा ! केबाड़ खोलू !'

श्यामा ओहिना आबि कऽ बाहरवला कोठलीक केबाड़ खोलि देलकैक । बिजलीक प्रकाशमे वसन्तक आँखि एकदम चढ़ल आ लाल देखि कऽ श्यामा सिरसिरा कऽ पाछाँ हटि गेल । वसन्तक पयर जेना पताइत छलैक । ओ भीतर आबि कऽ आलमीरा खोलैक चेष्टा करैत कहलकैक—अय ! अहाँ हमरा लय जागल नहि रहब । हमरा अबैमे देरी लागत ।'

श्यामाकें मोन भेलैक जे एक झपक्का लड़ि लिअय जे एना बदहोस भऽ कऽ आयल छी तैयो सन्तोख नहि भेल अछि ?'

मुदा ओ किच्छु नहि बाजलि । वसन्त आलमीरा खोलिकऽ किछु ताकऽ लागल । कय बेर तकलक किन्तु अपेक्षित वस्तु नहि भेटलैक । श्यामा ओकरा दिस निस्तब्ध भऽ कऽ तकैत रहलैक । वसन्त फेर एक बेर सौंसे आलमारी ढूढ़ि गेल तखन श्यामा दिस तीक्षण दृष्टिसँ तकलक—की भेलैक ?'

—कथी की भेलै ?' श्यामा उदासीन स्वरमे कहलकैक ।

—पूछै छी, की भेलै ? ओरिया कऽ हम रखने छलहुँ ।' वसन्तक स्वर तेज छलैक ।

—की छल से हम की जानऽ गेलहुँ ?'

—अहीं लऽ कऽ राखि देलहुँ अछि। जल्दी दऽ दियऽ ने तँ बेजाय बात भऽ जायत। लाउ जल्दी। सुरेशक डेरा पर सब हमर बाट तकैत हैत।'

—अनेरे ने अहाँ हमरा झझकारै छी! जखन हम किछु देखबे नें कयलहुँ तँ की कहू? कतऽ की रखै छी से हमरा कहिकऽ? कहियाकोन वस्तु अहाँक ढकढोरऽ जाइ छी? हम के छी अहाँक वस्तु छुइनिहारि?'

--तँ एतऽसँ भेलै की? कतेक परिश्रमसँ हम मङ्बौने छलहुँ। एहिठाम ओ भेटैत नहि छैक। ओतऽ, सभ एकरे प्रतीक्षामे छैक।' फेर वसन्त उग्र भऽ उठल। ओ चीत्कार करैत बाजल-- नीक लोक जकाँ दऽ दियऽ ने तँ आइ हम किछुसँ किछु बिता देब।'

--ओहुना जखन अहाँ तमासा करिते रहै छी, तखन तँ आइ फगुआक उन्माद अछि। आइ तँ करबे करब। की रखने छलहुँ, कतऽ रखने छलहुँ, से हमरा की बूझल अछि?' श्यामा सहज भावसँ उत्तर देलकैक।

वसन्त चिकरि कऽ बाजल-- बोतल छलै बोतल।'

श्यामाकेँ एते कालमे बूझऽमे भाङठ नहि रहि गेल छलैक। ओहो कनेक तुच्छ भऽ कऽ कहलकैक-- हम तँ ओही दिन सप्पत खयलहुँ जे आब कहियो अहाँकेँ पीबाक विषयमे किछु ने कहब। हमर करमे जरल अछि तँ की करब? हम किएक छुइब अहाँक कोनो वस्तु। जे करै छी से करू।' ई कहि कऽ श्यामा झटकारि कऽ जाय लागलि।

--जाइ छी कतऽ।' वसन्त झपटि कऽ श्यामाक साड़ी पकड़ि कऽ खीचैत कहलकैक-- जाबत ओ बोतल नहि दऽ देब ताबत कतऽ। हम दशा कऽ देब।'

--छोड़ू हमरा।' श्यामा साड़ी छोड़बऽ लागलि। वसन्त दाँत कीचैत श्यामाक केश पकड़ि कऽ घीचि कऽ खसा देलकैक आ दू-तीन लात लगा देलकैक --कहै छियनि तँ सूनै नहि छथि। हिनका बापक कमायल खर्च करै छियनि जेना। ई हमर मालिक छथि?' फेर तामसे आलमीराक वस्तु सभ निकालि कऽ छीटऽ लागल भरि घर।

श्यामा सिसकऽ लागलि। सिसकैत बाजलि-- यैह टा बाँकी छल सेहो सेहन्ता पुराइए लेलहुँ! मोन नहि भरल हो तँ दू चारि थापड़-लात आर लगाइए लियऽ। हम तँ देह ओरनहि छी।'

वसन्त दाँतसँ ठोरकेँ कूचैत पयर पटकैत घरसँ निकलि गेल। केबाड़ ओहिना फूजल रहली। श्यामा कनेक काल हिचकैत धरती पर पड़लि रहलि।

फेर उठलि आ केवाड़केँ फटाक दऽ लगा देलकैक। हाथमे मैदा ओहिना लागल छलैक। देहमे माटि-गर्दा लागल छलैक। साड़ी ओझरायल छलैक। केश छिड़िआयल छलैक। किछु सरिअयबाक मोन नहि भेलैक। ओ गह्वरित भऽ कऽ बरंडापरक अखरा चौकी पर आबि कऽ पट भऽ पड़ि रहलि। आँखिसँ दहो-बहो नोर बहैत रहलैक।

तावत नन्दा बाहरसँ अयलैक— मलिकीनी दूनू बौआ तँ ओहिठाम नहि छथिन।'

श्यामा नोर पोछैत उठलि— की कहलेँ ?'

—पड़ोसियोक आङनमे नहि छथिन। सम्मत लग छौंड़ा सभ कहलक जे दीनू-बीनू साँझेसँ एमहर नहि आएल अछि।'

श्यामा चिन्तित भऽ उठलि। अपन वेदना आ ग्लानि जेना बिसरा गेलैक। आतुर होइत कहलकैक — आन ठाम नहि देखलहिन ?'

—सभ ठाम ताकि एलियनि। कहाँ कतौ छथिन ?' नन्दा उत्तर देलकैक।

—देखही तँ, सूति तँ ने रहलौ ? अपना ओछाओन पर तँ नै छै।' श्यामाक मोन दहसलिसँ भरि गेलैक। की करी की नहि, से किछु नहि फुराइत छलैक— बाहरवला कोठलीमे देखही तँ।'

नन्दा बीचवला कोठली पार कऽ कऽ बाहरवला कोठलीमे गेल। ई कोठली खालिए रहैत छलैक। आगन्तुक सभक लेल। गेस्टकेँ ओही कोठलीमे रहबाक व्यवस्था होइत छलैक। तेँ दीनू-बीनूक ओहि कोठलीमे सूति रहबाक कोनो संभावना नहि छलैक। नन्दा कोठलीमे मुहथरिए परसँ देखलक, चौकी खाली देखि जोरसँ बाजल — अहू घरमे नै छथिन। चौकी खालिए छै मलिकीनी !'

कोठलीमे अन्दरक केवाड़ दिस चौकी छलैक आ ओकर दोसर कात खाली स्थानमे एकटा टेबुल, दु तीन टा कुर्सी राखल छलैक। एक कोनमे डंटामे मशहरी लपेटल राखल छलैक। खिड़की बन्द छलैक। नन्दाक मोनमे भेलैक जे ओहिकात जा कऽ खिड़की खोलि दिऐक। स्वीच ऑन कऽ कऽ नन्दा ओहि टेबुल लग गेल की एके बेर चिचिया उठल — मलिकीनी दौड़ू !'

—की भेलौ रे ?' श्यामा बरंडे परसँ बड़ी जोरसँ बाजलि।

—दौड़ू, दौड़ू। अन्हेर भऽ गेल।'

श्यामा बेछोह ओहि कोठली दिस दौड़लि। नन्दा लग पहुँचि जे दृश्य देखलक से देखिते देरी अचेत भऽ गेलि — बाप रे ! ई की भऽ गेलै रे !'

दीनू आ बीनू नीचांमे बेहोस भेल छिड़िआयल छलैक। मुँहसँ लेर खसैत छलैक। हाथ-पयर लटुआयल छलैक।

—दैवा रे दैवा! आब हम की करिऐ? नै छै, नै छै दूनू!' श्यामा भोकारी पाड़ि कऽ कानऽ लागलि। कनिते भरि पाँज कऽ दीनूकें उठा लेलकैक, नन्दा बीनूकें उठा लेलकैक। दूनूकें भीतरवला कोठलीमे आनि कऽ पलंग पर पाड़ि देलकैक।'

श्यामा दूनूक नाक पर हाथ देलकैक; छातीपर हाथ देलकैक। बूझि पड़लैक जे साँस चलैत छलैक-- नन्दा! मिश्राजीक डेरामे दौड़ि कऽ जो, डाक्टर साहेबकें बजौने अबहुन।'

नन्दा दौड़ि गेल।

श्यामा ग्लासमे पानि आनि कऽ दीनू-बीनूकें मुँहमे देबऽ लगलैक। मुदा दूनूक दाँतपर दाँत बैसल छलैक। श्यामा चिचियाइतो छलि तथापि बुद्धि स्थिर रखने छलि। दौड़िकऽ चम्मच अनलक आ बेरा बेरी दूनूक दाँती छोड़बऽ लागलि। दीनूक दाँत अलगाकऽ मुँहमे पानि देलकैक। तावत नन्दा घूमि कऽ अयलैक— डाक्टर साहेब गाम गेलथिन अछि।'

—आब? अच्छा जो। ओकिल साहेवक बेटा महेन्द्र हाउस-सार्जन छथिन। हुनके बजेने आ।'

नन्दा फेर दौड़ल।

श्यामा बीनूक दाँती छोड़बऽ लागलि। ताबत अरोस पड़ोसक दू-एकटा आर महिला श्यामाक कानब सूनि कऽ आबि गेलैक। नन्दा सेहो दौड़िकऽ आबि गेलैक—महिन्दर मालिक काल्हिए सासुर चल गेलथिन।'

--क्यौ ने भेटतै आइ। सब चल गेलै। हमर दूनू बेटा अपटी खेतमे चल जायत। नन्दा! दौड़िकऽ बीडिओ साहेबक डेरामे जो आ ओतऽसँ अस्पतालमे एम्बुलेन्स लेल फोन करा दही।'

महिला सभ सेहो दीनू-बीनूक सेवा करऽ लगलैक। मुदा की उपचार कयल जाइक से क्यौ नहि बूझि रहल छलैक।

एकटा महिला पुछलकैक – की भऽ गेलै दूनू कें? भाङ-ताङ तँ ने पीलक अछि?'

श्यामाकेँ ध्यान पर किछु अयलैक। दीनूक जखन दाँती छूटल छलैक आ ओ मुँह खोलने छल तँ एकटा विचित्र प्रकारक गन्ध ओकरा लागल छलैक।

ओ बाहरवला कोठलीमे गेलि। चारू कात निहुरि निहुरि कऽ देखऽ लागलि। चौकी तरमे निहुरल तँ निहुरले रहि गेलि। जेना ठकमूड़ी लागि गेलैक। देखलक, चौकी तरमे आधा लोटा पानि; एकटा ग्लास, चिन्नीवला डिब्बा, किछु चिन्नी छिड़िआयल, किछु पानि हेरायल। लगेमे एकटा बोतल सेहो राखल। श्यामा बोतल उठाकऽ देखलक – ढिलढिलाह मुन्ना लागल, आधासँ किछु कम भाग खाली।

हाथमे बोतल लेने ओ थोड़ेक काल बेसुध भेल ठाढ़ि रहलि। ओकरा अर्द्धचेतन मनमे वसन्तक लाल-लाल उन्मत्त आँखि झिलमिलाय लगलैक। वसन्तक लातसँ लागल चोटसँ अधिक ओकर व्यवहारक आघातसँ भेल वेदना अंग अंगमे जागि गेलैक। आ फेर दीनू-बीनूक बेहोसी ओकर नारीत्वकेँ, ओकर मातृत्वकेँ, ओकर वात्सल्यकेँ काँट जकाँ गोदऽ लगलैक।

श्यामाकेँ स्पष्ट भऽ गेलैक जे ओ वैह बोतल छलैक जाहि लेल वसन्त ओकरा ओतेक अपमानित कयने छलैक। दीनू-बीनू अपन बापकेँ कय दिन देखने छल बोतलमेसँ ग्लासमे किछु ढारि कऽ पिबैत। से कोनो फलक स्क्वैस बुझि कऽ दीनू-बीनू चोरा कऽ शर्बत बनाकऽ पीबि लेने छलैक। परिणाम की होइतैक से श्यामाकेँ सूझि नहि रहल छलैक। भय आ आशंकासँ ओकर मोन आन्दोलित भऽ गेलैक। छाती धड़-धड़ करऽ लगलैक। पयर जेना लोथ भऽ गेलैक। भेलैक जेना ओहो अचेत भऽ कऽ खसि पड़त। मुदा तखने अपनाकेँ सम्हारलक।

तखने नन्दा फेर बाहरसँ अयलैक।

श्यामा बाहर आयलि। नन्दा कहलकैक— मलिकीनी, अस्पतालमे कहलकै जे ओतऽ क्यौ ने छै जे मोटर अनतै।'

––तखन आब की करबै? आगि लगै छै तँ उनचासो बसात बहऽ लगैत छै।' श्यामा कनैत बाजलि –– अपटी खेतमे हमर बच्चा हाथसँ बेहाथ भऽ जायत। आब हमर बच्चा नहि बाँचत। रौ दीनू-बीनू, रौ दीनू-बीनू। हे भगवती! ई की आगि लगा रहल छी? रौ नन्दा! दौड़िकऽ जो, सुरेश बाबूक डेरापर साइत मालिक हेथुन। कहि दिहनु जे जँ दूनू बेटाक मुँह देखबाक होनि तँ तुरन्त आबऽ लेल। आ ओम्हरेसँ एकटा रिक्सा पकड़ने अबिहेँ।

जे पाइ माझी से गछि लिहैं। जँ जल्दी नहि भेटी तँ दौड़ले आ। दूनू गोटे कोरेमे लऽ कऽ दौड़ि जायब।'

नन्दा बिनु बजनहि सोझे दौड़ि गेल।

दूनू महिला दीनू-बीनू लग बैसले छलै। श्यामा कनितो-कनितो यथासाध्य उपचारमे लागि गेलि। पानि आनि कऽ दूनूकेँ माथ धोलकैक। गमछा भिजा-भिजाकऽ आँखि-कपार पोछैक आ गाल धऽ धऽ कऽ सोर करैक — दीनू आँखि खोलू ने। बीनू मुँह खोलू ने।'

मुदा दीनू-बीनूपर ओकर कोनो प्रभाव नहि देखि हृदरि उठैत छलि श्यामा। वाणविद्ध हरिणी जकाँ असहाय भऽ चारू कात ताकऽ लगैत छलि। मृत्यु-पथक यात्री होइत अपन सन्तानकेँ देखि कोन माय स्थिर रहि सकैत अछि? श्यामाकेँ क्षण-क्षण पहाड़ लगैत छलैक। वस्तुतः विपत्ति कालमे क्षणो युगमे बदलि जाइत छैक।

अकस्मात् बाहरमे फटफटियाक रुकबाक आबाज भेलैक। वसन्त धड़-फड़ाकऽ उतरल। परन्तु ओ निश्चय नहि कऽ सकल छल जे कोन मुद्रामे श्यामाक सोझाँमे जाय। घंटा भरि पहिने तँ ओ श्यामाकेँ मारि-गंजन कऽ कऽ गेल छलैक। श्यामाकेँ नोरायल आँखि आ हिचकैत देखिकऽ सहजे अनुमान कयलक जे किछु काल पूर्वक घटनाक प्रतिक्रिया थिकैक।

श्यामा बिना किछु बजने घूमि गेलि आ दोसर कोठलीसँ बोतल आनि कऽ धरा देलकैक— यैह ने थिक बोतल?'

—यैह तँ थिकैक। कहू, पहिने नहि देबा लेल झूठ बजलहुँ आ आब ई देबक लेल झूठ बजलहुँ। नन्देक हाथे पठा दितहुँ।'

—झूठे बजलहुँ। हमरा बातक विश्वासे किएक होइत? विश्वास तखन होयत जखन दीनू-बीनूक चचरी श्मशान जाइत देखबैक। तखन जिनगी भरि एहि बोतलक संग खेलाइत रहब।' श्यामा गह्वरित भऽ गेलि। आगाँ ओ बाजि नहि सकलि।

—श्यामा! की बजै छी?' वसन्त गरजल। ओ एखनो धरि बूझैत छल जे श्यामा झगड़ाक मुद्रामे ई सभ कहि रहलि अछि।

—गरजू नहि। दीनू-बीनू चोरा कऽ बोतल ढारि कऽ पीबि गेल आ आब…'

बाहरमे रिक्सा लऽ कऽ नन्दा आबि गेलैक। रिक्साक झरझराहटि सूनि श्यामा कहलकैक— मोहल्लामे ने डाक्टर साहेब छथि ने महिन्दर। अस्पतालमे क्यौ छै नँ जे एम्बुलेन्स अनतैक। हम आ नन्दा दीनू-बीनूकेँ लऽ कऽ अस्पताल जाइ छी।'

श्यामा तेजीसँ जाकऽ दीनू आ बीनूकेँ उठबऽ लागलि। वसन्तकेँ आयल देखि दूनू महिला चल गेल छलै। घर खाली छलैक।

वसन्तकेँ आब परिस्थितिक गम्भीरताक बोध होबऽ लगलैक। ओ श्यामाक पाछाँ-पाछाँ आयल आ दीनू-बीनूक हालत देखि स्तब्ध भऽ गेल। एकाएक अपराध बोधसँ वसन्तक सभ निसाँ हड़हड़ा कऽ उतरि गेलैक।

––थम्हि जाउ श्यामा! हम लऽ जेबै अस्पताल।'

––अहाँके एकरा सभसँ की? मरि गेल तँ मरि गेल। नहि बाँचि गेल तँ बापक उत्तराधिकारी बनत। मुदा हम तँ माय छिऐक। कोना छोड़ि देबैक?'

—नहि, नहि, श्यामा! आब नहि। ने दीनू-बीनूकेँ अपना पापेँ मरऽ देबै, ने समाजमे शराबी बापक बेटा होयबाक लांछन आबऽ देबैक।'

वसन्त तेजीसँ अपना घरमे गेल। खाली आ भरल कय गोट बोतल आनि कऽ आङनक देबालपर फटाक-फटाक मारि फोड़ऽ लागल। फेर श्यामाकेँ कहलकै—हम सुरेशक मोटर साइकिलसँ पन्द्रह मिनटमे कोनो डाक्टर ने तँ कोनो मोटरगाड़ी लेने अबैत छी।'

वसन्त तेजीसँ मोटर साइकिल स्टार्ट कऽ देलक।

श्यामाक कानमे दूर जाइत फटफटियाक ध्वनि घनघनाइत रहलैक। □

Scanned by CamScanner

मङ्ली मायक बकरी

⊕

आ भोर होइत होइत निछा गेलैक।

बकरी छलैक लदबद। मङ्ली माय आशा लगौने छलय जे पछिले बियान जकाँ एहू बेर दूटा बच्चा होयबे करतैक। ओ बड़ मनोयोगसँ पोआङ, गुल्लरिक पात, अंडीक पात आनि-आनि खुअबैत रहैत छलैक। बकरीक देह बेस भारी भऽ गेल छलैक। अड़ुआर लटकि गेल छलैक। बकरीकेँ चलि नहि होइत छलैक। तेँ आब मङ्लीमाय बकरीकेँ बाध दिस चरबाक लेल नहि जाय दैत छलैक।

मुदा बकरीक जाति, खुट्टा पर बान्हल नहि रहि सकैत अछि। जाबत दू-चारि धाप चरत नहि, मोने ने भरैत छैक। बकरी होइते अछि बड़ लुहकाहि। तेँ मङ्लीमाय घरक पछुआड़क बसबाड़िवला परतीमे खुट्टी गाड़ि अबैत छलैक। नमहर साबेक रस्सी देने छलैक। बकरी घूमि-घूमि कऽ चरैत छलैक। भरि दिनमे तीन-चारि बेर मङ्लीमाय जा कऽ देखि अबैत छलैक जे कहीं बिया ने गेल होइक। जयबेर देखऽ जाइत छलैक तय बेर खुट्टी उपाड़ि कऽ दोसर ठाम दऽ दैत छलैक।

बसबाड़ि छलैक छेहड़। बसबाड़िक परतीक बाद छलैक खेत सभ। खेत सब आबाद छलैक, कोनोमे गहूम, कोनोमे गोट, कोनोमे बदाम आ तीसी, कोनोमे केराओ। चारू कात हरियरी पसरल। कोनो माल-जालकेँ ओहि हरियरी दिस जा कऽ दू-चारि कऽर खा लेबऽ लेल आतुरता भऽ जा सकैत छलैक। मनुक्खो जखन एहन सन परिस्थितिमे अपनाकेँ रोकि नहि पबैत अछि, जकरा विवेकशील

प्राणी कहल जाइत अछि, तखन माल-जाल तँ साक्षात् पशुए थिक। पशुमे विवेकक खोज कयनिहार व्यक्ति ओकरासँ की कम मानल जायत ?

मङ्लीमाय ई बात बूझैत छलि आ तेँ खुटेसल बकरीकेँ अवश्ये जा कऽ देखि अबैत छलि। से संयोगसँ मङ्लीमायकेँ एहि बकरीक कारणेँ ककरो उपराग नहि सूनऽ पड़ल छलैक। एहिमे बकरीक सज्जनता कारण छल वा मङ्लीमायक सतर्कता, से कहब कठिन। परन्तु मङ्लीमायकेँ अपना विश्वास भऽ गेल छलैक जे हमर बकरी अपराहु नहि अछि। खुट्टी उपाड़ि कऽ, की रस्सी तोड़ि कऽ, की नमरि कऽ ककरो जजाति नहि खयतैक।

ओहि दिन मङ्लीमाय बकरीकेँ बान्हि तँ अयलैक। कय बेर देखियो अयलैक। सब ठीके-ठाक छलैक। मुदा बेरुक पहर कोनो काजसँ कोम्हरो गेल आ ओमहरसँ अयबामे विलम्ब भऽ गेलैक। साँझ कऽ आइलि तँ हहाइलि-फुहाइलि बसबाड़िक परतीए दिस दौड़लि।

परतीपर गेलि तँ जी धक् दऽ रहि गेलैक। खुट्टी गड़ले छलैक। खुट्टीमे आधा टूटल रस्सी लागल छलैक मुदा बकरीक कत्तहु थाह-पता नहि छलैक। मङ्लीमायकेँ ठकमूड़ी लागि गेलैक। भेलैक जेना कोंढ़ उनटि कऽ मुह बाटे खसि पड़तैक। ओ चारूकात नजरि खिरौलक। कत्तहु करिक्की बकरी देखऽमे नहि अयलैक। आश्चर्य भेलैक जे जाहि बकरीकेँ चलि नहि होइत छलैक से चल कतऽ गेल ? जे बकरी बाधसँ साँझुक पहर अपने खुट्टापर चल अबैत छलैक से आइ एतेक लगमे रहि कऽ अपना खुट्टापर नहि जा कऽ चल कतऽ गेल ?

मङ्लीमायक मोनमे अदंक पैसि गेलैक। भेलैक जेना ओकर बकरी क्यो हाँकि कऽ लऽ गेलैक। अ ब नहि भेटतैक। ओ आँगा बढ़ि कऽ परतीक नीचाँ-वला खेतमे देखऽ गेलैक। देखलक, तीन-चारिटा गहूमक बीट चरल, तीन-चारिटा डाँट मोड़ा कऽ खसल। टटका चरल बूझि पड़लैक। ओ आरिए धयने आगाँ बढ़ैत गेलि। आगाँ राहड़िक खेत छलैक। खूब घनगर। मङ्लीमायकेँ भेलैक जेना एहि राहड़िमे ने ओझरायल हो। ओहीमे पैसि गेलि। निहुरि-निहुरि कऽ एहि पाँरसँ ओहि पार चल गेलि। बकरी कतहु देखऽमे नहि अयलैक। ओ आरिए-आरि आगाँ बढ़ैत गेलि, चारू कात तकैत गेलि।

तावत झोलफल भऽ गेल छलैक। साँझक रंग, कारी रंग चारू कात पसरि गेल छलैक। खेतक जजातिक रंग आब हरियरसँ कारी भऽ गेल छलैक। ओहि कारी वातावरणमे अपन करिक्की बकरीकेँ तकैत मङ्लीमाय अपस्याँत

छलि। कतहु कारी वस्तु देखय तँ होइक जे हमरे बकरी थिक। ओ 'अर्र लीः अर्र·· लीः' करैत ओही दिस बढ़ि जाइत छलि। लगले आशा उमड़ि जाइत छलैक परन्तु लगमे जा कऽ कोनो कतड़ाक झाड़, खजूरक छोट गाछ वा कूड़क ढेरी देखि झमान भऽ जाइत छलि।

अर्र लीः अर्र लीः करैत नहरि कात पहुँचि गेलि। एकपेड़िया धयने किछु लोक चल अबैत छलैक। मङलीमाय बेरा-बेरी सबसँ पूछैक– बाबू! ओमहर कोनो कारी बकरी देखलिऐए? एकटा बकरी कतहु देखलिऐए?'

ओ एकपेड़िया धयने नहरिक काते-काते आगाँ बढ़ितो जाय, ऐनिहार-गेनिहारकेँ पुछैतो जाय आ अनवरत 'अर्र···लीः अर्र···लीः' करैत जाय। बाटमे बजारसँ घुमैत एकटा मौगी भेटलैक। ओकरोसँ मङलीमायक वैह कथा। ओ मौगी कहलकैक—हँ गय बेचारी! बजार जाइ कालमे देखने छलिऐक, एकटा मरदाबा कारी बकरीकेँ एही दिस रबाड़ने जाइत छलैक। बकरी गाभिन छलै से दौड़ि नहि होइ छलै।'

मङलीमाय हकरोस कऽ उठलि। ओ छाती पीटैत ओही दिस दौड़लि। दौड़ैत गेलि, दौड़ैत गेलि। बकरी नहिएँ भेटलैक। ओ थकमका कऽ ठाढ़ि भऽ गेलि, ओहि बटोही जकाँ जे कोनो जंगलमे संकीर्ण बाट धयने जाइत रहैत अछि आ आगाँ जा कऽ बाट खतम भऽ गेल रहैत छैक।

मङलीमाय ओहिठामसँ आपस भऽ गेलि। अबैत काल बूझि पड़ैत छलैक जेना पयरमे मन-मन भरिक जाँत बान्हल होइक। ओ बाटे-बाट देवता-पितरकेँ गोहरबैत जाइत छलि। जतेक देवताक नाम मोन छलैक, सभक सुमिरन कऽ गेलि। गोरैया, भुइजा, अन्हेरबाँट, बढ़म आर ने जानि कतेक देवी-देवताक कबुला-पाती कऽ गेलि।

घर लग पहुँचलि तँ बाटे पर एकटा छौंड़ा भेटि गेलैक। ओ छौंड़ा जोरसँ चिकरि कऽ कहलकैक—गे दीदी! बकरी आबि गेलौ अपने मोने।'

मङलीमाय दौड़लि खुट्टापर। देखलक, बकरीकेँ नितुआन भेल बैसल। ओ जोर-जोरसँ हकमि रहल छलैक। थोड़ेक-थोड़ेक काल पर कछमछा उठैत छलैक। मङलीमाय ओकर सौंसे देह हँसोथऽ लगलैक। ताबत बेटी मङली डिबिया लऽ अनने छलैक। मङलीमाय बकरीक देह सोहरबैत कहलकैक—कतऽ चल गेल छलेँहेँ? देख तँ, तोरा लय अन्हारमे बाधे-बोने कते छिछिएलौंहेँ।'

बकरी जेना ओकर सिनेहक भाषा बूझि गेल छलैक। ओ मूड़ी उठा कऽ मङलीमाय दिस तकलकैक। डिबियाक इजोतमे बकरीक दूनू आँखि चमकि उठलैक। ओहि आँखिमे जेना कोनो अव्यक्त वेदना उमड़ि गेल छलैक। पशुओकें हर्ष ओ विषाद होइत छैक, सुख ओ वेदना होइत छैक; ई बात ओकर पालक आँखि देखलेसँ अनुभव कऽ लैत छैक। मङलीमाय गुल्लरिक पात आनि कऽ देलकैक मुदा बकरी सूँघि कऽ छोड़ि देलकैक। मङलीमाय बड़ी राति धरि घूर कऽ कऽ सेद-माँड़ करैत रहलैक। मुदा आइ ओकर बकरी ओकरा देखि कऽ ने हुँकरलैक, ने ओती राति धरि एको बेर पाउजे कयलकैक।

—दैवा रे दैवा! आइ हमर बकरी नै बचतै। हमरा बकरीकें रेका कऽ मारि देलक।' मङलीमायक मोन आशंकासँ भरि गेलैक। बकरी मोन मारने अपन मूड़ी पाँजरमे मोड़ने पड़ल रहलैक। मङलीमाय बकरीकें सेदैत-सेदैत थाकनिसँ चूर होमऽ लागलि छलि। राति बहुत बीति गेल छलैक। डिबियाक तेल पेनेमे लागल छलैक, से सहे-सहे बहुत पहिनहि मिझा गेल छलैक। ओकर आँखि झपलाय लगलैक। एकदम बेसम्हार भेला पर ओही ठाम टाटसँ ओठङि गेलि। निन्न भऽ गेलैक।

अचानक बकरीक भेम्हिअयनाइ सूनि कऽ निन्न टूटि गेलैक। ओ चेहा कऽ उठलि। भरि पाँज कऽ बकरीकें समेटैत चिचिया उठलि—दौड़ गय मङली! डाका पड़लौ गय!'

मङली धड़फड़ायल ऊठि कऽ दौड़लि आइलि। हाजि-हाजि कऽ घूर पजारलक। मङलीमाय बकरीकें कोरमे रखने छलि मुदा बकरीक टाङ सभ छिड़िआयल छलैक। धौना लटकि गेल छलैक। मङलीमाय हिचकऽ लागलि।

पछिलो साल एहिना भोरुकी रातिमे बकरीसँ घाड़ा-जोड़ी कऽ कानलि रहय मङलीमाय, ठीक ओहिना, जेना कोनो माय अपन बेटीक संग कनैत अछि।

ओहि बेर बकरीकें दू टा पठरू भेल छलैक, एकटा छागर, एकटा पाठी। छागर उज्जर वर्णक आ पाठी कारी वर्णक। खूब नमहर-नमहर टाङ, बड़का-बड़का लटकैत कान। दूनू पठरू लगैक जेना सद्यः फुलायल श्वेत ओ नील कमल होइक। मङलीमायक हुलास भकरार भेल कचनार जकाँ लगैत रहैक। मङली-माय दूनूक गरदनिमे कारी लत्ता बान्हि देने रहैक। तीनिए दिनमे पठरू भरि आङन कूद-फान करऽ लागल छलैक। मङलीमाय छिट्टा तर झाँपि कऽ ओकरा रखने रहैत छलि। छिट्टा पर ईंटा धऽ दैत छलैक तैयो ओ दूनू पठरू छिट्टाकें उनटा दैत छलैक।

मङलीमाय तुक पर दूनूकेँ दूध पिया कऽ छिट्टा तरमे झाँपि दैत छलैक। रातिमे कतोक बेर उठि-उठि कऽ दूध पिया देल करैत छलैक।

तेसरे दिन साँझ कऽ महिन्दर पहुँचलैक। ओकरा बेटीकेँ दू दिन पहिने बेटा भेल छलैक मुदा परिसौतीकेँ दोसरे दिन टिटनस भऽ गेलैक। कन्नारोहटि उठि गेलैक। लोक उठा-पुठा कऽ अस्पताल लऽ गेलैक। आब ओहि बच्चाक जीवन-रक्षाक समस्या भऽ गेलैक। बच्चा दूध बिना जिउतैक कोना! बकरीक दूध जँ भेटितैक! क्यो कहलकैक जे मङलीमायक बकरी बिआयल छैक। महिन्दर गिलास लेने शोकार्त्त भेल मङलीमायक आङनमे आबि कऽ ठाढ़ भऽ गेलैक। मङलीमाय सेहो महिन्दरक बेटीक हल्ला सुनने छलि। ओ बिना किछु कहने-सुनने चुपचाप एक गिलास दूध दूहि कऽ दऽ देलकैक। भोरे फेर ओ एहिना दूध दूहि कऽ लऽ गेलैक। आ तकरा बाद फेर दुपहरमे पहुँचलैक। मङलीमाय तखन कहलकैक—बाबू! एनामे तँ दूनू पठरू मरिए जेतै।'

महिन्दर ओहिना ठाढ़े रहल। टोल-परोसक लोक सभ मङलीएमायकेँ लुलुआबऽ लगलैक—गय! मनुक्खक बच्चाक आगाँमे तोँ बकरीक बच्चाक मोह करऽ लगलेँ अछि? मनुक्खक जनमौटी बच्चा बाँचि जेतै तँ एकटा नाम रहि जेतौ। बकरीक बच्चा कतौ मारलैए? आठे दिनमे खड़ढ़ धऽ लेतौ, तखन ओकरा मायक दूधक कोन बेगरता रहतै?'

तकरा बाद आठ-दस दिन धरि एहिना दूध दूहि कऽ लऽ जाइत रहलैक। बकरी जखन परतीमे चरैत रहैक तँ ओम्हरसँ महिन्दरझाक धियापुता सभ घंटे-घंटे जा कऽ दूहि लैक।

फल ई भेलैक जे बकरीक बच्चाकेँ मोन भरि दूध नहि भेटैक। दूनू पठरू भूखसँ मेमिआइत रहैक—भरि दिन भरि राति। दूनूक पाँजर सटि गेलैक। आठ-दस दिनक बाद महिन्दरक बेटी अस्पतालसँ अयलैक। ओकर नाति तँ बाँचि गेलैक मुदा बकरीक पठरू दुधकट्टू भऽ गेलैक। नितुआन भऽ कऽ मरि गेलैक। जाहि दिन ओ पठरू मुइल छलैक ताहि दिन मङलीमाय बकरीक घेंटसँ घेंट जोड़ि कय खूब कानलि रहय। बकरीयो भेम्हिया-भेम्हिया कऽ ओकर संग देने रहैक।

मुदा आइ बकरी ओकर संग नहि दैत रहैक। देह निष्प्राण भेल ओकरा कोरमे पड़ल रहैक। बकरीकेँ हुकहुक्कीयो ने रहैक।

भिनसर भऽ गेलैक। बकरीक मुइला पर जनमल दूनू पठरू ओहिना पड़ल छलैक, ठीक ओही रंगक, ओही आकारक, जेहन पहिल बेर भेल रहैक। पहिल बेर पठरू जन्मक कनेके काल बाद मेमियाय लागल रहैक, उठि कऽ ठाढ़ भऽ गेल रहैक। मुदा एहि बेर मुइले जनमलैक। मङलीमाय दूनू बच्चाकेँ उठा कऽ देखलक। उजरा पठरूक देह पर मारि नाम-नाम दोदरा सभ देखऽमे अयलैक, जेना सटकासँ मारला पर भऽ जाइत छैक। मङलीमाय दूनू पठरूकेँ दूनू हाथमे रखने पथरायल आँखिएँ तकैत रहलि।

ओ ओहिना मूरुत जकाँ बैसलि रहि जैतय मुदा ओकर ध्यान टूटि गेलैक। बाहरमे क्यौ जोर-जोरसँ चिकरि रहल छलैक। क्यौ गरिअबैत जा रहल छलैक—ई बकरी पोसने अछि तँ जजाति चरा लेत? काल्हि हमर एक कट्ठा गहूम चरि कऽ नाश कऽ देलक अछि। जाबत पचीस-पचास जरीमाना नहि हेतै ताबत एकर सभक दालक नहि छुटतै। से आइ हम सब दशा कऽ देबै।'

मङलीमायक कानमे गारि आ गरजब कड़कल तेल जकाँ पड़ऽ लागल छलैक। फेर सुनलक—गय तोँ बहराइ किए ने छेँ गय ख......'

मङलीमायकेँ बुझबामे भाङठ नहि भेलैक जे बाहरमे के बेतुकारे गरिया रहल छलैक।

मङलीमाय बहरायलि। ओकरा दूनू हाथमे दूनू पठरू लुजबुज भेल लटकल छलैक। दूनूक मूड़ी झूलैत छलैक। ओ दूनू हाथक मुइल पठरू महिन्दरक आगाँमे पसारैत कहलकैक—बाबू! जे जरीमाना कहब से हम भरि देब। आब तँ बकरीयो ने अछि जे दूध दऽ कऽ सधा देब। मुदा जे डंड करब से कोनहुना तँ सधाबहि पड़त।'

महिन्दर अकबका गेल। मङलीमायक हाथमे पठरूक मुइल देह छलैक आ ओकर मूड़ी लटकल झूलैत छलैक। झूलैत रहलैक।

□

लेखकक अन्य कृति

□ **कथा**

एक खीरा : तीन फांक

मनुक सन्तान

इजोती रानी

□ **अनुसन्धान-आलोचना**

मैथिली शैव साहित्य

मैथिली शैव साहित्यक भूमिका

उमापति

□ **सम्पादित**

हर गौरी विवाह नाटक

राम विजय नाट

नन्दीपति : गीतिमाला

नेपालक शिलोत्कीर्ण मैथिली गीत

संकल्प (अंक—१, २, ३,)

□ **संयुक्त सम्पादन**

मैथिली प्राचीन गीतावली

कविवर जीवनझा रचनावली

मूल्य—८.५० (साढ़े आठ टाका मात्र)